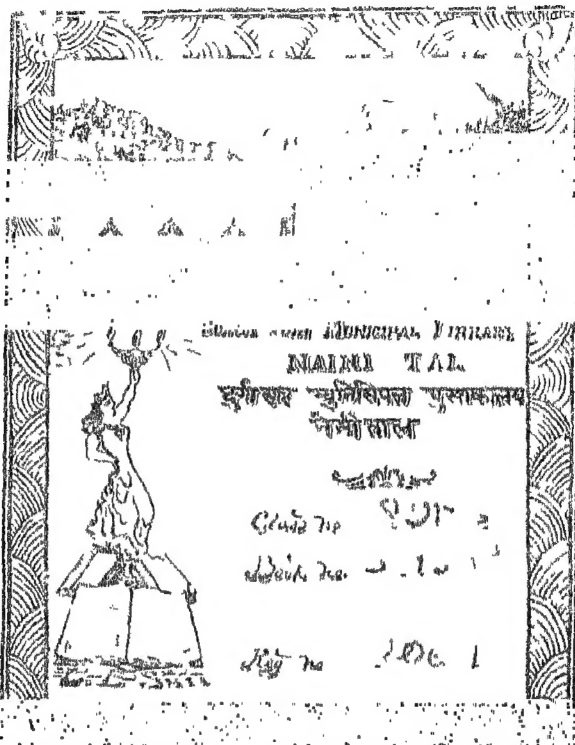




प्रायश्चित्त

अर्थात्

अबीलार्ड और हेलॉयज़ के प्रेम-पत्र

प्रकाशक
साहित्य-भवन लिमिटेड
इलाहाबाद।

मूल्य २)

मुद्रक
गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव,
हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

विषय-सूची ।

भूमिका

अबीलार्ड और हेलोइज़ की कथा केवल प्रेम और परित्याग की दृष्टि से ही महत्व की नहीं, वरन् उस का सम्बन्ध बारहवीं शताब्दी के विचार विप्लव से भी बहुत कुछ है। मानव-विचारों के इतिहास में भी इन प्रेमियों का उतना ही ऊँचा स्थान है जितना मानव दुर्बलताओं के विकास में। आरम्भ में ईसाई धर्म हठयोग का शिकार था, क्रमशः कठोर शारीरिक यन्त्रणाओं के पंजे से छूट कर वह त्याग, तप और क्षमा का आगार बना; वेदान्त ने रहस्यवाद का स्थान लिया; तर्क ने अंध विश्वास का आसन पाया। अबीलार्ड और हेलोइज़ ने उस धार्मिक युगान्तर में बहुत कुछ भाग लिया। अबीलार्ड न केवल माध्यमिक युग का ही धुरन्धर दार्शनिक समझा जाता है। वरन् प्रत्येक युग का महान विचारक भी माना जाता है। हेलोइज़ मध्यकालीन विदुषियों में अग्रगण्य है—यही नहीं; अपने निर्भीक विचारों और स्थूल तर्कों में भी वह सब से बढ़ी चढ़ी है। सब से विचित्र बात तो यह है कि माध्यमिक युग में होते हुए भी इन दोनों प्रेमियों के विचार बहुत कुछ आधुनिक से हैं।

अबीलार्ड का जन्म सन् १०७९ में ब्रिटेनी में हुआ था; उस ने विद्याभ्यास की लालच से अपनी सम्पत्ति तक छोड़ दी और उस की खोज में इधर उधर भटका फिरा। तर्क शास्त्र में इस का विशेष प्रेम था। वह लिखता है 'जहाँ कहीं मुझे इस विद्या का आदर सुनाई पड़ता था मैं दौड़ता जाता था।' बड़े-बड़े उपद्रवों का सामना कर उस ने अन्त में विजय पाई और वह पेरिस में जाकर रहने लगा। वहां उस की बड़ी ख्याति हुई। पेरिस में नातरदाम (Notre Dame) के पास अभी तक लोग एक मकान बतलाते हैं जिसे वे फुलबर्ट का वास-स्थान कहते हैं। इसकी दीवालें बिल्कुल नई हैं। पर संभवतः भीतरी भाग पुराना है। यहीं पर अबीलार्ड का हेलोइज़ से परिचय हुआ था; हेलोइज़ फुलबर्ट की भतीजी थी। इस समय उस की अवस्था १७ या १८ वर्ष की थी। इसी छोटी अवस्था में वह अपने गुणों के लिए विख्यात हो चुकी थी। अबीलार्ड ने उस के गुणों की प्रशंसा करते हुए स्वयं लिखा है—'देखने में वह बहुत कम सुन्दर स्त्रियों से कम सुन्दर न थी, पर विद्वत्ता में वह बड़ों बड़ों से भी बढ़कर थी।' क्लूनी (Cluny) के मठाधीश महात्मा पिटर ने हेलोइज़ को लिखा था—'विद्वत्ता में तुम ने केवल स्त्रियों ही को नहीं नीचा दिखाया है वरन् अनेकों पुरुष को भी तुम्हारा लोहा मानना पड़ा है।' अबीलार्ड से भेंट होने के पूर्व ही हेलोइज़ ग्रीक, लैटिन और हीब्रू आदि भाषाएँ जानती थी; अबीलार्ड से उस ने तर्कशास्त्र, धर्म और [illegible]। हेलोइज़ के समय में योरप में स्त्री-शिक्षा

का अधिक प्रचार न था। इस के थोड़े ही समय पूर्व पेरिस में स्त्रियों के लिए एक पाठशाला स्थापित हुई थी; इस का संरक्षण आलसेस (Alsace) के मेनगोल्ड की धर्मपत्नी और कन्या करती थीं—ये दर्शन और धर्मशास्त्रों की अच्छी जानने वाली थीं। और भी अनेक स्त्रियों का उल्लेख मिलता है जो काफ़ी पढ़ी लिखी थीं; उन में अनेकों ने तो कविता दर्शन और व्याकरण की रचना भी की है। गिरजे के पदाधिकारी भी केवल स्त्री शिक्षा के समर्थक न थे वरन् शिक्षित स्त्रियों का सम्मान जनता में और अधिक था। प्रेमी-जन शिक्षित स्त्रियों पर अधिक लट्टू होते थे। अबीलार्ड और हेलोइज़ के गाढ़े प्रेम का एक यह भी कारण था। अबीलार्ड लिखता है—'लेखनी अधरों से अधिक वाचाल है।'

अबीलार्ड और हेलोइज़ के प्रेमपत्रों से हम केवल उन के प्रेम की कथा से ही अवगत नहीं होते वरन् [illegible] के चरित्र-रहस्य का परिचय पाते हैं। इन पत्रों के अधिक महत्व के होने का एक और भी कारण है कि ये तब लिखे गये जब अबीलार्ड ने मठ में १२ वर्ष व्यतीत कर लिया था और उसे भली भांति ज्ञात था कि इन पत्रों से मुझे किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं है। इस के पश्चात् दोनों अनेक बार मिले पर उसी भांति जैसे दो मित्र मिलते हैं—पति पत्नी नहीं। यदि [illegible] ने अपने भावों का प्रदर्शन न किया होता [illegible] भावों को जानने में सर्वथा असमर्थ होता—

तनिक सोचिये तो हम कितने अमूल्य आनन्दप्रद भावों के ज्ञान से वंचित हो जाते !

इन दोनों प्रेमियों का पत्रव्यवहार विचित्र प्रकार से आरम्भ होता है। ब्रिटेनी के सेन्ट गिल्डास के मठाधीश की पदवी पाने के पश्चात् अबीलार्ड ने अपने मित्र को 'अपनी विपत्तियों की राम कहानी' नाम से पत्र लिखा। लोगों का अनुमान है कि ये पत्र प्रकाशित करने के उद्देश से लिखे गये थे और अबीलार्ड का विचार था कि इस प्रकार वह अपने जीवन के कुछ वृत्तान्त जनता के सन्मुख रखे। संयोगवश वह पत्र हेलोइज़ के हाथों पड़ गया और उस ने विवश होकर उत्तर लिखे। अबीलार्ड ने अपनी 'राम कहानी' में अपने जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया है—कैसे उस ने प्रेम करना आरम्भ किया; क्या-क्या कष्ट उसे उठाने पड़े; आगे चलकर उस ने अपने पत्रों में उद्गार प्रकट किये हैं; और यह सब कब जब उस ने अपने प्रेम के वेग पर विजय प्राप्त कर ली थी, जब वह जानता था कि सांसारिक बातों से वह बिलकुल दूर है और विषय वासना अब उसे अपना शिकार बना नहीं सकती है।

उस का पहला पत्र सचमुच मानव दर्पण है—उस से हमें लेखक की दुर्बलता तथा चरित्रबल का पूरा ज्ञान होता है। इस अवसर पर हम उसे प्रेमी के रूप में नहीं पाते, वरन् एक साधारण मनुष्य

की भाँति, जो संतप्त, पीड़ित और दुखी है; और जिस के पीछे लोग पड़े हैं; जिसे सब लोग सता रहे हैं। अबीलार्ड लिखता है—पेरिस में एक सुन्दरी रहती थी जिस का नाम हेलोज़ था। यह पुरोहित फुलबर्ट की भतीजी थी; वह बड़े लाड़ प्यार से उस की शिक्षा आदि की व्यवस्था करता था। स्त्रियों में शिक्षा की कमी के कारण इस लड़की की बड़ी ख्याति हुई। अबीलार्ड का कहना है कि पहले ही से उस ने समझ लिया था कि हेलोज़ के प्रेम पर अधिकार पाना उस के लिए बिल्कुल कठिन न था। उसे अपने मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, और सुन्दर व्यक्तित्व का भी पूर्ण ज्ञान था, उसे विश्वास था कि उस की विस्तृत ख्याति एक नारी को चकित करने के लिए यथेष्ट थी। उस उद्देश से उस ने फुलबर्ट के मकान में रहना स्वीकार किया। फुलबर्ट केवल उसके धन पर ही नहीं लट्टू था, वरन् वह समझता था उस के साथ रह के हेलोज़ कुछ सीख भी लेगी। हेलोज़ को पढ़ाने के लिए फुलबर्ट ने अबीलार्ड को पूर्ण अधिकार दे दिया। उस के मन में किसी प्रकार का सन्देह न था। उस की दृष्टि में उस की भतीजी अभी लड़की थी और अबीलार्ड को भद्र आदमी समझता था। इस प्रकार अध्ययन के बहाने, अबीलार्ड लिखता है, हम लोग प्रेम का आनन्द लूटने लगे। पुस्तक खुली पड़ी रहती थी। दर्शन चर्चा के स्थान पर वहाँ प्रेमालाप अधिक था, व्याख्यान की जगह वहाँ चुम्बनों की बौछार अधिक थी; हमारी आँखें पुस्तक पर न जाकर एक दूसरे से अधिक लड़ती थीं।

अबीलार्ड इस समय प्रेम का दीवाना हो गया था। उस की सारी पढ़ाई लिखाई और उच्च अभिलाषाएँ हवा हो गईं। उस के व्याख्यानों में नीरसता आ गई। पढ़ाते समय वह केवल याद रही बातों को दोहरा देता था। प्रेम ने विचित्र परिवर्तन दिखाया। दार्शनिक—कवि और कलाकार बन बैठा। जहाँ उस के दार्शनिक सिद्धान्तों की पहुँच न होती थी वहाँ उस की शृङ्गारिक कविताएँ पहुँचने लगीं। अबीलार्ड और हेलोज़ का नाम हर ज़बान पर रहने लगा। 'हर गली हर घर घर में, हेलोज़ लिखती है, 'हमारी चर्चा रहती थी।' अबीलार्ड की रसीली गीतों का खूब प्रचार हुआ। कुछ भी हो अबीलार्ड ही है जिस ने पहले पहल बोल-चाल की फ्रांसीसी भाषा में पद्य रचना आरम्भ की।

महीनों बीत गये; अबीलार्ड के शिष्य-गण धीरे-धीरे अपने शिक्षक में विलक्षण परिवर्तन का अनुभव करने लगे; सारा संसार इस रहस्य को जान गया। फुल्बर्ट को इस के बाद पता चला। अन्त में अबीलार्ड को उस का घर छोड़ कर अन्यत्र जाना पड़ा। इस से प्रेमियों के प्रेम का वेग कम न होकर और भी बढ़ा और कुछ ही दिन बाद हेलोज़ ने बड़ी प्रसन्नता से अबीलार्ड को लिखा कि वह शीघ्र माता की पदवी पाने वाली है। उस पर फुल्बर्ट की अनुपस्थिति में रात को अबीलार्ड ने हेलोज़ को लेकर भिक्षुणी के वेष में उसे ब्रिटेनी में अपनी बहन के पास

पहुँचाया; यहाँ उसे पुत्र उत्पन्न हुआ जिस का नाम उसने अस्ट्रोलेब (Astrolabe) रखा।

हेलोज़ को भगा ले जाने पर फुल्बर्ट के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसे बड़ा दुख भी हुआ। अपने पाप के प्रायश्चित्त के उद्देश से अबीलार्ड ने उसे हेलोज़ से विवाह करने का वचन दिया, पर शर्त यह थी कि यह विवाह-सम्बन्ध गुप्त रहेगा। अबीलार्ड—कदाचित 'नातरडाम' के गिरजे का पुरोहित भी था और उस का विवाह उस की उन्नति में बाधक हो सकता था। हेलोज़ की भी यही राय थी—वह विवाह के विरुद्ध थी। उस ने भरसक अबीलार्ड को इस से दूर रहने की अनुमति दी अबीलार्ड ने एक न सुनी और अन्त में वह पेरिस लौटा और एक रात को फुल्बर्ट और कुछ मित्रों के सामने एक गिरजे में उन का पाणि-ग्रहण हो गया। फुल्बर्ट ने अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध विवाह की बात खोल दी। हेलोज़ अबीलार्ड के लिए सब कुछ करने को तय्यार थी। उस ने उस की सम्मानरक्षा के लिए इस बात को शपथ लेकर कहा कि विवाह की बात बिल्कुल झूठी है। इस पर फुल्बर्ट अपनी भतीजी पर बहुत बिगड़ा और उस के साथ बुरा बर्ताव करने लगा। उस के अत्याचारों से हेलोज़ की रक्षा करने की इच्छा से अबीलार्ड ने हेलोज़ को आर्जेन्टील के संघाराम में भेज दिया। इस पर बिगड़ कर फुल्बर्ट

ने अबीलार्ड से बदला लेने की ठानी और उस ने किसी हत्यारे के द्वारा अपना मनोरथ पूरा किया ।

शीघ्र ही अबीलार्ड के अपमान का समाचार चारों ओर पेरिस भर में फैल गया, और उस के मित्र और शिष्य सभी उस से सहानुभूति दिखलाने आने लगे । अबीलार्ड को अपने शारीरिक अपमान का इतना कष्ट न था जितना लोगों की सहानुभूति से उसे लज्जा आती थी । जहाँ वह जाता लोग उस पर उंगली उठाते; उस का भविष्य अंधकारमय हो गया ; उस के शत्रु उस के पतन पर हँसते थे । ऐसे अवसर पर अबीलार्ड को मठ के सिवा अन्यत्र आश्रय न दिखाई पड़ा और उस ने सेन्ट गिल्डास के मठ का प्रधान का पद स्वीकार करना निश्चय किया, परन्तु मठ में अपने जाने के पूर्व उस ने हेलोज़ को आर्जेन्टील के विहार में भिक्षुणी बनकर रहने पर विवश किया । हेलोज़ ने उस के आज्ञानुसार मठ में जाना स्वीकार किया । हेलोज़ लिखती है,—'तुम्हारी आज्ञा से धार्मिक श्रद्धा से नहीं—मठ के कठोर जीवन को जानते हुए, मैं उस युवावस्था में भिक्षुणी बनने को तय्यार हुई थी । तुम्हारी आज्ञा से मैं आग में कूदने को तय्यार हो जाती । मेरी आत्मा मेरी न थी वरन् तुम्हारी ।'

अबीलार्ड ही के लिखने से हमें हेलोज़ के चरित्र का पता चलता है । वह दृश्य अपूर्व था जब हेलोज़ ने दीक्षा ली थी । जग भर के

लिए उस के चित्त से अबीलार्ड का ध्यान न उतरता था। अबीलार्ड के लिए वह सब कुछ करने को तय्यार थी। उस के मित्र उसे मना कर रहे थे, लोग उसे उस की युवावस्था का स्मरण दिलाते थे; मठ की कठोर तपस्याओं का स्मरण दिलाते थे, पर उस ने कारनीलिया के उन शब्दों में उत्तर दिया जो उस ने पाम्पी की मृत्यु पर कहा था और उस ने निर्भीकता से आँखों में आँसू भर कर भिक्षुणी का भेष स्वीकार कर लिया।

अबीलार्ड के बारह वर्षों के विविक्ति वास (११२०-११३२) की घटनाओं का हम सविस्तार वर्णन करना नहीं चाहते पर दो एक का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है। सन् ११२१ में सौसोन (Soissons) की परिषद् ने उसे अपनी पुस्तक को जला डालने पर विवश किया, ११२२ में उस ने शाम्पेन (Champagne) में योगी का जीवन व्यतीत करने की आज्ञा ली। वह शाम्पेन पहुँचा और वहाँ आर्डूज़ों (Arduzon) नदी के तट पर उस ने एक कुटी बनाई। कहते हैं कि यह घास फूस की बनाई गई थी। इस के पश्चात् शिक्षा के इतिहास में एक अनुपम दृश्य उपस्थित होता है। निर्धनता ने अबीलार्ड को एक पाठशाला खोलने पर विवश किया। ज्यों ही लोगों को मालूम हुआ कि वह पुनः शिक्षा का कार्य आरम्भ कर रहा है; दूर दूर से विद्यार्थी उस की कुटी पर उमड़ पड़े। अबीलार्ड के शब्दों में उस शिक्षा के [illegible]

नगर और महलों को मरुभूमि के लिए छोड़ा; अपने हाथों बनाकर वे पर्ण कुटी में रहने लगे; स्वादिष्ट भोजनों को त्याग कर रूखा सूखा भोजन स्वीकार किया; मुलायम सेज के स्थान पर पुआल का विस्तार अंगीकार किया। उन्हों ने पाठशाला की नई इमारत लकड़ी और पत्थरों की बनवाई जिसे अबीलार्ड ने बाद को पेराक्लीट को समर्पण किया।

वह पुनः प्रसिद्ध हो गया और उस के शत्रु फिर उस के पीछे पड़े। उन के डर से अबीलार्ड ने घबरा कर सेन्ट गिल्डास की महन्थी स्वीकार कर ली, जहाँ १२ वर्ष रह कर उस ने उन जंगली उजड्ड भिक्षुओं को आदमी बनाने की निरन्तर व्यर्थ चेष्टा की, और जो बदले में उस की जान के ग्राहक हो गये।

अब तक बराबर हेलोज़ आरजेन्टील में रही पर सेन्ट डेनिस के मठाधीश ने उस पर अपना अधिकार जताकर पोप से उन भिक्षुणियों को निकाल बाहर करने की आज्ञा मांग ली। जब अबीलार्ड को यह समाचार मिला तो उसने हेलोज़ को अन्य भिक्षुणियों समेत पेराक्लीट में रहने को बुलाया, और उसे उस के हवाले किया। हेलोज़ ११२१ में वहां की मठाधिकारिणी बनाई गई। पहले भिक्षुणियों को वहाँ आर्थिक कष्ट था पर बाद को लोगों ने उन्हें काफ़ी सहायता पहुँचाई। अबीलार्ड लिखता है—पादड़ी लोग हेलोज़ को कन्यावत् मानते थे,

मठाधीश उसे बहन समझते थे, और जनता उसे माता के समान मानती थी। सेन्ट गिल्डास के उजड्ड निवासियों द्वारा दी जाने वाली नित्य की पीड़ा का उल्लेख कर अबीलार्ड अपना पहला पत्र समाप्त करता है। यह है उस पत्र का सारांश जो हेलोज़ के हाथों में पड़ा था और जिस के कारण ऐसे प्रसिद्ध दम्पति के पत्र-व्यवहार का सूत्रपात हुआ था।

अबीलार्ड को भेजे हुए हेलोज़ के पहले पत्र पर इस प्रकार शिरनामा था—अपने स्वामी को, अपने पति को, अपने पिता को, अपने भाई को, उस की दासी की ओर से, उस की पुत्री के पास से, उस की पत्नी उस की बहन द्वारा लिखित अबीलार्ड के पास हेलोज़ का भेजा हुआ।

हेलोज़ को बारह वर्ष मठ में रहते हो गये। प्रवेश करते समय उस की अवस्था १८ वर्ष की थी। इन बारह वर्षों में उस ने अविरत, अविश्रांत मठ के नियमों का पालन किया, उस के बड़े उस पर विश्वास करते थे, उस के साथी उस पर प्रेम और श्रद्धा। अबीलार्ड की भांति वह तर्क, विज्ञान और लोकज्ञान के उपार्जन में दत्तचित्त भी रही, और बारह वर्षों तक उस ने मठ के साधारण से साधारण धर्म का अचूक पालन किया। अन्य युगों में भी हेलोज़ सी स्त्रियां मठ में रह चुकी हैं, जो समझती थीं कि मठ उन के आत्मिकत्व का स्थान नहीं है, और न वह मुक्ति का मार्ग ही है—वरन् उन के लिए वह कारागार के सिवा कुछ

नहीं है। उस के कठोर नियमों को वे अपने वंचित सुखों की याद कर और भी कठोर समझती थीं, परन्तु हैलोज़ के विषय में सिवा उस के पत्रों के और कहीं भी कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिलता जिस से यह प्रकट हो कि मठ के कठोर नियमों के कारण उस की आत्मा को कष्ट पहुँचा हो ; अथवा उस के विचारों में परिवर्तन दिखाई पड़ा हो, जिस से उस की गम्भीरता विचलित लक्षित होती हो। इन पत्रों में हम ऐसे अविचल, अचल और अटल प्रेम का ही दर्शन पाते हैं जो सदा मानवहृदय को अपनी गम्भीरता और सरलता का अनुभव कराता रहेगा। हैलोज़ सेन्ट गिल्डास की आफतों में पड़े हुए अबीलार्ड के लिए चिन्तित होती है, अबीलार्ड के बनाये हुए पेराक्लीट के लिए वह श्रद्धा और भक्ति प्रदर्शन करती है ; वह उस से उसे जन्मदाता के नाते एक आध बार निरीक्षण करने की आग्रह करती है ; वह उस से कभी कभी पत्र लिखने की भिक्षा माँगती है—उस के सारे शब्दों से यह प्रकट होता है कि ३० वर्ष की अवस्था में भी उस के हृदय में प्रेम की वही ज्वाला उसी वेग से जल रही है जैसे १२ वर्ष पूर्व वहां जलती थी। वह स्वयं स्वीकार करती है, कि प्रेम ही के कारण उस ने यह त्याग किया है, उसी के लिए उस ने यह कठोर व्रत अपने ऊपर लिया है। उस ने अबीलार्ड से, उस के धन, उस की प्रतिभा, तथा अपने सुख के लिए प्रेम नहीं किया था वरन् उस का प्रेम स्वयं अबीलार्ड से था। ईश्वर से वह कुछ नहीं माँगती, अपने कर्मों को देखते हुए वह किसी वस्तु की आशा भी नहीं

रखती। केवल अबीलार्ड ही उसे सुख और दुख दे सकता है। वह लिखती है,—'पत्निपद अधिक पवित्र और प्रतिष्ठित हो सकता है पर मुझे तो तुम्हारी प्रिया बनने में सब सुख है, क्योंकि इस प्रकार अपने को संसार की आँखों में नीची कर मैं तुम्हारी कीर्ति में बाधक तो न हूंगी।'

यह पत्र पाकर अबीलार्ड अवश्य आश्चर्य में पड़ा होगा, उस ने सोचा था कि मठ में रह कर हेलोज़ का हृदय शान्त हो गया होगा; वह असमंजस में पड़ा कि इस पत्र का मैं क्या उत्तर दूं? मठाधीश होकर क्या मैं ऐसे पत्रों का उत्तर दे सकता हूं? लोग उस के 'उत्तर' की आलोचना करते हैं; और उसे 'रूखा और नीरस उपदेश' कहते हैं। यदि हम विचारपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि अबीलार्ड ने इस विकट अवसर पर बड़ी चतुराई और दूरदर्शिता से काम लिया है। अपने पत्रों में उस ने हेलोज़ की सात्विक वृत्ति और धार्मिक जोश की सराहना की है और ईश्वर की आराधना की बड़ी बड़ी प्रशंसाएँ की हैं। अबीलार्ड के पत्र को पाकर हेलोज़ के संतोष का बांध टूट जाता है, वह यह मानने के लिए तय्यार नहीं होती कि भिक्षुणी होने के कारण उसे पिछली सारी बातें भूल गई हैं। अपने पहले पत्र में हेलोज़ अबीलार्ड को लिखती है, 'तुम्हारा प्रेम ही मेरे जीवन का आधार है।' दूसरे में वह उन यन्त्रणाओं का उल्लेख करती है जो उस ने भोगी हैं और अब भी भोग रही है; और

अब एक दूसरे से पृथक रहने की अवस्था में उस का कल्याण ही हैलोइज़ की सान्त्वना का हेतु हो सकता है। वह दैव को दोषी ठहराती है, उसे कठोर, अन्यायी तक कहती है—कि उस ने उन्हें विवाह के पश्चात् दण्ड दिया—उस के पूर्व नहीं। वह लिखती है,—'मेरा संयम सराहा जाता है, पर संयम मन का होता है शरीर का नहीं; मैं निरन्तर प्रेम की उन मधुर स्मृतियों की कल्पना किया करती हूँ; मेरी धार्मिकता की प्रशंसा होती है, क्योंकि मैं सभी आडम्बरों का पालन करती हूँ पर ईश्वर के सम्मुख मैं क्या मुँह दिखाऊँगी यदि निरन्तर मैं अपने दण्ड का प्रतिरोध किया करती हूँ, और उन बीते सुखों की अभिलाषा में गली जाती हूँ जो निरन्तर मेरे मन को भूत की भाँति घेरे रहती है।'

इस पत्र को पढ़ कर आबीलार्ड पर यह बात अप्रकट न रही कि यह एक 'व्यथित आत्मा' का पत्र है। वह पुनः उसी भाँति पत्र लिखता है जैसे कोई महात्मा किसी को शान्ति और सन्तोष का उपदेश देता हो। उस के उपदेशों में प्रेम का पुट है; वह क्षण भर के लिए अपना दुःख भूल जाता है, उसे स्मरण हो ही आता है कि पति के नाते वह अपनी पत्नी को पत्र लिख रहा है जो उस के सुख दुख की सहचरी है। वह न्यायशीलता, आत्मगौरव, और उत्तरदायित्व की ओर हैलोइज़ का ध्यान देने को कहता है, परन्तु वह जानता है कि उस के प्रेम ही के भरोसे ये

सच टिक सकते हैं। इस लिए वह हेलोइज़ को वासनायुक्त प्रेम के स्थान पर भगवद्प्रेम की आराधना करने की सलाह देता है।

उस का कथन व्यर्थ नहीं जाता; हेलोइज़ उस की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकती। अब उस के पत्रों में उद्दाम प्रेम के उद्गार नहीं रहते। अबीलार्ड ने उस के असह्य मानसिक व्यथा पर मानो ताला लगा दिया। इस के पश्चात् के हेलोइज़ के पत्रों में हम उसे केवल एक भिक्षुणी के रूप में अपने धर्मगुरु से परामर्श करती हुई पाते हैं।

उस पत्रव्यवहार में प्रायः दस वर्षों का समय लगा होगा। सन् ११४१ में सेन्स की परिषद् बैठी और उस ने अबीलार्ड को 'धर्मच्युत' घोषित किया। अबीलार्ड को यह समाचार क्लूनी (Cluny) में ज्ञात हुआ, जब कि वह स्वयं रोम के पादरी के पास अपनी सफ़ाई देने जा रहा था। क्लूनी के महंत ने अबीलार्ड की सहायता की और उस के प्रयत्न से अबीलार्ड को इस दण्ड से मुक्ति मिली। सन् ११४२ में अबीलार्ड ने अपना शरीर छोड़ा। महात्मा पीटर ने हेलोइज़ को उस की मृत्यु का समाचार भेजा। हेलोइज़ की प्रार्थना पर अबीलार्ड का शव पेराक्लीट भेज दिया गया और वहीं समाधि में गाड़ा गया। तीन वर्ष बाद जब हेलोइज़ का देहावसान हुआ तो लोग कहते हैं अबीलार्ड ने अपनी पत्नी के स्वागत के लिए अपनी बाहें खोलीं और हाथ फैलाए। हेलोइज़ की समाधि

उन के समीप ही बनी। उस की समाधि पर अंकित यह पंक्ति सदा उन के चरित्र का स्मरण दिलाती है—

"प्रेम के विषम रहस्य"

उन प्रेमियों का प्रेम—अपने वेग, त्याग, कष्ट और अशिथिलता के लिए प्रसिद्ध है। उन के दुख का मूल कारण दैवी-विपत्ति नहीं, वरन् मनुष्य का अत्याचार था। अबीलार्ड और हेलोइज़ महान् आत्मा होते हुए भी अंत तक पुरुष और स्त्री रहे;—धार्मिक वेष में भी वे वैसे ही सच्चे पुरुष और स्त्री बने रहे जैसे उस समय जब वे एक दूसरे की आँखों में प्रेम का माधुर्य देखा करते थे। अस्तु।

'सत्य'

नोट—इस भूमिका के लिखने में मुझे "Women of the Cell and Cloister," by Ethel Rolt-Wheeler से बड़ी सहायता मिली है।

पहिला पत्र

अबीलार्ड का फिलिन्टस् के नाम

पिछली बार फिलिन्टस् जब हम तुम साथ थे, तुम ने मुझे अपने दुर्भाग्य की करुण-कहानी सुनाई थी। उसे सुनकर मैं आर्द्र हो गया था और सच्चे मित्र की भाँति मैं ने तुम्हारे दुखों का अनुभव भी किया था। तुम्हारे आँसुओं को रोकने के लिए मैं ने क्या नहीं किया था ? तुम्हारे सामने मैं ने सारे दार्शनिक तर्क उपस्थित किये थे, मेरा विश्वास था कि वे कदाचित् तुम्हारी मनोव्यथा कम कर सकें। परन्तु वे सारे प्रयत्न निष्फल हुए, दुख, मुझे जान पड़ता है, तुम्हें सम्पूर्ण रूप से अपना बैठा है और बुद्धि, तुम्हारी सहायता न कर, तुम से नाता तोड़ बैठी है। परन्तु मेरी कुशल मित्रता ने तुम्हें दुख के पंजों से छुड़ाने के लिए एक उपाय ढूँढ़ निकाला है। मेरी ओर तनिक ध्यान दो, तनिक मेरी विपत्ति-कथा सुनो और तुम्हारी दुख-कहानी फिलिन्टस ! अभागे प्रेमी अबीलार्ड की दुर्भाग्य गाथा के सामने कुछ न जँचेगी। तनिक देखो—मैं विनती करता हूँ—क्या क्या सहन करके मैं तुम्हारी सेवा करना चाहता हूँ और इसे मेरे प्रेम का कुछ साधारण

प्रमाण न समझना क्योंकि मैं तुम्हारे सामने उन बातों का वर्णन करने जा रहा हूँ जिन का पुनःस्मरण मेरे लिए विना अपने हृदय को गहरी चोट पहुँचाये असम्भव है।

तुम्हें मेरा जन्मस्थान मालूम है, और शायद, यह भी कि मुझ में वे वाह्य दुर्गुण न थे जिन का आरोप विजातीय हमारी जाति पर करते हैं, अर्थात्—प्रकृति का ओछापन और निपट चंचलता। मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ और इसी भांति उन गुणों से तुम्हें निस्संकोच परिचित कराऊँगा जो मुझ में लक्ष्य किये गये थे। मुझ में कलाओं के प्रति नैसर्गिक उत्साह और योग्यता थी। मेरे पिता सज्जन थे और साधु स्वभाव के। वे युद्ध पसन्द करते थे, पर विचारों में उन बहुतों से भिन्न थे जिनका यह व्यवसाय था। उन के विचार से अशिक्षित होना श्लाघ्य न था, परन्तु युद्धक्षेत्र में वे रसज्ञ और योद्धा—दोनों से समान रूप से वार्तालाप करने में निपुण थे। गृह-प्रबन्ध में वे उतने ही कुशल थे और सैनिक शिक्षा के साथ साथ ललित कलाओं के अध्ययन की ओर अपने लड़कों को रुझाने पर उतने ही तत्पर रहते थे। मैं उनका जेठा लड़का था, अतः उनका लाड़ला भी था। मेरी शिक्षा की ओर उन्हों ने साधारण से अधिक ध्यान दिया था। मुझ में अध्ययन के प्रति

नैसर्गिक रुचि थी। मैं ने अपनी शिक्षा में विशेष उन्नति की। पुस्तक प्रेम से पीड़ित और सर्व्वतोप्राप्त प्रशंसा की झड़ी से उत्साहित मुझ में विद्वान होने के अतिरिक्त और किसी कीर्त्ति की अभिलाषा न रही। अपने भाइयों के लिए मैं ने युद्ध-वैभव और विजयश्री छोड़ी। इतना ही नहीं, मैं ने अपनी पैतृक संपत्ति तथा स्वत्व का भी उन के लिए त्याग किया। मुझे ज्ञात था कि 'अभाव' विद्याभ्यास के लिए एड़ का काम देता है। मुझे इस का डर था कि कदाचित् 'विद्वान' की उपाधि के योग्य मैं न होता यदि दूसरों से मैं केवल इस बात में श्रेष्ट होता कि मेरे पास एक भारी संपत्ति है। शास्त्रों में मुझे 'तर्कशास्त्र' अधिक रुचिकर था। इसी शास्त्र का मैं आचार्य्य बनना चाहता था। तर्कायुधों से सुसज्जित होकर मुझे सार्वजनिक शास्त्रार्थों में विजय कामना से सम्मिलित होने में आनन्द मिलता था। जहाँ कहीं मुझे पता चलता कि इस विद्या का अधिक प्रचार है, मैं द्वितीय सिकन्दर की भाँति इस प्रान्त से उस प्रान्त में भटकता हुआ नये प्रतिद्वन्द्वियों की खोज में वहाँ पहुँचता।

अन्ततः, शास्त्रार्थ में दुर्जेय होने की अभिलाषा मुझे पेरिस ले गई, जो सभ्यता का केन्द्र था और जहाँ उस विद्या का अधिक प्रचार था जिस का मैं प्रेमी था। मैं ने अपने को शास्त्रों

(Champeaux) नामक आचार्य्य के अधीन किया, जिस ने उस समय के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक होने की ख्याति उपार्जन की थी, परन्तु जो अपने दुर्गुणों के कारण केवल सब से कम मूर्ख था। उस ने बड़ी कृपा दिखाते हुए मेरा स्वागत किया, परन्तु मैं उसे अधिक समय तक प्रसन्न रखने का आनन्द न उठा सका, क्योंकि उस विषय का मुझे अधिक ज्ञान था जिस पर वह व्याख्यान दिया करता था, और मैं प्रायः उस का खण्डन किया करता। अधिकतर आपस के विवाद में मैं ऐसे सुन्दर तर्क उपस्थित कर बैठता कि उस की सारी हैकड़ी भूल जाती। उस के लिए यह असह्य था कि अपने शिष्य द्वारा वह अपने को पराजित देख सके। अधिक गुणवान होना भी कभी कभी जोखिम होता है।

मेरी ख्याति के साथ साथ मेरे प्रति ईर्षा का भाव भी बढ़ता गया। मेरे शत्रुओं ने मेरी उन्नति में बाधा डालने की चेष्टा की, परन्तु उनकी दुर्वृत्ति मुझे केवल उत्साहित ही कर सकी। विपक्षियों की ईर्षा की मात्रा के अनुसार अपनी योग्यता का अनुमान करके, मैंने निश्चय किया कि मुझे अब चम्पे के व्याख्यानों की आवश्यकता न थी, वरन् मुझ में इसकी यथेष्ट योग्यता है कि मैं स्वयं दूसरों को पढ़ा सकूं। मैं ने मेलन (Melun) में एक पद के लिए प्रार्थना पत्र भेजा। मेरे आचार्य्य ने मेरी

आशाओं पर पानी फेरने में अपनी सारी चालाकी खर्च की पर, व्यर्थ, इस अवसर पर भी उसकी चालबाजियों पर उसी भाँति मैं विजयी हुआ जैसे इस के पूर्व उस की विद्वत्ता पर। मेरे व्याख्यानों में सदा भीड़ रहती थी, मेरा आरम्भ ऐसा हुआ कि मैं ने अपने प्रसिद्ध आचार्य्य की सारी प्रतिष्ठा लुप्त कर दी। स्थानीय पंडितों से शास्त्रार्थ करके सर्वश्रेष्ठ तार्किक कहलाने की इच्छा से, मैं ने कारबील (Corbeil) की यात्रा की। यात्रा की थकान से मैं बहुत बीमार हो गया, मेरी हालत सुधरते न देख मेरे वैद्यों ने, जो कदाचित् शाम्पो से मिले थे, मुझे देश चले जाने की सलाह दी। इस प्रकार मैं ने स्वयं कुछ दिनों के लिए अज्ञातवास लिया। मैं तुम्हीं पर छोड़ता हूँ, सोचो तो, क्या मेरी अनुपस्थिति सज्जनों को अच्छी लगी होगी। अन्त में मैं स्वस्थ हुआ और मुझे मालूम हुआ कि मेरे प्रतिद्वन्द्वी ने सन्यास ले ली है, तुम शायद सोचोगे कि मुझे परेशान करने का यह प्रायश्चित्त था, पर नहीं, यह थी लालसा। उस ने अपने को किसी ऊँचे धार्मिक पद पर पहुँचाने की ठानी थी अतः पुराने ढर्रे पर चलकर उस ने तपस्या का कपट वेष धारण किया था। धार्मिक उच्च पदों पर पहुँचने के निमित्त यह सुगम और सीधा मार्ग है। उस की आशा पूर्ण भी हुई और वह पादड़ी (Bishop) बन गया; फिर भी उस ने पेरिस और अपनी पाठशाला की देख रेख न छोड़ी। अपनी अजमानी

पर वह अपना अंश उगाहने जाता पर लौटता और अपना समय उन शिष्यों को पढ़ाने में व्यतीत करता जो अभी तक उस की अधीनता में थे। इस के पश्चात् उस से मेरी प्रायः मुठभेड़ होती।

लगभग इसी समय मेरे पिता बेरेन्जर (Beranger) ने अपनी आयु के साठ वर्ष आनन्द से बिता कर, वाणप्रस्थ स्वीकार कर मठ की शरण ली, जहाँ उन्हों ने अपनी शेष वृद्धावस्था ईश्वरोपासना में व्यतीत करने का निश्चय किया। मेरी माता ने भी, जो अभी युवती थीं, यही निश्चय किया। उन्हों ने धर्म की दीक्षा ली, पर जीवन के आनन्दों को बिलकुल न छोड़ा। उस के मित्र घर पर भी मिलते थे और मठ में भी। उस समय मैं उपस्थित था जब मेरी माँ ने दीक्षा ली थी। मैं ने लौट कर निश्चय किया कि मैं धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करूँगा, और मैं आचार्य की खोज करने लगा। मुझे अनसेल्म (Anselm) नामक व्यक्ति के पास जाने की लोगों ने सम्मति दी। यह उस समय का धुरन्धर विद्वान् गिना जाता था। पर यदि मुझ से पूछो तो उस का सम्मान उस के सफेद बालों के कारण था—उस की प्रतिभा और विद्वत्ता के कारण कम। यदि तुम किसी कठिन प्रश्न पर उस से परामर्श करते, तो निश्चय जानो तुम्हें और भी भ्रम में पड़ना पड़ता। जिन्हों ने उसे देखा था उसकी पूजा करते थे, पर जिन्हों ने उस से

तर्क किया था उस से अत्यन्त असन्तुष्ट थे। वह वाक्पटु था, बातें खूब करता था, पर व्यर्थ। उस के व्याख्यान उस अग्नि के समान थे जो प्रकाश न देकर केवल धूमराशि में सब कुछ ढक लेती है, उसे शाखाओं और पत्तियों से लदा हुआ बन्ध्या वृक्ष समझो। मैं उसके पास ज्ञानोपार्जन की अभिलाषा से पहुँचा, पर मुझे वैसा ही अनुभव हुआ जैसा शुक को सेमर की सेवा करने पर। उस के आश्रय में मैं अधिक न रहा। प्राचीन ऋषियों को अपना कर्णधार बनाकर मैं धर्मशास्त्रों के समुद्र में निर्भीकता से धंस पड़ा। अल्पकाल ही में मैं ने इतनी उन्नति कर ली कि दूसरों ने मुझे अपना अध्यापक स्वीकार किया। मेरे छात्रों की संख्या आश्चर्यजनक थी, उन से प्राप्त उपहारों से मेरी प्रसिद्धि का अनुमान भली भाँति हो सकता था। अब मैं तीर लगा था, विपत्तियों की आँधी बीत चुकी थी, और मेरे शत्रुओं का क्रोध व्यर्थ नष्ट हो चुका था। हा! हन्त! यदि मैं इस शान्ति का उपयोग जानता। परन्तु जब मन को शान्ति रहती है मन्मथ की आँखें उस पर अधिक रहती हैं, ऐसे समय में निश्चिन्तता और भी बुरी होती है।

प्रिय मित्र! अब मैं तुम्हें अपनी दुर्बलताएँ बतलाने जा रहा हूँ। प्रत्येक पुरुष, मेरा विश्वास है जीवन में किसी

न किसी समय प्रेम की आराधना की आवश्यकता का अनुभव करता है और उस की अवहेलना की चेष्टा व्यर्थ है। मैं दार्शनिक था फिर भी इस मनोभव ने मुझे पराजित कर लिया। उस के कोमल शर मेरे तर्कों से अधिक तीखे थे, बड़े मजे में वह मुझे अपनी इच्छानुसार चला रहा था। यह विवशता मुझे प्रिय थी। विभूतियों से घिरे हुए मुझ प्रमत्त को अदृष्ट ने महान् यन्त्रणा दी, मैं उस की प्रतिहिंसा का अनुपम उदाहरण हुआ और बड़ा ही अभागा, क्योंकि सन्तोष लाभ करने के उपकरण से वंचित होकर मैं पाशविक वृत्तियों का शिकार बन गया। प्रिय मित्र, अपनी जीवन-गाथा का ब्योरा तुम्हें सुनाता हूँ, और इस बात का निर्णय तुम पर छोड़ता हूँ कि क्या वास्तव में मैं ऐसे कठोर दण्ड के योग्य था।

मुझ में सदा से उन ओछी स्त्रियों के प्रति घृणा थी जिन के फेर में पड़ना लज्जाजनक है। मैं उच्चाभिलाषी था, मैं चाहता था कि मुझे अड़चनों का सामना करना पड़े जिन पर मैं अधिक प्रसन्नता और गौरव से विजय प्राप्त करूँ।

पेरिस में एक सुन्दरी थी जो विधाता के रचना-कौशल का सुन्दर आदर्श थी, वह थी प्यारी हेलोज (Heloise) फुल्बर्ट

(Fulburt) नामक पुरोहित की प्रख्यात भतीजी। उस की सुन्दरता और वाक्चातुर्य नीरस से नीरस और निर्जीव से निर्जीवहृदय में स्फूर्ति उत्पन्न करनेवाली थी। वह वैसी ही शिक्षिता भी थी। हेलोज़ ललित कलाओं की आचार्य्य थी। तुम चाहे आसानी से अनुमान करलो कि मुझे मुग्ध करने में वह कुछ भी सहायक न हुई। उसे मैं ने देखा, उस पर आसक्त हो गया। मैं ने उसे भी अपने ऊपर मुग्ध करना निश्चय किया। यश की तृष्णा मुझ में शान्त हो गई, और मेरी सारी अभिलाषाएँ इसी नयी धुन में लीन हो गईं। हेलोज़ के अतिरिक्त मैं और कुछ सोचता ही न था, सभी वस्तुएँ मेरे मन में केवल उसी का ही ध्यान कराती थीं, मैं गम्भीर पर विचलित था, मेरी इच्छाएँ ऐसी प्रबल थीं कि उन के सम्मुख किसी प्रकार की बाधा कुछ भी न थी। मैं सदा का सम्मान-भाजन था, मैं ने आशा के बड़े बड़े पुल बाँध डाले। मेरी ख्याति चारों ओर फैल रही थी, क्या एक सुशील महिला ऐसे पुरुष को अस्वीकार कर सकती है, जिस ने अपने युग के धुरन्धर विद्वानों को चक्कर में डाल रक्खा हो? मैं युवा था, क्या वह उन प्रतिज्ञाओं का अनादर करेगी जो मेरे हृदय में केवल उसी के लिए थीं? मेरी आकृति काफी अच्छी थी और मेरे शब्दों से कोई भी मेरे आचार्य्य होने में शंका नहीं कर सकता था; और वेश-भूषा, तुम जानते हो, स्त्रियों के लिए कम आकर्षण की वस्तु

नहीं है। इस के अतिरिक्त मुझ में प्रेम-पत्र लिखने की कुशलता भी यथेष्ठ थी, मुझे आशा थी कि यदि कभी उस ने मुझे पत्र लिखने का अवसर प्रदान किया, तो वह मेरे हृदय के उच्छवासों को आनन्द से पढ़ेगी।

इन विचारों से प्रेरित होकर मैं केवल उस से बातचीत करने का उपाय सोचा करता। प्रेमी जन या तो सुअवसर पा जाते हैं या उसे ढूँढ निकालते हैं। साधारण मित्रों की सहायता से मैं ने फुलबर्ट से परिचय प्राप्त किया और क्या तुम विश्वास करोगे? फिलिन्टस! उस ने कृपापूर्वक मुझे अपने साथ भोजन करने तथा अपने घर में रहने का अधिकार दे दिया। हाँ, मैं ने अवश्य उसे यथेष्ठ धन दिया क्योंकि उसके जैसे पद के लोग बिना धन के कुछ नहीं करते। पर क्यों न मैं उसे दे डालता? प्रिय मित्र, तुम जानते ही हो प्रेम क्या वस्तु है, फिर सोचो, मेरे जैसे दग्ध-हृदय के लिए अपनी प्रेमिका के समीप रहने का अवसर कितना मधुर था। मैं इस सुख को सम्राट् के विशाल साम्राज्य से भी बदलने पर तैयार न था। हेलोज से मैं मिला, उस से बातें कीं, मेरी प्रत्येक चेष्टा मेरी प्रत्येक व्याकुल दृष्टि ने मेरी मनोव्यथा उस पर प्रकट की और उस ने अपनी उदारता से मुझे सब कुछ की आशा रखने का प्रमाण दिया।

फुलबर्ट की इच्छा थी कि मैं हेलोज को दर्शन की शिक्षा दूं, इस प्रकार मुझे उस से एकान्त में मिलने का अवसर हाथ लगा, पर फिर भी उस पर अपना प्रेम प्रकट करने में निस्सन्देह मैं अत्यन्त भीरु था।

एक दिन जब मैं एकान्त में हेलोज के साथ था मैं ने लजाते हुए कहा—'प्यारी हेलोज! यदि तुम अपने हृदय से भली भाँति परिचित होगी तो तुम्हें इस पर आश्चर्य न होगा कि तुम ने मेरे हृदय में किस प्रेम की उद्भावना की है। असाधारण यद्यपि यह है, फिर भी मैं साधारण शब्दों में प्रकट करता हूँ—सुन्दरी! मैं तुम से प्रेम करता हूँ। अभी तक मैं समझता था कि दर्शनशास्त्र हमें अपनी इन्द्रियों पर शासन रखने की शिक्षा देता है तथा यह उन दुर्बल आत्माओं के लिए सुरक्षित शरण-स्थान है जिन्हें संसार सागर में थपेड़े खाने और डूब जाने का डर रहता है, परन्तु तुम ने मेरी यह निश्शंकता और दार्शनिक-धैर्य नष्ट कर दी। धन की मैं ने अवहेलना की, यश और उस के आडम्बर मुझ में दुर्बल विचार उत्पन्न करने में सदा असमर्थ रहे, सौन्दर्य ने, केवल इसी ने, मेरी आत्मा में खलबली पैदा कर दी। अच्छा हो, यदि वही, जिस ने मेरे मन में ये भाव उत्पन्न किये हैं, दयाकर मेरे इस वक्तव्य को स्वीकार करे, परन्तु यदि यह अपराध हो—'

'नहीं,' हेलोज ने कहा—'वह अवश्य तुम्हारे गुणों से अपरिचित होगी यदि वह तुम्हारे प्रेम पर क्षुब्ध हो। पर मेरी अपनी शान्ति के लिए मेरी इच्छा थी कि या तो तुम ने यह निवेदन ही न किया होता या मुझे तुम्हारे निष्कपटता में सन्देह न करने की स्वतन्त्रता होती।'

'देवी हेलोज'—'उस की चरणों में घुटने टेकते हुए मैं ने कहा—'मैं अपनी शपथ खाकर—'उस से मैं अपने प्रेम की सत्यता का विश्वास दिलाने जा रहा था कि मुझे आहट सुनाई पड़ी। यह फ़ुलबर्ट था, कोई उपाय न था, अपनी इच्छाओं को दबाकर मुझे अन्य विषयकी चर्चा छेड़नी पड़ी। इस के अनन्तर मुझे अनेक अवसर मिले जिन में मैं ने हेलोज के मन का वह सन्देह दूर किया जो कि पुरुषों की सुलभ धूर्तता ने उस में उत्पन्न कर दिया था; और उस की बड़ी इच्छा थी कि जैसा मैं ने कहा था, उस का विश्वास न करना ही उचित है। इस प्रकार हम में बड़ा सुखकर समझौता हो गया। उस घर और उस प्रेम ने हमारे शरीर और इच्छाओं का सम्मेलन करा दिया। कितने मधुर महूर्त हम ने आनन्द से बिताये। हम दोनों एक दूसरे पर अपना प्रेम प्रकट करने के हेतु प्रत्येक अवसर का उपयोग करते और ऐसी घटनाओं का

बड़ी चतुराई से विधान करते जिस में हमें एक दूसरे से मिलने के लिए यथेष्ठ समय मिलता। मध्यरात्रि में जब फ़ुल्बर्ट और उस के चाकर खर्राटे भरते थे, हम इस सुअवसर का उपयोग प्रेम की मधुरता का रसास्वादन करने में करते और उन अभागे प्रेमियों से भिन्न, जो केवल दीवाल का चुम्बन लेकर सन्तोष करते हैं, हम एक दूसरे से मिलते थे। जहाँ हमारी भेंट होती थी वह स्थान सुरक्षित था और दर्शन का अध्ययन हमारे लिए बहाना होता। मैं विज्ञान के प्रति इतना विमुख हो गया कि उस के प्रति मेरी सारी रुचि जाती रही और जब कभी विवश होकर मुझे अपनी प्रिया को छोड़ कर दार्शनिक चर्चा के लिए जाना पड़ता तो मुझे अत्यन्त खेद और विषाद होता। प्रेम अगोपनीय है, एक एक शब्द हर एक निगाह, अपितु, मौनता भी उसे घोषित करती है। मेरे शिष्यों ने सब से पहिले इसे ताड़ लिया—उन्हों ने देखा कि मेरी विचारशक्ति में अब वह सजीवता न रही जो प्रत्येक विषय को सरल बना देती थी। अपने मनको शान्ति देने के लिए मैं पद्य-रचना के अतिरिक्त और कुछ न करता। मैं ने अरस्तू (Aristotle) और उस के शुष्क सूत्रों को, चतुर ओविड (Ovid) के आदेशों पर आचरण करने के लिए, आले पर रख्खा! शायद ही कभी ऐसा होता कि जिस दिन मैं शृंगारिक-कविता की

रचना न करता। प्रेम मेरी सरस्वती हो रही थी मेरे गीतों का दूर दूर प्रचार हुआ और मेरी भूरि भूरि प्रशंसा हुई। मेरे तुल्य प्रेमीजन उसे याद करने में गौरव समझते और सौभाग्य से मेरे विचारों और पद्यों का उपयोग कर वे ऐसे अनुग्रह के पात्र हुए जो कदाचित् अन्यथा असम्भव होता। इस से हमारी रसिकता की ऐसी धूम हुई कि हेलोज़ और अबीलार्ड (Abelard) के चरित्र की सर्वत्र चर्चा होती थी।

नगर का 'चबाव' अन्त में फुल्बर्ट के कानों तक पहुँचा। बड़ी कठिनाई से उस ने उस पर विश्वास किया; क्योंकि उसे अपनी भतीजी से स्नेह था, और मेरा वह पक्षपात करता था; परन्तु भली भाँति जाँच से उस का विश्वास कम होने लगा। उस ने हम दोनों को प्रेम-संभाषण करते हुए पकड़ा। कुतूहल भी कभी-कभी कितना अनर्थकारी होता था! फुल्बर्ट का क्रोध इस अवसर पर अत्यन्त साधारण था, पर मुझे भविष्य में बुरी तरह से बदला लेने की आशंका होने लगी। मेरे लिए उस शोक और ग्लानि का वर्णन करना असम्भव है जो मेरी आत्मा को उस समय पहुँचा जब मुझे पुरोहित फुल्बर्ट का घर और प्रिय हिलोज़ को छोड़ने पर विवश होना पड़ा, परन्तु हमारे इस वियोग ने हमारी आत्माओं को और भी जकड़ दिया और

जिस आशातीत अवस्था में हम थे उस ने हमें सब कुछ करने के योग्य बना दिया था।

अपनी चालों पर मैं लज्जित न होता वरन उन्हें शुभ अवसर समझता। फुल्बर्ट ने तो मुझे हेलोज के साथ एकान्त में देखा था परन्तु कौन सा व्यक्ति, जिस में तनिक भी आत्म सम्मान है, ऐसे अवसर पर चिढ़ न जाता। दूसरे दिन मैं ने उसी प्रिय घर के पास अपने रहने के लिए एक जगह ठहराई। मैं ने अपना शिकार न छोड़ने का निश्चय कर लिया था। कुछ दिनों तक मैं वहाँ अज्ञातरूप से रहा। वे दिन मेरे लिए पहाड़ से जान पड़ते थे। सुख से वंचित होकर हम अत्यन्त अधीरता से अपनी विपत्तियों को झेलते हैं।

हेलोज से मिले बिना मेरा जीना असम्भव था। अतः मैं ने उस की परिचारिका को अपने हाथ में करने का प्रयत्न किया। जिस का नाम था एगेटन (Agaton), वह गेहुएँ रंग की थी और अच्छे गठन की, उस की आकृति अपने जाति के औरों से अच्छी थी, उस का मुख सुन्दर था, उस की आँखें चमकीली और किसी भी ऐसे व्यक्ति में मोह उत्पन्न करने में समर्थ थीं जो किसी और के प्रेम में न पड़ा हो। मैं उस से

एकान्त में मिला और मैं ने उस से बिनती की कि वह मुझ संतप्त प्रमी पर दया करे। उस ने उत्तर दिया कि वह मेरे लिए सब कुछ करने के लिए तैयार है पर उस का एक पुरस्कार होगा। इस बात पर मैं ने अपनी थैली खोल कर उसे चमचमाते हुए रुपये दिखलाये जो सन्तरियों को सुला देते हैं, पहाड़ों में मार्ग निकालते हैं, और जो कठोर से कठोर सुन्दरी के हृदय को कोमल बनाने में समर्थ हैं। 'आप भ्रम में हैं' उसने सिर हिलाकर मुस्कुराते हुए कहा—'आपने मुझे पहचाना नहीं। यदि धन मुझे लुभा सकता—एक धनी मठाधीश मेरी खिड़की के नीचे नित्य रात्रि में चक्कर लगाता और गाया करता है; वह मुझे अपने मठ में ले चलने को कहता है जो, उस के कथनानुसार पृथ्वी के सब से सुन्दर प्रदेश में है। एक राज्य सभासद मुझे बहुत सा धन देता है और मुझे विश्वास दिलाता है कि तुम तनिक भी चिन्ता न करो यदि हमारे प्रेम-सम्बन्ध से कोई बात हुई तो मैं तुम्हें अपने नौकर से ब्याह दूँगा और उसे अच्छी सी नौकरी दे दूँगा। उस युवक सैनिक की तो मैं बात ही नहीं करती जो नित्य रात्रि में यहाँ चक्कर काटता रहता है और सब प्रकार के संभव उपायों से मुझे वश में करना चाहता है। यह केवल प्रेम ही हो सकता है जो उसे मेरे पीछे पड़ने पर विवश करता है। मेरे पास तुम्हारी देवियों की भाँति

क्या उसे लुभाने को बहुमूल्य अँगूठी या आभूषण रक्खे हैं ? तथापि उस की सारी शृंगार-चेष्टा ने मेरे हृदय में तनिक भी घर न किया। मैं आसानी से लुभाई नहीं जा सकती। मैं अपने प्रथम हृदयेश्वर के प्रेम की बड़ी पक्की हूँ।'

उस ने बड़े अभिप्राय से मेरी ओर देखा, पर मैं ने कहा—'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई।'

'समझदार और रसिक होकर भी', उस ने उत्तर दिया—'तुम मन्दबुद्धि हो। अबिलार्ड ! मैं तुम से प्रेम करती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम हेलोज पर जान देते हो और मैं तुम्हें इस पर दोष नहीं देती, मेरी अभिलाषा केवल तुम्हारी दूसरी प्रेमपात्री बनने की है। मेरा हृदय प्रेमपूर्ण है और मेरी मालकिन का भी। आसानी से तुम मेरे प्रेम का बदला दे सकते हो। व्यर्थ संशय में पड़कर हिचको नहीं, चतुर पुरुष को एक साथ कई एक से प्रेम सम्बन्ध रखना उचित है जिस में यदि एक भी चूके तो उस का काम चलता रहे।'

तुम सोच सकते हो, फिलिन्टस, मुझे इन बातों को सुनकर कितना आश्चर्य हुआ, हेलोज को मैं इतना चाहता था कि

बिना कुछ सोचे ही कि एगेटन का कथन उचित था या अनुचित, मैं वहाँ से चलता बना। थोड़ी दूर जाने पर मैं ने पीछे फिर कर देखा तो वह नैराश्यजनित क्रोध से नाखून चबा रही थी; मुझे भय हुआ कि इस का फल अच्छा न होगा। वह दौड़ी हुई फुल्बर्ट के पास पहुँची और उस ने मेरी सारी बातें उस से कह सुनाईं; पर मेरा अनुमान है कि उस ने अपनी बात अवश्य छिपा ली होगी। उस पुरोहित ने यह अवज्ञा न क्षमा की। पश्चात् मैं ने देखा कि वह अपनी भतीजी के विषय में उस से कहीं अधिक सतर्क था जितना कि मैं ने समझ रखा था। भविष्य में कोई भी मेरा अनुकरण न करे। तिरस्कृत नारी भयंकर जन्तु है। एगेटन रात दिन अपनी खिड़की पर इस ताक में बैठी रहती थी कि मैं उस की मालकिन से मिलने न पाऊँ, इस प्रकार उस ने अपने प्रेमियों को अपनी योग्यता प्रदर्शन करने का भी अच्छा अवसर दिया।

मैं बिलकुल घबड़ा गया था कि क्या करूँ; अन्त में मैं ने हेलोज़ के संगीत शिक्षक को मिलाया। उन चमकते हुए रुपयों ने, जिन का एगेटन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा था, उसे मुग्ध कर लिया; वह बड़ी सावधानी से छिपा कर पत्र ले जाने में अत्यन्त कुशल था। मेरा एक पत्र उस ने हेलोज़

के पास पहुँचाया, वह मेरे संकेत के अनुसार मुझे उद्यान के अंतिम भाग में मिली, कमन्द लगाकर मैं ने दीवाल लाँघी थी। तुम्हारे सामने, फिलिन्टस, मैं अपने सब अपराध स्वीकार करता हूँ। शाम्पो और अनसेल्म मेरे शत्रु कितने प्रसन्न होते यदि मुझ जैसे प्रचंड दार्शनिक को वे इस बुरी दशा में देख पाते। अस्तु, मैं प्राण-वल्लभा हेलोज़ से मिला। अपने आनन्दोल्लास का वर्णन मैं नहीं करूँगा, वह केवल क्षण भर के लिए था, क्योंकि हेलोज़ ने पहला समाचार जो मुझे सुनाया उस ने मुझे अनेक चिंताओं में डाल दिया। व्यर्थ तर्क वितर्क में समय नष्ट न कर मैं ने उसे उस पुरोहित का घर त्याग कर प्रातःकाल ब्रिटेनी (Brittany) चलने पर राजी किया जहाँ उस ने देवी की भाँति द्वितीय अपोलो(Apollo) को जन्म दिया जिस की देख रेख मेरी बहिन ने की।

हेलोज़ का इस प्रकार उड़ा ले जाना फुल्बर्ट से काफी बदला लेना था। इस पर वह बहुत चिन्तित हुआ, और इस के कारण उस की थोड़ी बहुत बुद्धि, जो परमात्मा ने उसे दी भी थी, जाती रही, उस के शोक और विलाप में चवाइयों को उसे हेलोज़ के चचा के अतिरिक्त और भी कुछ होने का सन्देह करने का अवसर दिया।

अन्त में मैं उस की विपत्ति पर दयार्द्र होने लगा और अपने इस अपहरण को जो प्रेम से प्रेरित हो कर मुझे करना पड़ा था मैं कृतघ्नता समझने लगा। मैं ने बीती हुई बातों को उस से कह कर उस के क्रोध को शान्त करने का प्रयत्न किया, और प्रसन्नता से हेलोज़ से विवाह करने का उसे वचन दिया। उस ने अपनी अनुमति भी दी और अनेक आलिङ्गन और अनुरोध से हमारे समझौते की पुष्टि की। परन्तु उस मूर्ख पुजारी की बातों का ठिकाना ही क्या? क्रूर बदला लेने के लिए वह केवल षड्यन्त्र रच रहा था, जैसा कि तुम्हें उस से ज्ञात होगा जो आगे चल कर हुआ।

मैं ने ब्रिटैनी की यात्रा की कि मैं प्रिय हेलोज़ को वापस ले आऊँ जिसे मैं अब अपनी पत्नी समझता था। मैं ने जब उसे बतलाया कि मेरे और उस के चचा के बीच क्या क्या बातें हुई थीं तो मुझे ज्ञात हुआ कि उस के विचार मेरे विचारों के प्रतिकूल थे। उस ने विवाह से मेरा मन फेरने के लिए सब कुछ कहा— कि विवाह दार्शनिकों के लिए हानिकारक बन्धन है; बच्चों का चिल्ल पों, गृहस्थी के जंजाल उस शान्ति और एकाग्रता के बिलकुल विरुद्ध हैं जो अध्ययन के लिए वाँछनीय हैं। उस ने मेरे सामने बड़े बड़े आचार्यों के कथन को प्रमाण स्वरूप उपस्थित किया। उस ने

यहाँ तक ज़ोर देकर कहा कि अभागे सुकरात ने इसी लिए प्रसन्नता से प्राण छोड़ा था कि इस प्रकार उसे उस की स्त्री चन्द्रप्रिय (Xanthippe) से छुटकारा मिलता था।

'क्या यह मेरे लिए अधिक सुखकर नहीं है', हेलोज़ ने कहा—'कि मैं तुम्हारी भार्या न बन कर तुम्हारी प्रिया रहूँ ? और क्या प्रेम में हम दोनों के हृदयों को दृढ़ता से संयुक्त रखने के लिए विवाह से अधिक शक्ति नहीं है ? कठिनता से अल्प मात्रा में प्राप्त सुख सदा आनन्दप्रद होता है, परन्तु सदा-सुलभ और साधारण सभी वस्तुएँ निस्सार और अरोचक हो जाती हैं।'

उस के तर्क ने मुझ पर कुछ भी असर न किया, अतः हेलोज़ ने मेरी बहिन को मुझे समझाने पर बाध्य किया। लूसिला (क्योंकि यही उस का नाम था) इस हेतु मुझे एकान्त में ले जाकर कहने लगी—'भाई, तुम्हारा विचार क्या है ? क्या यह सम्भव है कि अबीलार्ड हेलोज़ से सचमुच विवाह करने की बात सोचे ? वह, अवश्य, अविच्छिन्न प्रेम के योग्य है; यौवन, सौन्दर्य और शिक्षा जो मनुष्य को गुणी बनाते हैं सभी उस में एकत्र हैं। तुम यदि चाहो तो उन सब की उपासना कर सकते हो, पर तुम्हें चाहे बुरा ही लगे—सौन्दर्य सिवा उस पुष्प के है ही

क्या जो अत्यल्प विकार से मुर्झा जाता है ? जब वह रूप चला जायगा जिस से तुम इस तरह आकृष्ट हुए हो और जब वह शोभा नष्ट हो जायगी, तुम्हें अन्त में इस बात का व्यर्थ पछतावा होगा कि तुम ने अपने को इस बन्धन में बाँध रखा जिस से केवल मृत्यु उपरान्त ही छुटकारा मिल सकता है। मैं तुम्हें विवाहितों के उद्धार की अन्तिम आशा में भरोसे न देखूँगी। क्या तुम देखते हो कि शिक्षा से हेलोज अधिक सुशील हो गई है ? मैं जानती हूँ वह उस अभिभूत महिलाओं में से नहीं थी जो निरन्तर तुम्हें सुन्दर वक्तृताओं, आलोचक दृष्टिपातों, और लेखकों के गुण दोष विवेचन से परेशान किया करती हैं। जब ये अपनी वक्तृता के धुन में होती हैं—पति, मित्रगण और परिचारक मंडल सभी उन के सामने भाग खड़े होते हैं। हेलोज में ये दुर्गुण नहीं हैं, पर फिर भी यह असह्य होता है कि तुम्हें पत्नी के सन्मुख अल्प अनौचित्यरहित बात भी कर सकने की उतनी भी स्वतन्त्रता न हो जो तुम प्रेमिका के मुख से प्रसन्नता से सुनते हो। तुम्हारा कहना है कि तुम हेलोज के प्रेम में सम्पूर्ण रूप से विश्वास है, मैं इस का विश्वास करती हूँ; उस ने तुम्हें इस के साधारण प्रमाण नहीं दिये हैं, परन्तु क्या तुम्हें इस का विश्वास है कि विवाह उस के प्रेम की समाधि न बन जायगी ? पति और स्वामी का नाम सदा बुरा होता है और हेलोज कुकनू (अमर) न हो जायगी जैसा कि तुम

उसे इस समय समझते हो ? क्या वह स्त्री सुलभ प्रकृति न दिखायेगी ? बस, बस, दार्शनिक का मन साधारण मनुष्यों से भी अधिक असुरक्षित है।'

मेरी बहन बातों ही बातों में उत्तेजित हो उठी, और मुझे सैकड़ों ऐसे उदाहरण देने जा रही थी, परन्तु मैं ने चिढ़कर उसे यह कह कर रोका, कि वह हेलोज़ को बिल्कुल नहीं पहचानती।

दो एक दिन बाद हम ब्रिटेनी से बिदा हुए और पेरिस आये जहाँ मैं ने अपना संकल्प पूर्ण किया। मेरा विचार था कि हमारा विवाह गुप्त रहे, अतः हेलोज़ आर्जेन्टील (Argenteuil) की संन्यासिनियों में रहने चली गई।

अब मैं ने फुलबर्ट के क्रोध को शान्त समझा और मैं निश्चिन्तता से रहने लगा, पर शोक ! हमारा विवाह उस की प्रतिहिंसा के सन्मुख दुर्बल परित्राण था। देखो फिलिन्टस् किस बर्बरता से उस ने मुझ से बदला लिया। उस ने मेरे नौकरों को घूस देकर मिलाया; एक हत्यारा रात में हाथ में अस्तुरा लेकर मेरे शयनागार में पहुँचा और मुझे गाढ़ी निद्रा

में पड़ा पाया। मुझे अत्यन्त लज्जाजनक दण्ड भोगना पड़ा जिस का शत्रु की प्रतिहिंसा आविष्कार कर सकती थी, सारांश यह, कि प्राण न खो कर मैं अपना पुंसत्व खो बैठा। ऐसा नृशंस कर्म न्याय के दण्ड से न बचा, पाजी को उसी अंग के विच्छेद का दण्ड भोगना पड़ा; यह प्रतीकार रहित अपकार के लिए तुच्छ सान्त्वना थी। तुम से मैं स्वीकार करता हूँ कि यथार्थ पश्चात्ताप से अधिक लज्जा ने मुझे यह निश्चय करने पर विवश किया कि मैं लोगों की आँखों से दूर हो जाऊँ, परन्तु मैं अपने को हेलोज से अलग न कर सका। ईर्षा ने मेरे मन पर अधिकार जमाया, और उस के सुखों की हत्या करके मैं ने प्रतिस्पर्धियों को निराश करने का संकल्प किया। मठ में प्रवेश करने के पूर्व मैं ने हेलोज को संन्यासिनी बनकर आर्जेन्टील के विहार में प्रवेश करने पर बाध्य किया। मुझे स्मरण है कि किसी ने उसे इस प्रकार निर्दयता से अपना बलिदान करते हुए रोका था, पर उस ने कार्नेलिया के उन शब्दों में उत्तर दिया था जो उस ने विजयी पांपी (Pompey) की मृत्यु पर कहा था—

'प्रियतम—हमारे घातक विवाह ने ही तुम पर यह विपत्ति ढाई है और मैं पापिन उस का कारण हूँ। जब तक

तुम भाग की अनीति प्रमाणित करने जाते हो मैं भी उसी भाग्य में भागी बनकर अपने प्रेम को इस प्रकार विशुद्ध करूँगी।'

यह कहते हुए वह वेदी के समीप पहुँची और उस ने संन्यासिनी का व्रत इस दृढ़ता से ग्रहण किया जिस की मुझे उस महिला से आशा न रखनी चाहिए थी जिसे सुखों की इतनी अधिक अभिलाषा थी और जो उस का उपयोग अब भी कर सकती थी। मैं अपनी दुर्बलता पर लज्जित हुआ और क्षण मात्र भी इस पर अधिक विचार न कर मैं ने एक मठ की शरण ली और वहीं रह कर अपनी वासना को दमन करने का निश्चय किया। मैं ने अब सोचा कि ईश्वर ने मुझे इस कठोरता से इस हेतु दण्ड दिया था कि वह मुझे उस अधःपतन से बचा सके जिस में डूब जाने की मेरी इच्छा थी। आलस्य दूर करने के लिए जो उन कुवासनाओं को भड़काने वाली थी जिन्हों ने सांसारिक जीवन में मेरा अनिष्ट किया था—मैं ने विविक्ति में अपनी उस बुद्धि का सदुपयोग करने का प्रयत्न किया जिस का बहुत कुछ दुरुपयोग मैं पहले कर चुका था। मैं नवदीक्षितों को धर्म की व्यवस्था देता जो कि पादड़ियों और संघ के अनुकूल होती। इस अवकाश में मेरे नव-ख्याति के कारण उत्पन्न मेरे शत्रुओं और विशेष कर अल्बेरिक (Alberic) और लोटल्फ (Lotulf) ने, जो अपने

गुरु शाम्पो और अनसेल्म के मृत्यु उपरान्त विद्वत्ता के सम्राट् बन बैठे थे, मुझ पर आक्षेप करना आरंभ किया। उन्हों ने मुझ पर मिथ्या से मिथ्या दोषों का आरोप किया, और मेरी सारी सफ़ाई पर भी मुझे एक संघ द्वारा अपने ग्रन्थों की निन्दा होते और उन्हें जलाये जाते देखने का अपमान सहना पड़ा। यह दुख था और सच मानो, फिलिन्टस, फुल्बर्ट की नृशंसता के हाथों मिला हुआ कष्ट इसके सामने कुछ भी न था।

सद्यःप्राप्त अवज्ञा तथा मठवासियों की अपवाद जनक विषयासक्ति ने मुझे वहाँ से हट जाने और नोगेंट (Nogent) के निकट जाकर रहने पर विवश किया। मैं मरुस्थल में रहने लगा जहाँ मैं इस पर प्रसन्न था कि मैं कीर्ति से दूर रहूँगा और अपने शत्रुओं की ईर्षा के बच सकूँगा। मुझे फिर धोखा हुआ। मुझ से पढ़ने की अभिलाषा से यहाँ भी झुंड के झुंड शिष्य आ पहुँचे। बहुतों ने नगर और अपना घर छोड़ा और यहाँ आकर तम्बुओं में रहना आरम्भ किया; कंदमूल, रूखे सूखे भोजन, तथा साधारण झोंपड़ी के लिए इन्हों ने स्वादिष्ट पकवान और सुख का जीवन छोड़ा। अपने शिष्यों समेत उस मरुभूमि में मैं सिद्ध सा दिखाई पड़ता था। मेरे व्याख्यानों में वे बातें न होतीं थीं जिन की निन्दा होती थी। कितना आनन्दप्रद होता

यदि हमारी विविक्ति ईर्षा के पहुँच के परे होती। उपहार स्वरूप प्राप्त धन से मैं ने एक उपासना गृह बनवाया, और पेराक्लीट (Paraclete) नाम से उसे होली गोस्ट (Holy Ghost) को अर्पण किया। मेरे शत्रुओं का क्रोध फिर भड़का और मुझे उस आश्रयस्थान को भी त्यागने पर विवश किया। मैं इस पर बड़ी आसानी से तय्यार हो गया पर इस के पूर्व ट्राय (Troyes) के पीठस्थविर ने, मुझे वहां भिक्षुणियों के लिए विहार स्थापित कर उसे अपनी प्यारी हिलोज की संरक्षा में करने की आज्ञा प्रदान की। जब मैं ने उसे वहाँ स्थिर कर दिया तो फिलिन्टस! तुम विश्वास न करोगे, मैं बिना उस से बिदा माँगे ही चला आया।

स्थायी वास-स्थान के बिना मुझे अधिक दिनों तक भटकना नहीं पड़ा क्योंकि ब्रिटेनी के ड्यूक (Duke) ने, जो मेरी विपत्तियों की कथा सुन चुका था, देवी गिल्डस (St. Gildas) का मठ मेरे नाम कर दिया जहाँ मैं आज कल हूँ और जहाँ नित्य मुझे नये उपद्रव सहने पड़ते हैं।

मैं एक बर्बर प्रदेश में रहता हूँ जहाँ की भाषा मैं समझता नहीं। मुझे संभाषण के लिए केवल असभ्य मिलते हैं। मेरे

वायु-सेवन का स्थान दुर्गम समुद्र का तट है जो सदा संक्षुब्ध रहता है। मेरे मठ के वासी केवल दुराचार के लिए प्रख्यात हैं, और बिना किसी नियम या व्यवस्था के रहते हैं। यदि तुम उस मठ को देख पाते, फिलिंटस! तुम उसे मठ कभी न स्वीकार करोगे। उस की दीवालें और केवाड़ें अलंकार हीन हैं—सिवा उन जंगली सूअर के सिर, बारहसिंगों की टाँगों और भयानक जन्तुओं के चर्म्म के जो उन पर कीलों से जड़े हैं। उस की कोठरियों में मृग चर्म लटके हैं, साधुओं के पास यहाँ तक कि एक सिंह-नाद भी नहीं है जो उन्हें जगा सके, इस अभाव की पूर्त्ति कुत्ते और मुर्गे करते हैं। सारांश यह, कि वे अपना समय मृगया में व्यतीत करते हैं और ईश्वर करे है यह उन का सब से भारी अपराध हो। उन के व्यसन का यहीं अन्त नहीं है, और मैं व्यर्थ ही में उन्हें अपने कर्तव्य की ओर लौटाने का प्रयत्न करता हूँ; वे सब के सब मेरे विरुद्ध हो जाते हैं और मैं केवल अपने को रात दिन की परेशानी और खतरों में डालता हूँ। सदा मुझे अपने सिर पर नंगी तलवार लटकती दिखाई पड़ती है। कभी कभी वे मुझे घेर लेते हैं और अगणित गालियों से मुझे लाद देते हैं, कभी वे मेरा परित्याग कर देते हैं, और मैं अपने सन्तापकारी विचारों के हाथों अकेले छोड़ दिया जाता हूँ। मैं अपने कष्टों से

लाभ उठाने की चेष्टा करता हूँ कि इस भाँति क्रुद्ध परमात्मा को कुछ प्रसन्न कर सकूँ। कभी कभी मुझे पेराक्लीट के भवन के हाथ से निकल जाने पर दुख होता है और उसे फिर देखने की इच्छा होती है। हा! फिलिन्टस! क्या हिलोज़ के लिए प्रेमाग्नि अभी तक मेरे हृदय में दहकती नहीं है? उस अभागे प्रेम पर अभी तक मैं विजय न पा सका। अपने एकान्त वास में भी मैं आहें भरता हूँ, रोता हूँ, झूरता हूँ, हिलोज़ का नाम रटता हूँ और उसे सुन कर प्रसन्न होता हूँ। मैं दैव की कठोरता की शिकायत कर रहा हूँ; पर नहीं! हमें अपने को धोका देना उचित नहीं, मैं ने अभी तक उस की अनुग्रह का सदुपयोग ही नहीं किया। मैं निपट अभागा हूँ, मैं ने अभी तक अपने हृदय से पाप का मूल निकाल कर नहीं फेंका, क्योंकि यदि मेरा सुधार सच्चा होता, तो क्यों मुझे अपने बीते अपराधों के वर्णन में आनन्द मिलता? क्या अपने सन्ताप में मैं अपने को आसानी से तसल्ली न दे सकता, क्या मैं स्वयं परमात्मा के इन वचनों से लाभ न उठा सकता—'कि यदि उन्हों ने मुझे कष्ट पहुँचाया है तो वे तुझे भी पहुँचावेंगे; यदि संसार तुझ से घृणा करता है तो तू जान ले कि वह मुझ से भी घृणा करेगा।' आओ! फिलिंटस! हम लोग एक बार घोर प्रयत्न कर अपने दुर्भाग्य को अपने काम का बना डालें, उसे श्रेयस्कर बना दें, या

कम से कम अपने अपराधों का प्रतीकार कर डालें—परमात्मा के हाथों से जो कुछ हमें मिले हम उसे चूँ तक न कर स्वीकार करें और उस की इच्छा के विरुद्ध अपनी इच्छा न रखें। नमस्कार; मैं तुम्हें ऐसा उपदेश दे रहा हूँ जिस पर यदि मैं स्वयं आचरण कर सकता तो सुखी होता।

दूसरा पत्र

हेलोज का अबीलार्ड के नाम

कई दिन हुए संयोग से तुम्हारा एक मित्र के नाम लिखा हुआ आश्वास-प्रद पत्र मेरे हाथों पड़ा; लिखावट को पहचान कर और लेखक के प्रति मेरे प्रेम के कारण मुझे उसे खोल कर देखने का कुतूहल हुआ। अपनी अनधिकार चेष्टा का समर्थन करते हुए, मैं इस पर प्रसन्न हुई कि तुम्हारे पास से आई हुई सभी वस्तुओं पर मैं अपने पूर्ण अधिकार का दावा कर सकती हूँ। अबीलार्ड का समाचार सुनने के लिए मुझे सदाचार के नियम के उल्लंघन में हिचक भी न थी। पर अपने कुतूहल का कितना बुरा फल मुझे मिला! मुझे कितनी परेशानी हुई और सारे पत्र को अपनी विपत्तियों का एक विशेष दुख-प्रद वर्णन पाकर मुझे कितना आश्चर्य हुआ! मुझे अपने नाम का सैकड़ों बार उल्लेख मिला; मैं ने सदा उसे डरते हुए पढ़ा; और सदा उस के साथ मुझे किसी महान् विपत्ति का वर्णन मिला। मुझे तुम्हारा भी उल्लेख मिला और उसी भाँति करुणाजनक। इन रुलाने-वाली पर प्रिय स्मृतियों ने मेरे हृदय में इतना उथल पुथल मँचाया

कि मैं सोचने लगी कि मित्र के साधारण अपमानों पर सान्त्वना देने के निमित्त, इस असाधारण उपाय—अर्थात् हमारे कष्टों और विपत्तियों का वर्णन, का अवलम्बन करना ज्यादती है। मैं ने क्या नहीं सोचा! सारी बातें मेरे मन में पुनर्जीवित हो उठीं—मैं ने अपने को उसी भाँति शोक के भार से दबा हुआ पाया जैसे उस समय जब हमारे दुर्भाग्य का आरम्भ हुआ था। यद्यपि कालान्तर में वे घाव पूज जाने चाहिए, पर तुम्हारे पुनर्वर्णन उन्हें फिर ताजा करने के लिए यथेष्ठ था। मेरे स्मृतिपट से क्या कभी वे बातें मिट सकती हैं जो तुम्हें अपने लेखों के कारण सहना पड़ा। मैं अल्बेरिक और लोटल्फ के विषैले द्रोह को पुनर्स्मरण करने पर विवश हो जाती हूँ। नृशंस पितृव्य और अपमानित पति का दुखदायी दृश्य सदा मेरे सामने रहेगा। मझे क्या कभी भूल सकता है कि तुम्हारी योग्यता के कारण कितने शत्रु बन गये और तुम्हारी कीर्त्ति ने कितनी ईर्षा उत्पन्न की। मुझे सदा स्मरण रहेगा कि तुम्हारी न्याय पूर्वक उपार्जित ख्याति किस भांति विज्ञान का स्वांग रचनेवालों के निष्ठुर अत्याचारों से नष्ट भ्रष्ट की गई। क्या तुम्हारे धार्मिक निबन्धों की निन्दा इस लिए नहीं की गई कि वे जला दिये जायँ? क्या आजन्म कारावास की तुम्हें धमकी नहीं दी गई? व्यर्थ तुम ने अपनी सफाई में कहा था कि तुम्हारे शत्रु तुम पर ऐसे विचारों का दोषारोपण करते हैं जो

तुम्हारे तात्पर्य के बिल्कुल विरुद्ध हैं। व्यर्थ हम ने उन विचारों का खण्डन किया था; यह तुम्हारी सत्यता प्रमाणित करने के लिए सब कुछ निष्फल था। यह बात पहले ही से ठनी थी कि तुम 'नास्तिक' प्रमाणित किये जाओ! उन दोनों रँगे हुए साधुओं ने, जिन्हों ने 'सेन्स (Sens) की परिषद्' के सामने तुम्हारी घोर निन्दा की थी, किन-किन बातों का तुम्हें दोषी नहीं ठहराया? अपने मन्दिर का पेरेक्लीट नामकरण करते समय क्या क्या बातें नहीं उड़ाई गई थीं! उन मठवासियों ने तुम्हारे विरुद्ध उस समय क्या-क्या तूफ़ान उठाये थे—जब तुम ने उन्हें 'भाई' कहने का गौरव प्रदान किया था! इस प्रकार मर्मस्पर्शी शब्दों में वर्णित, हमारी विपत्तियों की राम कहानी ने, मेरे हृदय को भीतर ही भीतर, रुला दिया। मेरे आँसू से, जो मेरे रोके नहीं रुकते, तुम्हारा आधा पत्र धुल गया है; अच्छा होता यदि सारा का सारा धुल जाता, और मैं उसी दशा में उसे तुम्हारे पास लौटा देती; उस दशा में उसे अल्प काल तक अपने पास रखने का मुझे कम से कम सन्तोष होता; परन्तु शीघ्र ही वह मुझ से मांग लिया गया।

मैं अवश्य कहूँगी कि तुम्हारे पत्र के पढ़ने के पूर्व मेरा चित्त अधिक शान्त था। निश्चय प्रेमियों की सारी विपत्तियाँ उन

की आँखों द्वारा आती हैं। तुम्हारा पत्र पढ़ कर मुझे अपनी सारी विपत्ति लौट आई सी जान पड़ती है। इतने दिनों तक अपनी मनोव्यथा प्रकट न करने पर मैं ने अपने को धिक्कारा, विशेष कर जब कि हमारे निर्दयी शत्रुओं की क्रोधाग्नि उसी भाँति अब भी प्रज्वलित है। जब कि कठोर से कठोर द्वेष को मन्द करने वाला काल का विस्तार भी उनके क्रोध को भड़काता सा जान पड़ता है, जब कि यह ध्रुव है कि तुम्हारे गुणों के लिए तुम्हें तब तक क्लेश पहुँचाया जायगा जब तक वे तुम्हारे साथ समाधि में शरण न लें—और फिर भी कदाचित तुम्हारी हड्डियाँ शान्ति से न रहने पावें—अतः मुझे सदा अपने संकटों का मनन करने दो और यदि हो सके तो उन्हें संसार भर में उस युग को लज्जित करने के लिए प्रकट भी करने दो, जिस ने तुम्हें आदर करना नहीं सीखा। मैं किसी को भी न छोड़ूँगी क्योंकि कोई भी तुम्हारी रक्षा में मन न लगावेगा और तुम्हारे शत्रु तुम्हारी निर्दोषिता को कष्ट पहुँचाने से कभी नहीं थकते। शोक! मेरी स्मृति निरन्तर विगत विपत्तियों की कटु स्मृति से पूर्ण रहती है, अब भी क्या और का डर है? क्या कभी मेरे अबीलार्ड का नाम बिना आँसुओं के नहीं लिया जायगा? क्या कभी उस प्यारे नाम का उल्लेख बिना उच्छ्वास के नहीं किया जायगा? देखो! मैं बिनती करती हूँ, किस दुर्दशा को तुम ने मुझे पहुँचाया है;

विषण्ण, संतप्त, बिना किसी संभूत सुख के—हाँ! यदि वह तुम से न मिले। अतएव निष्ठुर मत हो जाना, अस्वीकार मत कर देना, मैं तुम से उस थोड़ी सी शान्ति की भिक्षा मांगती हूँ जो केवल तुम्हीं दे सकते हो। मुझे अपने सम्बन्ध की सारी बातों का सच्चा ब्योरा सुना दो; मैं सब जानना चाहती हूँ चाहे वे कितनी ही अमंगल क्यों न हों। कदाचित तुम्हारी आह में अपनी आह मिला कर मैं तुम्हारी व्यथा कम कर सकूँ, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि दुख बँटने पर हलका हो जाता है।

यह न कह बैठना कि मैं तुम्हें रुलाना नहीं चाहता; उद्वेग-जनक स्थान में बन्द, अनुताप में अनुरक्त स्त्रियों के आँसू को रोकना उचित नहीं। यदि तुम आनन्दप्रद, रुचिकर बातों को लिखने के अवसर की प्रतीक्षा करोगे तो तुम्हें अनन्त काल तक रुकना पड़ेगा। वैभव भूले से गुणियों का पक्ष ग्रहण करता है और ऐश्वर्य्य ऐसा अन्धा है कि इस की आशा न रखनी चाहिए कि वह उस जन-समूह से उस बुद्धिमान, वीर-पुरुष को ढूँढ निकालेगा जो शायद उसमें अकेला ही है। अतः मुझे तुरन्त पत्र लिखना और दैवी के फेर में मत पड़ो, वे अत्यन्त दुर्लभ हैं और हम विपत्तियों के इतने आदी हैं कि सुख की प्रत्याशा नहीं कर सकते। मैं सदा यही चाहूँगी, और यदि तुम्हारी कृपा हो तो

सदा मुझे यही सुखकर होगा कि जब मुझे तुम्हारा पत्र मिले तो मुझे यह ज्ञात हो कि तुम मुझे अब तक स्मरण करते हो। सेनेका (Seneca जिसके ग्रन्थों का तुम ने मुझे अध्ययन कराया था), यद्यपि 'उदासी' था, फिर भी इस प्रकार के आनन्द का अधिक अनुभव करता जान पड़ता है। लूसिलियस (Lucilius) के किसी पत्र को पाकर वह ऐसा समझता था मानो उसे वही आनन्द मिल रहा है जो उसे उस की बात-चीत में मिलता था।

हमारे वियोग के पश्चात् मैंने इसका अनुभव किया है कि हमें उन प्रिय जनों के चित्र उन के अति दूर रहने पर उससे अधिक प्रिय लगते हैं जितना कि जब वे समीप होते हैं। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि जितने ही दूर वे होते हैं उतने ही सुन्दर और उतने ही प्रतिरूप वे उन के हो जाते हैं, अथवा कम से कम हमारी कल्पना जो उनके पुनर्दर्शन की अभिलाषा के कारण उन का चित्र निरन्तर हमारे सन्मुख रखती रहती है, हमें ऐसा ही समझने पर विवश करती है। प्रेम, अद्भुत शक्ति से, उसे सजीव सा बना देता है, जो प्रिय वस्तु के लौट आते ही केवल चित्रपट और सीधा-सादा रंग दिखाई पड़ता है। मेरे कमरे में तुम्हारा चित्र है; उसके समीप होकर उसे देखने को ठहरे बिना शायद ही मैं कभी

निकलती हूँगी; पर जब तुम मेरे पास होते हो मैं कदाचित ही कभी उस पर दृष्टिपात करती हूँ। यदि किसी वस्तु का मूक प्रतिरूप—चित्र, इतना सुख दे सकता है—तो पत्र क्यों नहीं दे सकते ? उन में आत्मा हैं, वे बोल सकते हैं, उन में वह समस्त शक्ति है जो हृदय के हर्षोन्माद को प्रकट करती है, उन में हमारे भावों का ओज वर्तमान रहता है वे उन्हें उतना ही उत्तेजित कर सकते हैं जैसे हम स्वयं उपस्थित हों; उन में वाणी की सारी मधुरता है, और कभी कभी उस से अधिक निवेदन की निर्भीकता भी।

हम आपस में पत्र व्यवहार कर सकते हैं; इतना दोषरहित आनन्द हमारे लिए वर्जित नहीं है। अनवधानता से अपने इस शेष सुख को हम न खो बैठें जो शायद अकेला ही है, जिसे हमारे शत्रुओं का द्रोह हम से कभी नहीं छीन सकता। मैं समझूंगी कि तुम मेरे पति हो; तुम मुझे पत्नी जानोगे। हमारी सारी दुर्दशा के रहते भी तुम अपने पत्र में जो चाहो बन सकते हो। पत्र मेरे जैसे असहाय अभागों को सन्तोष देने ही के लिए आविष्कृत हुए थे। तुम से मिलने और अपने समीप तुम्हें रखने का सारा सुख खोकर, मैं इस अभाव की पूर्ति किसी अंश में तुम्हारे पत्रों से प्राप्त सन्तोष से करूँगी। उन में मैं तुम्हारे

अत्यन्त निर्मल विचार पढ़ूंगी; मैं उन्हें सदा अपने साथ रखूंगी, प्रति क्षण उनका चुम्बन करूँगी ; यदि तुम्हें किसी प्रकार की असूया हो सके तो वह उन प्रणयोपचारों के प्रति होने दो, जो मैं तुम्हारे पत्रों को प्रदान करूँगी और उन्हीं सपतियों के सुख के प्रति तुम्हारी ईर्षा भी हो। जिस में मुझे पत्र लिखना तुम्हें कष्टप्रद न हो, अतः सदा मुझे निश्चित होकर बिना विशेष परिश्रम के लिखना ; मैं मस्तिष्क की अपेक्षा हृदय की बातें सुनना चाहती हूँ। यदि तुम मुझे यह न बतलाओगे कि तुम मुझ से अब भी प्रेम करते हो, तो मेरा जीना कठिन होगा; परन्तु यह कहना तुम्हारे लिए इतना स्वाभाविक है कि मुझे विश्वास है कि तुम इस के प्रतिकूल बिना अपने को दुख पहुँचाये मुझ से कुछ कह भी नहीं सकते। चूँकि अपने मित्र को यह करुण वर्णन सुनाकर तुम ने हमारे शोक को जगा दिया है, अतः उचित यही है कि अपने एक-रस-प्रेम का प्रमाण देकर तुम उन्हें शान्त भी करो।

मैं तुम्हें इस कपटरहित कौशल के लिए दोषी नहीं ठहराती जिस का उपयोग तुम ने किसी व्यक्ति को धैर्य्य देने के निमित्त उस की विपत्ति को दूसरे की उस से कहीं अधिक विपत्ति से तुलना करने में किया है। उदारता ऐसे पवित्र उपायों को ढूंढ

निकालने में बड़ी चतुर है, और उनके प्रयोग पर प्रशंसा के पात्र है। क्या तुम पर तुम्हारे मित्र के अतिरिक्त हमारा कुछ हक नहीं है—क्या कभी तुम्हारी आपस की मित्रता इतनी गाढ़ी थी ? हम तुम्हारी धर्मबहिन कही जाती हैं; हम अपने को तुम्हारा शिशु समझती हैं, और यदि अन्य किसी ऐसे शब्द की कल्पना सम्भव हो सके जिस से परस्पर की उपकृति, घनिष्ठता, और विशेष प्रेम-भाव की व्यंजना हो सके, तो हम उसी का प्रयोग करें। यदि हम इतनी कृतघ्न हो जाँय कि तुम्हारे प्रति अपनी सच्ची स्वीकृति भी स्वीकार न करें तो यह गिर्जा, यह वेदी और ये दीवालें, हमारी मौनता पर हमें कोसेंगी और हमारे स्थान पर उसे चिल्लाकर कहेंगी। परन्तु उनके भरोसे न छोड़कर, यह कहना मेरे लिए आनन्द का विषय होगा कि इस संस्था के तुम जन्मदाता हो, और सम्पूर्णरूप से यह तुम्हारी कृति है। तुम ने यहाँ रह कर ऐसे स्थान को पवित्र और प्रसिद्ध कर दिया है, जो इस के पूर्व बटपारी और हत्या के लिए बदनाम था। तुम ने अच्चरशः चोरों के अड्डे को आराधना-भवन बनाया। ये मठ सार्वजनिक दान के ऋणी नहीं हैं; हमारी दीवालें पूँजीपतियों के सूदखोरी से नहीं बनी हैं; और न उन की नींव अन्याययुक्त अर्थापहरण के भरोसे रखी गई है। परमात्मा, जिस की सेवा हम करते हैं, यहां केवल निष्पाप धन और भोले भाले भक्तों को ही

पाला है जिन्हें तुम ने वहां रख छोड़ा है। यह नव वाटिका जो कुछ है तुम्हारे ही कारण है, यह तुम्हारा धर्म है कि अपना सारा ध्यान इस की देख रेख और उन्नति में लगाओ, यही तुम्हारे जीवन का मुख्य व्यापार होना चाहिए। यद्यपि हमारा पवित्र त्याग, हमारे शपथ और हमारी रहन सहन हमें सब प्रलोभनों से सुरक्षित रखते हैं; यद्यपि हमारी दीवालें और फाटक सब का आना रोकते हैं तो भी यह केवल बाहरी—वृक्ष के वल्कल की रक्षा हुई, मुख्य व्याधि छिपे छिपे भीतर ही भीतर मर्मस्थान तक फैल सकती है, और अत्यन्त होनहार तरु को भी घातक हो सकती है, यदि उसकी रक्षा और देख भाल पर निरन्तर ध्यान न रखा जायगा। हम में सदाचार की 'कलम' प्रकृति और शील पर बांधी गई है, पहला परिवर्तनशील है और दूसरा दुर्बल। ईश्वर की वाटिका का लगाना कम मेहनत का काम नहीं है, परन्तु उसके लग जाने के बाद उसे ठीक रखने के लिए अधिक तन्मयता और ध्यान की आवश्यकता है। जेंटाइल (Gentiles) का पैगंबर जो बड़ा परिश्रमी था कहता है—'मैं ने लगाई थी, अपोलो (Appollos) ने सींचा था, परन्तु यह ईश्वर है जो उसे बढ़ाता है। पाल (Paul) ने महान् सन्देश का वृक्ष कोरिंथ (Corinth) वासियों के हृदय में रोपा, उसके उत्साही शिष्य अपोलो ने निरन्तर के उपदेश से उसकी रक्षा की और

परमात्मा की कृपा ने, जिस की याचना वे नित्य इस मन्दिर के हेत अपनी प्रार्थनाओं में करते थे, उन दोनों के परिश्रम को सफल किया।

हमारे प्रति तुम्हारे आचरण के लिए यही उदाहरण होना चाहिए। मुझे मालूम है कि तुम आलसी नहीं हो, पर तुम्हारा परिश्रम हमारे लिए नहीं है; तुम्हारा परिश्रम उन लोगों पर नष्ट हो रहा है जिन के विचार सर्वथा ऐहिक हैं, और तुम उन दुर्बल और धर्म के मार्ग में डगमगाते हुए लोगों को अपना हाथ बढ़ाना अस्वीकार करते हो, जो अपने सारे प्रयत्नों पर भी अपने को गिरने से कदाचित् ही बचा सकें। तुम संसार के उत्तम पदार्थों से संपन्न, ऐहिक सुखों से मुटाये हुए लोगों को उपदेश देकर—शूकर के सामने मोती फेंक रहे हो; और उन भोली भाली भेड़ों की ओर तुम ध्यान नहीं देते, जो दुर्बल हो कर भी, मरुभूमि और पहाड़ों पर तुम्हारा अनुसरण करने को तय्यार हैं। कृतघ्नों पर इतना परिश्रम व्यर्थ किया जा रहा है, परन्तु अपने शिष्यों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाता, जिन की आत्माएँ तुम्हारे उपकारों का अनुभव करतीं। इस का कारण? पर क्यों मैं तुम्हारे शिष्यों के नाम पर तुम्हारी विनती करूँ? क्या मुझे इस का भय हो सकता है कि अपने लिए तुम से कुछ

माँगू और न पाऊं ? और क्या तुम्हें मनाने के लिए मुझे अपने अतिरिक्त और किसी से कहलाना पड़ेगा ? क्या तुम्हारे लिए कोई दोष होगा ? कि तुम सेन्ट जेरोम (St. Jerome) का अनुकरण कर मुझ से शास्त्रों की चर्चा करो अथवा टरटलियन (St. Tertullian) का अनुसरण कर मुझे 'संयम' का उपदेश दो या सेंट आस्टिन (St. Austin) की भाँति 'दया' की प्रकृति मुझे समझाओ। अकेली मैं ही तुम्हारी विद्या से क्यों न लाभ उठाऊँ ? मुझे पत्र लिखोगे तो अपनी पत्नी को लिखोगे। दाम्पत्यसंबंध ने इस प्रकार का पत्र व्यवहार न्यायपूर्ण बना दिया है और जब तुम तनिक भी बदनामी के बिना मुझे संतोष दे सकते हो तब तुम क्यों न करोगे ? मैं केवल अपने व्रत ही से नहीं बंधी हूँ, वरन् मुझे अपने चचा का भी डर है। तुम्हें किस से डरने की आवश्यकता है ? तुम्हें उपकार से मुख नहीं फेरना चाहिए। यही नहीं ! तुम मुझ से मिल सकते हो, मेरे दुखड़ों को सुन सकते हो, और बिना किसी जोखिम के मेरे परिताप को देख सकते हो, तुम्हारे वचन और आँसू मेरे दुख के भार को हल्का कर सकते हैं। यदि मैं ने बुद्धिमानी से मठ में प्रवेश किया है तो मुझे भक्तिपूर्वक वहाँ रहने का उपदेश दो। मेरी सारी विपत्तियों के कारण तुम्हीं हो, मेरे समस्त सुखों के साधन भी तुम्हीं बनो।

तुम्हें अवश्य स्मरण होगा (क्योंकि प्रेमी भूल नहीं सकते)— किस आनन्द से दिन के दिन मैं ने तुम्हारे व्याख्यान सुनने में व्यतीत किये हैं। किस प्रकार तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हें पत्र लिखने के हेतु मैं ने लोगों से मिलना छोड़ दिया था; कितनी चिन्ता में मैं रहती थी जब तक मेरा पत्र तुम्हें नहीं मिल जाता था; पत्रवाहकों को ढूँढने में किस चतुराई की आवश्यकता पड़ती थी। यह ब्योरा कदाचित् तुम्हें विस्मय में डालता है, और तुम परिणाम के लिए दुखी होगे। पर मुझे अब इसकी तनिक भी लज्जा नहीं है कि तुम्हारे लिए मेरा प्रेम कितना उद्दाम था क्योंकि मैं ने इन सब से भी अधिक किया है। तुम से प्रेम करने के लिए मैं ने अपने से घृणा की है; यहाँ [illegible] में मैं अपना जीवन नष्ट करने इस लिए आई हूँ कि तुम्हें सुख और शान्ति से रहने को मिले। विषयों से सम्पूर्ण रूप से विमुख प्रेम और पुण्य ही ऐसा प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। पाप इस प्रकार का उत्साह कभी नहीं उत्पन्न करता, वह तो हर तरह इन्द्रियों के अधीन रहता है। जब हमें विषय-भोग की लालसा होती है हम सदा जीवित से प्रेम करते हैं न कि मृत से हम उन के लिए जलना छोड़ देते हैं जो हमारे लिए अब नहीं जलते। ऐसे विचार मेरे कठोर चचा के थे। वह मेरे गुणों का अनुमान मेरे जाति के दोषों से करता था, और उस ने समझा था

कि पुरुष से न कि व्यक्ति से मैं प्रेम करती हूँ। वह व्यर्थ ही अप-राधी बना। मैं तुम्हें पहले से अधिक चाहती हूँ और इस प्रकार मैं ने उससे बदला ले लिया। मैं इसी भाँति अपने हृदय के संपूर्ण प्रेम से जीवन की अन्तिम घड़ी तक तुम्हें चाहती रहूँगी। यदि, पहले तुम्हारे लिए मेरा प्रेम उतना पवित्र नहीं था, यदि उन दिनों मन और शरीर दोनों तुम से प्रेम करते थे, फिर भी मैं ने तुम से अनेक बार कहा है कि मैं तुम्हारे हृदय पर अधिकार पाकर जितना प्रसन्न हूँ उतना अन्य सुखों की प्राप्ति से नहीं। तुम में पुंसत्व ही को मैं सब से कम आदर की वस्तु समझती थी।

निश्चय, तुम्हें इस का पूर्ण विश्वास इसी से हो जायगा कि तुम से विवाह करने पर मैं कितना अनुव्रत थी, यद्यपि मुझे ज्ञात था कि 'पत्नी' पद संसार में गौरवपूर्ण और धर्मानुसार पवित्र है, फिर भी तुम्हारी 'प्रिया' बनना मुझे अधिक प्रिय था क्योंकि इस में अधिक स्वतन्त्रता थी। दाम्पत्यविधान में एक प्रकार का अनिवार्य्य बन्धन है, चाहे वे कितने ही गौरवपूर्ण क्यों न हों, उस व्यक्ति से सदा प्रेम करने को विवश होने पर मैं तय्यार न थी जो शायद मुझ से सदा प्रेम न कर सके। मैं ने 'पत्निपद' की अवहेलना की कि मैं 'प्रेयसी' होकर आनन्द से

रहूँगी; और मुझे तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ है कि तुम उस स्नेह की मधुरता को नहीं भूले हो जो अत्यन्त स्निग्धता से सदा से तुम्हें प्यार करता आया है—और अब भी तुम्हें प्यार करने की इच्छा रखता है। अपने पत्र में तुम ने ठीक ही लिखा है कि तुम उन लोकाचारों को निस्सार समझते हो जो ऐसे बन्धनों की रचना करते हैं जिन्हें मृत्यु ही काट सकती है, और जो जीवन और सुख को एक ही दुखदायी स्थिति में रखते हैं। तुम ने इस का उल्लेख नहीं किया कि कितनी बार मैं ने दृढ़ता से कहा था कि मुझे अबीलार्ड के साथ उस की प्रेमपात्री बन कर रहना दूसरे के साथ संसार की सम्राज्ञी बन कर रहने से अधिक प्रिय है। तुम्हारी आज्ञा का पालन कर मैं जितनी सुखी थी उतना संसार के सम्राट् की भार्य्या होने में मैं न होती। धन और वैभव प्रेम के लिए मोहक मन्त्र नहीं हैं। यथार्थ 'प्रेम' के कारण हम 'प्रेमिक' को वाह्याडंबरों से पृथक कर देते हैं और उस के पद, वैभव, और सम्मान को दूर कर केवल उसी को उसे समझते हैं।

यह प्रेम नहीं वरन् धन की लालसा है जो किसी नारी को निरुद्यम पति को अंगीकार करने पर विवश करती है। लालसा, न कि प्रेम ऐसे विवाहों का कारण होता है। मुझे

विश्वास है, निश्चय, उन्हें पीछे कुछ लाभ और सम्मान प्राप्त होता हो, पर मैं नहीं समझती कि यह भी मधुर मिलन के सुखों का अनुभव करने तथा उन अज्ञात और अलौकिक आनन्दों के सुखप्राप्ति का कोई साधन है, जो बहुत दिन के बिछुड़े हुए हृदयों के पुनर्मिलन पर प्राप्त होता है। ये परिणय के 'शहीद' हमेशा उस धन के लिए दुखी रहते हैं जो उन के विचार से उन के हाथों से निकल गया। पत्नी अन्य पतियों को अधिक धनवान समझती हैं, पति अन्य पत्नियों को अधिक रूपवान। उन की स्वार्थ प्रेरित प्रतिज्ञाएँ उन के खेद का कारण होती हैं, और खेद से घृणा उत्पन्न होती है। वे शीघ्र ही एक दूसरे से अलग हो जाते हैं—अथवा विच्छेद की अभिलाषा करते हैं। यह अशान्त, सन्तापकारी धन-लिप्सा उन्हें इस का दण्ड देती है कि वे प्रेम से प्रेम को छोड़ अन्य सुखों की आकांक्षा रखते हैं।

इस प्रकार यदि वस्तुतः कुछ सुख कहा जा सकता है, तो मेरी धारणा है कि वह ऐसे व्यक्तियों की मित्रता ही हो सकती है जो एक दूसरे को पूर्ण स्वतन्त्रता से प्यार करते हैं, जो हृदय के अव्यक्त प्रेरणा से मित्र बने हैं, और जो एक दूसरे के गुणों से संतुष्ट हैं। उन का हृदय स्नेह से सम्पूर्ण है और उस में अन्य

किसी वृत्ति के लिए स्थान नहीं है ; वे संतुष्ट रहते हैं और शान्ति का अनुभव करते हैं ।

यदि मैं विश्वास कर सकती कि तुम मेरे गुणों के उतने ही क़ायल हो जितना मैं तुम्हारे, तो मैं कह सकती कि एक समय था जब हमारी जोड़ी ऐसी ही थी । आह ! यह कैसे सम्भव था कि मैं तुम्हारे मनोगत भावों से भली भाँति अवगत न रहूँ ? यदि मुझे कभी सन्देह भी होता तो तुम्हारी लोकप्रतिष्ठा मुझे तुम्हारे पक्ष में निर्णय करने पर बाध्य करती । कौन सा देश, कौन सा नगर तुम्हारे दर्शन का इच्छुक नहीं था ? तुम ने क्या कभी बिना लोगों की दृष्टि और हृदय को अपनी ओर आकृष्ट किये एकान्तवास लिया ? क्या तुम्हारा दर्शन पाकर लोग अपने को धन्य नहीं समझते थे ? महिलाएँ भी, लौकिक शिष्टाचार को तोड़ कर तुम्हारे प्रति श्रद्धा के अतिरिक्त अन्य भाव का प्रदर्शन करती थीं । मैं कई एक को जानती हूँ जो अपने पति की बड़ी प्रशंसा किया करती थीं, फिर भी वे मुझ से मेरे सुखों के कारण ईर्षा करती थीं । तुम्हारी अपेक्षा किस भांति होती ? तुम्हारी कीर्ति हमारी जाति के अभिमान को आकृष्ट करती थी, तुम्हारी मुद्रा, तुम्हारा आचरण, तुम्हारी आँखों की वह ज्योति जो मानसिक स्फूर्ति प्रदर्शन करती थी, तुम्हारा मधुर, सरल सम्भाषण जो तुम्हारे प्रत्येक

कथन रुचिकर बनाता था—सारांश यह कि सभी तुम्हारी वकालत करते थे। तुम उन विद्वानों से भिन्न थे जो अपनी सारी विद्वत्ता के होते हुए भी साधारण सम्भाषण में असफल रहते हैं, और जो अपनी सारी बुद्धि से भी अपने से अल्प बुद्धि वाली स्त्री को भी अपनाने में असमर्थ रहते हैं।

किस सुगमता से तुम कविता करते थे! और फिर भी वे क्षुद्र कल्पनाएँ, जो तुम्हारे लिए केवल विनोद थीं, अब भी सहृदयों के मनोरञ्जन और आनन्द की सामग्री हैं। छोटा से छोटा गीत, मेरे हेतु रचा हुआ साधारण से साधारण शब्दचित्रण, सहस्रों ऐसे गुणों से परिपूर्ण है जो उसे तब तक के लिए चिर-स्थायी बनाते हैं जब तक संसार में प्रेमियों का अस्तित्व है। इस प्रकार मेरे उपलक्ष में लिखे हुए वे गीत अन्य महिलाओं की प्रशंसा में गाये जायँगे और वे कोमल, अकृत्रिम उक्तियां, जो हमारा प्रेम प्रकट करती थीं अब दूसरों को अधिक लाभ के साथ प्रेम-प्रकाशन में सहायक होंगी।

तुम्हारे इस दाक्षिण्य ने मेरी कितनी प्रतिस्पर्धा कराई? कितनी महिलाएँ उस पर अपना अधिकार जमाने लगीं। यह उन के आत्मानुराग का फल था। कितनों को मैं ने उस समय आह भर

कर कहते सुना कि वे तुम से प्रेम करती हैं जब कि, तुम्हारे साधारण भेंट के पश्चात संयोग से, किसी ने उन को तुम्हारे काव्य की 'नायिका' की पदवी दे डाली। औरों ने निराशा और ईर्षा से मुझे ताना दिया कि मुझ में रूप नहीं है वरन् मुझ पर तुम्हारी कृपा मात्र है, और मैं उन से केवल इस बात में बढ़ी चढ़ी हूँ कि मैं तुम्हारी प्रियतमा हूँ। क्या तुम विश्वास करोगे यदि मैं कहूँ कि स्त्री होते हुए भी मैं अपने को इस लिए विशेष कर सुखी समझती थी कि मेरा प्रेमी मुझे अनुग्रह कर सुन्दर समझता है; और मैं ऐसे व्यक्ति द्वारा की हुई अपनी प्रसंशा पर मन ही मन प्रसन्न होती थी जो, जब चाहे अपनी प्रियतमा को देवी बना सकता है। केवल तुम्हारी कीर्त्ति पर रीझ कर मैं ने प्रसन्नता से वे सारे पद्य पढ़े जो तुमने मेरी प्रसंशा में लिखे थे, और अपनी अयोग्यता सोचे बिना ही मैं समझ बैठी कि वास्तव में वैसी ही हूँ जैसा तुम ने वर्णन किया है, और यह कि मुझे विश्वास होना चाहिए कि मैं ने तुम्हें प्रसन्न किया है।

परन्तु, हा! कहाँ हैं वे आनन्द के दिवस? मुझे अब अपने प्रियतम के लिए रोना पड़ता है, मेरे सारे सुखों के स्थान पर केवल यही दुखदायी स्मृति रह गई है कि—वे कभी थे। सुन लो, मेरे प्रतिद्वन्द्वियो! जिन्हों ने ईर्षा की आंखों से मेरे सुखों को देखा था

कि वही जिस के लिए तुम मेरी ईर्षा करती थीं अब हमारा नहीं रहा। मैं उस से प्रेम करती थी; मेरा प्रेम उस का अपराध था और वही उस के दण्ड का कारण हुआ। मेरी सुन्दरता पर वह कभी मोहित हुआ था, और एक दूसरे से सन्तुष्ट होकर हम ने शान्ति और सुख में आनन्द के दिन व्यतीत किये थे। यदि यही अपराध था, तो इस अपराध का मैं अब भी समर्थन करती हूँ और मुझे खेद केवल इसका है कि अपनी आत्मा के विरुद्ध मुझे अब निर्दोषी बनना पड़ता है। पर मैं क्या कह रही हूँ? मेरे दुर्भाग्य से मेरे सम्बन्धी दुष्ट थे उन की ईर्षा ने हमारी शान्ति हर ली; यदि वे विवेक से काम लेते तो इस समय मैं पति के साथ सुखी होती। ओफ़! कैसे क्रूर वे थे? उन के प्रचण्ड क्रोध ने एक हत्यारे को सुप्तावस्था में तुम पर आक्रमण कर ने पर उभारा! कहाँ थी मैं—कहाँ थी तुम्हारी हिलोज उस समय? अपने प्रियतम की रक्षा में मुझे कितना आनन्द मिलता; अपनी जान पर खेल कर मैं तुम्हें बचाती। विषयासक्ति की पराकाष्ठा ने मुझे कहाँ भगा दिया था? यहीं पर प्रेम को धक्का पहुँचता है और लज्जा मेरा मुँह बन्द कर देती है।

परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरी दीक्षा लेते ही मेरे प्रति तुम उदासीन क्यों होने लगे? तुम जानते हो कि केवल

तुम्हारे अपमान ने मुझे उस की ओर प्रेरित किया है और इस हेतु मैं ने अपनी नहीं वरन् तुम्हारी स्वीकृति ही है। मुझे बतलाओ, या मुझे अपने विचार प्रकट करने की आज्ञा दो। क्या केवल विषयानन्द की लालच से तुम मेरी ओर आकृष्ट नहीं हुए थे ? और क्या मेरे भोलेपन ने तुम्हें सब प्रकार सन्तुष्ट कर तुम्हारी इच्छाओं की निवृत्ति नहीं की थी ? अभागी हिलोज़ ! तुम सुख देने वाली थी जब तुम सुख से भागती थी, तुम आदर योग्य थी जब तुम में उस की अवहेलना करने की शक्ति थी; पर जब से मेरा हृदय द्रवीभूत प्रेम के होकर वशीभूत हो गया है, जब से तू ने स्वार्थ त्याग कर एक निष्ठा स्वीकार की है तब से तेरी उपेक्षा होती है—तू भुला दी जाती है ! अपने कटु अनुभव से मुझे विश्वास हो गया है कि अपने ऊपर अधिक उपकार करने वाले के प्रति हमारी उदासीनता स्वाभाविक है और यह कि असाधारण उदारता ही अवज्ञा उत्पन्न करती है, न कि कृतज्ञता। विजयी से आदर पाने के लिए मेरे हृदय ने बड़ी शीघ्रता से समर्पण कर दिया; तुम ने उसे निःपरिश्रम पाकर लापरवाही से ठुकरा दिया। यद्यपि तुम अकृतज्ञ हो पर मैं तो न बनूंगी, यद्यपि मुझे कोई अभिलाषा न रखनी चाहिए फिर भी मैं मन ही मन यही चाहती हूँ कि तुम मुझ से प्रेम करो। जब मैं कठोर शपथ ले रही थी उस समय मेरे पास तुम्हारे अन्तिम पत्र वर्तमान थे जिन में

तुमने इस बात पर जोर दिया था कि तुम सम्पूर्ण रूप से मेरे रहोगे, और मुझ से प्रेम किये बिना न रहोगे। अतः मैं ने तुम्हें अपने को समर्पण कर दिया है; मेरा हृदय तुम्हारे पास है और तुम्हारा मेरे; उसे फिर वापस न माँगना। तुम्हे सदा स्मरण रखना चाहिए कि मेरे प्रेम पर तुम्हारा पूर्ण अधिकार है और तुम उस से किसी प्रकार मुक्त नहीं हो सकते।

. . . .

हाय! इस प्रकार बकवाद करना कैसी मूर्खता है? वहाँ मुझे केवल देवताओं के चिह्न देख पड़ते हैं पर मैं मनुष्य के अतिरिक्त किसी की बात ही नहीं करती। निष्ठुर! यह सब तुम्हारे कारण। क्या तुम्हें चाहिए था कि सहसा मुझसे प्रेम करना छोड़ दो! कुछ दिनों तक मुझे धोखे में न रख कर एकाएक तुम ने मुझे क्यों त्याग दिया? यदि तुम मुझे तनिक भी अपने शिथिल होते हुए प्रेम की खबर दी होती तो मुझे यह विश्वासघात बुरा न लगता। पर व्यर्थ मैं इस की आशा करती हूँ कि तुम 'एक रस' हो सकते हो; तुम ने इस के विरुद्ध अभी तक कोई बात उठा नहीं रखी। तुम्हें देखने की मेरी बड़ी इच्छा है, पर यदि यह असम्भव हो तो मैं तुम्हारी दो एक पंक्तियों से ही सन्तोष करूंगी। क्या उस के लिए भी यह दुष्कर है जिसे पत्र व्यवहार इतना प्रिय है। तुम से उन पत्रों के लिए मैं नहीं कहती जो तुम बड़ी योग्यता

व्यय कर के अपने यश के निमित्त लिखते हो; मैं तुम से उन पत्रों की अभिलाषा करती हूँ जो हृदय लिखाता है और जिसे लेखनी शीघ्रता से लिपि बद्ध कर ने में असमर्थ होती है। तुम्हारे अनुशासन और मठ में रहने की प्रतिज्ञा करते समय किन किन आशाओं से अपने को धोखा दिया था कि तुम सर्वथा मेरे रहोगे ? क्योंकि शपथ लेते समय मैं ने केवल तुम्हारी होने की शपथ ली थी, और तुम्हारी इच्छानुसार एकान्तवास स्वीकार करने पर विवश हुई थी। केवल मृत्यु ही मुझ से वह स्थान छुड़ा सकती है जहाँ तुम ने मुझे रख छोड़ा है। पश्चात्, मेरी अस्थियाँ भी यहाँ रह कर तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगी और अन्त समय तक मेरी श्रद्धा और भक्ति का प्रमाण देंगी।

मैं क्यों तुम से अपने भेष का रहस्य गुप्त रखूँ ? तुम्हें ज्ञात है कि उत्साह या भक्ति के कारण मैं यहाँ नहीं आई। तुम्हारी आत्मा इस की सच्ची साक्षी है। फिर भी मैं यहाँ रहती हूँ, यहीं मैं रहूँगी, यहां मेरे अभागे प्रेम और निठुर सम्बन्धियों ने मुझे रहने पर बाध्य किया है। परन्तु यदि तुम मुझ से अपना नाता तोड़ते हो, यदि मैं तुम्हारे प्रेम से वंचित होती हूँ, तो मुझे इस कारागार से लाभ ? किस अन्य लाभ की मैं आशा कर सकती हूँ ? हमारे प्रेम के दुखप्रद परिणाम और तुम्हारे अपमान

ने मुझे अवश्य तपस्वी बनाया है, परन्तु मुझे विगत के लिए पश्चात्ताप नहीं है। मैं व्यर्थ इस प्रकार प्रयत्न और परिश्रम करती हूँ। देव दासियों में मैं ही अकेली मनुष्य समर्पित हूँ; (ईसाई) धर्म के उत्साही अनुयायियों में अकेली मैं मानव सुलभ वासनाओं की दासी हूँ; धार्मिक संस्था की अधिष्ठातृ होकर केवल मैं अबीलार्ड की अनुगामिनी हूँ। मैं भी कैसी माया-विनी हूँ ? परमात्मन् मुझे सुबुद्धि दे ! क्योंकि मुझे पता नहीं कि नैराश्य या तेरी कृपा मेरे मुँह से बरबस ये शब्द कहलवा रहे हैं। मैं स्वीकार करती हूँ—मैं पापिष्ठा हूँ, और वह भी ऐसी जो अपने दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप न कर अपने प्रेमी के लिए रोती है, जो अपने अपराधों का प्रतीकार न कर उन्हें और बढ़ाने की इच्छा करती है; और जो, मेरी जैसी स्थिति के अनुपयुक्त दुर्बलता से अपने बीते सुखों को उस समयभी स्मरण कर के प्रसन्न होती है, जब उन का पुनरुद्धार असम्भव है।

शिव ! शिव ! यह सब क्या ! मैं अपने अपराधों के लिए अपनी भर्त्सना करती हूँ, तुम्हें मैं दोषी ठहराती हूँ, और व्यर्थ में। यद्यपि मैं सन्यासिनी हूँ, तुम्हीं देखो, तुम ने मुझे किस उथल पुथल में डाल दिया है। धर्म के लिए अपनी रुचि के विरुद्ध युद्ध करना कितना कठिन है। मुझे मालूम है कि इस

व्रत ने कितना उत्तरदायित्व मेरे ऊपर डाल रखा है, परन्तु मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मेरे हृदय पर मेरे पूर्व स्नेह का कितना अधिकार है। मैं मनोविकारों से पराजित हूँ, प्रेम मेरे मन को विह्वल तथा मेरे संकल्प को छिन्न भिन्न कर रहा है। क्षण भर के लिए मैं पवित्र भावनाओं के आधीन हो जाती हूँ, दूसरे क्षण विषय सुख की लालसा के सन्मुख मुझे सिर झुकाना पड़ता है। आज तुम्हें सब बतलाती हूँ जो मैं पहले कभी न कहती; मैं ने निश्चय किया था कि तुम से अब प्रेम न करूँगी, मैं ने सोच लिया था कि मैं ने शपथ ली है, संन्यास लिया है और मृततुल्य हूँ पर एकाएक मेरे हृदय के अन्तस्तल से ऐसे राग की उद्भावना होती है जो मेरे सारे विचारों को पछाड़ देती है और मेरे विवेक तथा धर्म-निष्ठा पर पानी फेर देती है। तुम मेरे हृदय कक्ष में ऐसा अधिकार जमाये बैठे हो कि तुम पर आक्रमण करने का उपाय ही नहीं सूझता। मैं उन बंधनों को तोड़ने का प्रयत्न करती हूँ जिन से मैं तुम से बंधी हूँ, परन्तु मेरे सारे प्रयत्न उन्हें केवल और दृढ़ करने में समर्थ होते हैं। ओफ़! दया कर इस अभागिनी की इच्छाओं को—अपने, को—और यदि संभव हो तो तुम्हें भी परित्याग करने में सहायता दो। यदि तुम मेरे प्रेमी हो, यदि तुम धर्मपिता हो, तो प्रेमिका की सहायता करो, धर्मपुत्री को सान्त्वना दो। ये सम्बन्ध अवश्य तुम्हें

द्रवित करेंगे; दया करो अथवा प्रेम। यदि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार न करोगे तो मैं व्यर्थ की विडंबना न कर निष्कपट धर्म पर रहूँगी। मैं तुम्हें पाकर उस पतित पावन की शरण जाने को तय्यार हूँ जो हमें पवित्र करने के लिए सब कुछ करता है, जो अपनी अनुग्रह से हमारे दोषों और पापों को पवित्र बना देता है, और जो अपनी अगाध क्षमा से हमें अपनी इच्छाओं के विरुद्ध ले जाता और धीरे धीरे हमें अपनी उदारता का प्रत्यक्षीकरण कराता है, जिसे हम पहले नहीं देख पाते थे।

मैं यहीं अपना पत्र समाप्त करना चाहती थी, पर जब मैं तुम्हारी शिकायत करती हूँ मैं अवश्य अपने हृदय का बोझ हलका करूँगी और अपने मन की सारी ईर्षा और ग्लानि तुम से कहूँगी। निश्चय उस समय यह मुझे कुछ अनुचित सा प्रतीत हुआ था कि जब हम दोनों ने साथ धर्मदीक्षा लेना निश्चय किया था, तब तुम मुझी को पहले पहल उसे स्वीकार करने पर क्यों विवश करो? मैं ने सोचा 'क्या अबीलार्ड को इस बात का संदेह है कि मैं अपनी प्रतिज्ञा से विचलित हो जाऊँगी? यदि मेरी जाति तथा मेरी युवावस्था के कारण तुम्हें यह शंका हुई थी, तो क्या मेरा आचरण, मेरी भक्ति, और मेरा यह हृदय, जिसे तुम्हें भली भाँति जानना चाहिए था, इन अनुदार शंकाओं का

परिहार नहीं कर सकते थे ? इस अविश्वास ने मुझे चोट पहुँचाई ; मैं ने सोचा 'एक समय वह था जब वे मेरी साधारण बात पर विश्वास करते थे और क्या वही अब मुझ से अपने ऊपर भक्ति कराने के लिए मुझ से शपथ लेना चाहते हैं ? अपने सारे जीवन में मैं ने कब उन्हें संदेह करने का अवसर दिया है ?' उन के इशारों पर चलने वाली मैं, क्या धर्मपथ पर उन का अनुसरण न करूँगी ? जिसे संतुष्ट करने के लिए मैं ने सुखों की भी चेरी होना अस्वीकार नहीं किया, क्या वे ही सोचते हैं कि उन की इच्छानुसार मैं श्रेयस्कर बलिदान के लिए तय्यार न हूँगी ? क्या पाप, साधुस्वभाव को ऐसा लुभाता है कि पाप का एक प्याला पीकर हम कठिनता से पुण्य का घड़ा स्वीकार करते हैं ?' अथवा क्या तुम अपने को भलाई से बुराई का पाठ पढ़ाने में अधिक निपुण समझते थे और मुझे क्या पहले की अपेक्षा दूसरे को सीखने में अधिक तत्पर ? नहीं ; यह शंका हम दोनों के लिए हानिकर है ; जब तुम भलाई की विशेषताओं का प्रदर्शन करते हो तो वह इतना सुन्दर बन जाती है कि उस को अस्वीकार करना असम्भव है, और जब बुराई के दुर्गुणों को तुम दिखलाते हो तो उस का रूप इतना बीभत्स बन जाता है कि उस से घृणा न करना कठिन हो जाता है। इतना ही नहीं, तुम्हारी इच्छानुसार कोई भी वस्तु मुझे सुन्दर जँचने लगती है,

और तुम्हारे पास रहते मुझे कुछ भी भद्दी नहीं मालूम पड़ती। तुम्हारे आश्रय के बिना अकेले मैं असहाय हूँ, अतः यह तुम पर निर्भर है कि तुम इच्छानुसार मुझे जो चाहो बनाओ। मैं परमात्मा से यही चाहती थी कि मुझ पर तुम्हारा इतना अधिकार न होता! यदि तुम्हें कुछ भी डरने का कारण होता तुम मेरी कम उपेक्षा करते। तुम्हें डर काहे का है? मैं ने तुम्हारे लिए बहुत कुछ किया, और अब मुझे तुम्हारी अकृतज्ञता पर प्रसन्न होने के सिवा और करना ही क्या है? जब हम सुख से साथ रहते थे तुम्हें इस का संदेह हो सकता था कि सुख लालसा या प्रेम के कारण मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ, परन्तु इस मठ ने, जहां से मैं तुम्हें पत्र लिख रही हूँ, निस्संदेह तुम्हारी शंका मिटा दी होगी। यहाँ रह कर भी मैं तुम से उतना ही प्रेम करती हूँ जितना संसार में रहकर करती थी। यदि मुझे ऐहिक सुख की लालसा होती तो क्या उस की प्राप्ति का उपाय मैं न ढूँढ निकालती? मेरी आयु बाईस बसंतों से अधिक न थी, यदि अबीलार्ड न था तो और पुरुष बहुतेरे थे। पर मैं ने ब्रह्मचर्य्य व्रत लेकर अपने को मठ में दफ़न कर दिया, और सांसारिक जीवन पर उस अवस्था में विजय प्राप्त की, जिस में उस का सम्पूर्ण आनन्द उपभोग करने का पूर्ण सामर्थ्य था। यह शेष नश्वर सौंदर्य्य, ये विरह की रातें और ये कठोर दिवस मैं तुम्हें अर्पण करती हूँ; और इस लिए कि तुम

उन्हें स्वीकार नहीं कर सकते, मैं परमात्मा को अर्पण करने के निमित्त उन्हें तुम से वापस लेती हूँ, और अन्त में कष्ट से अपने हृदय, अपने जीवन, तथा अपने प्राणों की दूसरी आहुति देती हूँ।

मैं अनुभव करती हूँ कि मैं ने इस विषय पर तुम्हारा अधिक समय लिया; मुझे तुम्हीं से तुम्हारी विपत्ति और अपने कष्टों के विषय में अधिक कहना उचित न था। हम अपने सुकृत्यों की स्वयं प्रशंसा कर उन के गौरव को नष्ट कर देते हैं। यद्यपि यह सच है, फिर भी कभी कभी हम विनय पूर्वक अपनी प्रशंसा कर सकते हैं; जब कभी हमें उन लोगों से काम पड़ता है जिन्हें कृतघ्नता ने जड़ बना दिया है उस समय हम अपने उपकारों को अधिक बखान नहीं कर सकते। यदि तुम भी इन्हीं में से हो तो यह उक्ति तुम्हें खटकेगी। अपनी चंचलचित्तता के कारण अभी तक मैं तुम से प्रेम करती हूँ, पर उस के बदले में मैं कुछ चाहती नहीं। मैं ने सांसारिक जीवन परित्याग किया, मैं सब कुछ से अपने को मुक्त किया, पर मैं देखती हूँ कि अबीलार्ड को न तो मैं ने छोड़ा है और न छोड़ सकती हूँ। यद्यपि मैं ने अपने प्रियतम को खो दिया है परन्तु अपने स्नेह को अब भी मैं अपने पास रखती हूँ। अरी प्रतिज्ञाएँ! अरे मठ! तुम्हारे निष्ठुर

अनुशासन में रहकर मैं ने अपनी मनुष्यता नहीं खो दी है ! तुम ने मेरा परिधान परिवर्त्तन कर मुझे पाषाण नहीं बना दिया। कारावास से मेरा हृदय कठोर नहीं हो गया ; मुझ में अभी तक अपनी 'लगन' के अनुभव करने की शक्ति है यद्यपि, हा ! मुझे ऐसा न होना चाहिए ! अपनी आज्ञाओं को क्षति न पहुँचा कर अपने कठोर नियमों का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करने के लिए एक प्रेमी को मुझे उपदेश देने की आज्ञा दो। यदि उस का सहारा मुझे मिलेगा तो तुम्हारा उत्तर दायित्व हलका हो जायगा, और तुम्हारे विधान अधिक रुचिकर हो जायँगे यदि वह मुझे उन का लाभ समझायगा। एकान्तवास तथा निर्जनता तब कठोर न जँचेगी यदि मुझे ज्ञात हो जायगा कि उस की स्मृति में मेरे लिए अभी स्थान है। मेरे जैसा स्नेहशील हृदय इतने शीघ्र उदासीन नहीं हो सकता। परमशान्ति प्राप्त करने के पूर्व हम बहुत समय तक प्रेम और घृणा के बीच डाँवाडोल रहते हैं और हम सदा किसी निर्मल आशा से अपने को प्रसन्न रखते हैं कि हम बिल्कुल ही भुला नहीं दिये जायँगे।

देखो ! अबीलार्ड मैं अपने बन्धनों की शपथ दिला कर तुम से कहती हूँ कि तुम उन के भार को कम कर दो, और मेरी इच्छानुसार उन्हें मेरे मन का बना दो। मुझे परमात्मा के प्रेम

का पाठ पढ़ाओ; तुम ने मेरा परित्याग किया है अतः मैं उसी से नाता जोड़ कर प्रसन्न हूँगी। मेरा हृदय उसी पद की उपासना करता है; दूसरे को वह घृणा की दृष्टि से देखता है। मुझे बतलाओ किस प्रकार ईश्वर के प्रति यह प्रेम पुष्ट होता है, कैसे इस का प्रयोग होता है, और किस प्रकार यह पवित्र करता है। जब हम संसार सागर में डूबते उतराते थे उस समय सिवा उन पद्यों के हम और कुछ भी न सुन सकते थे, जो हमारे सुख और आनन्द की घोषणा करते थे। अब परमात्मा की कृपा के घाट लगने पर क्या तुम्हें यह उचित नहीं है कि तुम इस नवीन आनन्द की व्याख्या करो, और मुझे उन बातों की शिक्षा दो जो उसे उन्नत और उच्च बनावे? मेरी इस अवस्था में भी तुम मुझ पर वही उदारता दिखलाओ जो तुम ने उस समय दिखाई थी जब मैं सांसारिक थी। अपने स्नेह की सजीवता न बदल कर हम उस का उद्देश बदल दें; सरस गीतों का गान छोड़ हम 'भजन' गायें; आओ हम अपना चित्त परमात्मा में लगावें और उस की महिमा को छोड़ अन्य किसी सुख का अनुभव न करें!

यह सोच कर मैं तुम से इस की आशा करती हूँ कि तुम मुझे 'नहीं' न करोगे। परमात्मा को अपने बनाये महापुरुषों के हृदयों पर अद्भुत अधिकार है। उस की जब इच्छा होती है वह उन्हें विवश

कर अपने वशमें कर लेता है, और उन्हें सिवा अपनी महिमा की चर्चा और गुणगान के और कुछ नहीं करने देता। जब तक उस ईश्वरीय अनुग्रह का अवसर न आवे तब तक मेरा ध्यान रखना—मुझे भूल न जाना—मेरे स्नेह, मेरी भक्ति और मेरी एक निष्ठा को प्रेमिका समझ कर मुझ से प्रेम करना, अपनी शिष्या, अपनी धर्मभगिनी, अपनी पत्नी समझ कर मेरी शुभ की कामना करना! स्मरण रखना—मैं अभी तक तुम से प्रेम करती हूँ, यद्यपि उस के विरुद्ध मैं निरन्तर प्रयत्न करती हूँ। यह कैसी भयानक बात है! डर से मैं काँप रही हूँ, मेरा हृदय मेरे विरुद्ध विद्रोह कर रहा है। सारा पत्र मेरे आँसुओं से धुला जाता है। अच्छा विदा! यदि तुम कहते हो तो सदा के लिए—ईश्वर मेरा सहायक हो!

तीसरा पत्र

अबीलार्ड का हेलोज़ के नाम

यदि मैं समझता कि तुम्हें न लिखा हुआ पत्र तुम्हारे हाथ पड़ेगा, तो मैं अधिक सचेत रहता कि उस में कोई ऐसी बात न लिख दूं जो हमारे बीते दुर्भाग्य का तुम्हें स्मरण दिला सके। मैं ने निर्भीकता से अपने विगत अपमानों का वर्णन अपने मित्र से किया था, जिस में वह अपने कष्टों का कम सोच करे। यदि इस सद्भाव-प्रेरित कृति से तुम्हें दुख पहुँचा है, तो मैं तुम्हारे उन आँसुओं का प्रतीकार करना चाहता हूँ जो मेरे दुखप्रद वर्णन के कारण तुम्हें गिराने पड़े हैं। तुम्हारे दुख को मैं अपने दुख में मिलाना चाहता हूँ, अपना हृदय तुम्हारे सामने खोल कर रखने की मैं इच्छा करता हूँ---सारांश यह कि मैं तुम्हारे सन्मुख अपनी सारी कठिनाई और अपने मन का भेद प्रकट करना चाहता हूँ, जो मेरे मिथ्याभिमान ने अभी तक शेष संसार से छिपा रखने पर मुझे विवश कर रखा था, और जिसे तुम अब बरबस मुझ से कहलवा रही हो, यद्यपि मैं ने इस के विरुद्ध निश्चय कर रखा था।

अपने ऊपर आई हुई विपत्तियों से तथा अपनी अवस्था किसी प्रकार की परिवर्त्तन की आशा न करते हुए एक प्रकार से यह सच है, कि वे अच्छे दिन अब नहीं रहे, जिन्हों ने हमें धोका दिया था; और अब सिवा इस के कुछ नहीं रहा कि हम कष्टकर प्रयत्नों द्वारा अपने मन से उन के सारे चिह्न और स्मृति मिटावें। मैं ने धर्म और दर्शन में अपने अपमानों का प्रतीकार पाने की इच्छा की; मैं ने प्रेम से बचने के हेतु शरण ढूँढ निकाला। अपने हृदय को कठोर बनाने के लिए मुझे शपथ ले कर व्यर्थ प्रयत्न करना पड़ा। पर मिला क्या मुझे इन सब से? यदि मेरी इच्छाएँ प्रतिबंधन में हैं मेरे विचार अब भी स्वतन्त्र विचरण करते हैं। मैं नित्य प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें भूल जाऊँगा, पर फिर भी मैं बिना तुम्हें प्यार किये अपना ध्यान भी नहीं कर सकता। मेरे प्रेम में उन विचारों से बिल्कुल कमी नहीं पड़ी जो मैं उस से बचने के लिए करता हूँ। शान्ति, जो मेरे चारों ओर विराजती है मुझे उस के प्रभाव का और भी अनुभव कराती है, और जब मैं बेकार रहता हूँ, मेरे सारे अवकाश का यही व्यपार हो जाता है। अन्त में अनेक व्यर्थ प्रयत्नों के पश्चात् मुझे विश्वास होने लगता है कि इन से छुटकारा पाने का प्रयत्न करना और भी दुष्कर है; और तुम्हें छोड़ और सब से इसे

गुप्त रखने ही में यथेष्ट बुद्धिमानी है कि मैं कितना व्याकुल और निस्सहाय हूँ ।

तुम से शत्रु की भांति बचने के लिए मैं तुम से दूर चला आया; फिर भी निरन्तर मन में तुम्हें ढूँढा करता हूँ, तुम्हारी मधुर मूर्ति की कल्पना किया करता हूँ और नाना चिन्ताओं में अपना खण्डन करता और अपने को धोखा देता रहता हूँ । मैं तुम से घृणा करता हूँ ! तुम्हें प्यार करता हूँ ! लज्जा मुझे चारों ओर से दबा रही है । मुझे संकोच होता है कि इस समय तुम्हारी अपेक्षा मैं अधिक उदासीनता प्रकट करता हूँ, फिर भी मैं अपनी व्याकुलता देखकर लज्जित हूँ । हम में कितनी दुर्बलता है यदि हम धर्म पथ पर दृढ़ नहीं रहते ? क्या हम में इतना कम साहस होगा, क्या वही दो स्वामियों की सेवा करने की दुविधा मुझे भी व्याकुल करेगी जो तुम्हें कर रही है ? तुम मेरी व्याकुलता देख रही हो, किस प्रकार मैं अपने को दोषी ठहराता हूँ और कैसे मैं कष्ट पा रहा हूँ । धर्म मुझे पुण्य करने की आज्ञा देता है क्यों कि प्रेम से मुझे किसी वस्तु की आशा नहीं है । परन्तु प्रेम अभी तक मेरी कल्पनाओं पर शासन करता है और विगत सुखों पर आनन्दित होता है । स्मृति प्रेमिका के स्थान की पूर्त्ति करती है । धर्म और भक्ति सदा

विविक्ति के फल नहीं होते; मरुभूमि में भी, जहाँ सुख की कल्पना भी नहीं की जा सकती, हम उस से प्रेम करते हैं जिस से करना उचित नहीं है। निर्जनता से उत्तेजित होकर इच्छाएँ इस सुनसान और मृत्यु के स्थान में व्याप्त हो जाती हैं; शायद ही कभी यहां कर्तव्य का पालन ठिकाने से होता है और केवल परमात्मा ही की उपासना और भक्ति की जाती हो। यदि यह मुझे पहले मालूम होता तो मैं तुम्हें अच्छी सलाह देता। मुझे तुम अपना गुरु बतलाती हो; यह सच है कि तुम मेरे सुपुर्द की गई थी। मैं ने तुम्हें देखा, मैं ने तुम्हें व्यर्थ की विद्या पढ़ाने का निश्चय किया; उस ने तुम्हारा सतीत्व ले लिया और मेरी स्वतन्त्रता अपहरण की। तुम्हारा चचा, जो तुम्हें चाहता था, मेरा शत्रु बन गया और मुझ से उस ने अपना बदला लिया। यदि इस समय अपनी इच्छाओं को सन्तुष्ट करने की शक्ति को खो कर मैं तुम्हें प्यार करने की शक्ति भी खो बैठता, तो मुझे संतोष होता। मेरे शत्रुओं ने मुझे इस प्रकार बड़ी शान्ति प्रदान की होती। कितना अभागा मैं हूँ! अपने पश्चात्ताप में भी तुम्हारी चिन्ता करने के कारण मैं अपने को उस से अधिक अपराधी पाता हूँ, जितना कि स्वतंत्र रहते समय तुम्हें अपनाने में था। मैं निरन्तर तुम्हारा चिन्तन करता हूँ; मैं सदा तुम्हारे स्निग्ध स्नेह का ध्यान करता हूँ। इसी अवस्था

में, हे परमात्मन् ! यदि मैं तुम्हारी वेदी के सन्मुख प्रणाम करता हूँ, यदि मैं तुम्हारी दया की याचना करता हूँ, तो तुम्हारी महान् आत्मा की पवित्र ज्वाला उसे भस्म क्यों नहीं कर देती ? क्या यह तपस्वी भेष परमात्मा को मुझ पर अधिक कृपा भाव दिखाने पर बाध्य नहीं कर सकता ? परन्तु परमेश्वर ने अभी तक कृपा नहीं की क्योंकि मेरी वासनाएँ अभी तक मुझ में जीवित हैं ; उन के अंगारे केवल कपट की राख में छिप गये हैं और वे ऐसे नहीं बुझ सकते जब तक परमात्मा की विशेष कृपा उन पर न हो। हम मनुष्य को धोखा देते हैं पर परमात्मा से कुछ नहीं छिपा है।

तुम लिखती हो कि तुमने मेरे कारण योगिनी का भेष धारण किया है। क्यों तुम अपनी वृत्ति की निन्दा करती हो ? पाखण्ड से क्यों तुम सर्वज्ञ परमात्मा के कोप को भड़काती हो ? मुझे आशा थी कि मुझ से अलग हो कर तुम ने अपने विचार बदल डाले होंगे ; मुझे यह भी आशा थी कि परमात्मा ने मेरी वासनाओं से मेरी रक्षा की होगी। हम प्रायः उन के स्नेह के लिए निर्जीव हो जाते हैं जिन से हम और नहीं मिल पाते, और वे हमारे लिए; अनुपस्थिति प्रेम की समाधि है। परन्तु मेरे लिए अनुपस्थिति उस की क्षुब्धकारिणी स्मृति हो गई है

जिसे मैं कभी प्यार करता था और जो निरन्तर मुझे व्याकुल करती रहती है। मैं इस पर प्रसन्न था कि तुम्हें फिर न देख सकने पर, तुम मेरे मन को अधिक कष्ट न पहुँचा कर मेरी स्मृति में चुपचाप पड़ी रहोगी; यह ब्रिटेनी और यह समुद्र मेरे मन में और भाव उत्पन्न करेंगे; और मेरे 'व्रत' और अध्ययन क्रमशः तुम्हें मेरे हृदय से दूर कर देंगे; परन्तु कठोर व्रत और दुगुने अध्ययन पर भी हमारे बीच तीन सौ मीलों के होते हुए भी तुम्हारी प्रतिमा योगिनी भेष में (जैसा तुम वर्णन करती हो) मेरे सामने उपस्थित होकर मेरी सारी प्रतिज्ञाएँ छिन्न भिन्न कर रही है।

कौन सा उपाय मैं ने नहीं किया! मैं स्वयं अपने विरुद्ध हो गया; मैं ने निरन्तर के 'अभ्यास' में अपने को निश्शक्त कर दिया; मैं सेंट पाल (St. Paul) के ग्रन्थों पर टीका करता हूँ; मैं अरस्तू से तर्क वितर्क करता हूँ—कहने का तात्पर्य यह कि मैं प्रायः सब कुछ वही करता हूँ जो तुम से प्रेम करने के पूर्व करता था, पर सब निष्प्रयोजन; तुम्हारे विरुद्ध कुछ भी नहीं चल सकता। हिलोज! अपने हठ से मेरी दीनता की वृद्धि न करो; यदि हो सके तो मेरे ऊपर अपने उपकार और अधिकार भूल जाओ; मुझे उदासीन बनने दो। मुझे उन के सुख के प्रति ईर्षा होती है जिन्हों ने कभी प्रेम नहीं किया; कैसे निश्चिन्त

और सुखी वे हैं ! सुखों के बाद दुख होते हैं; मुझे इस का पूर्ण विश्वास हो गया है; फिर भी यद्यपि मैं अब प्रेम के फेर में नहीं हूँ, पर मैं इससे मुक्त भी नहीं हूँ। जहाँ मेरी बुद्धि उस की निन्दा करती है वहाँ मेरा हृदय उसका पक्ष ग्रहण करता है। कैसी शोचनीय मेरी दशा है, मुझ में उस वृत्ति से मुक्ति पाने की शक्ति नहीं है जिस से मुक्ति देने के लिए यह स्थान, मेरा शरीर और मेरा अपमान—ये सभी प्रयत्नशील हैं। बिना सोचे ही मैं यह मानने को तय्यार हूँ कि विरोध मेरे सारे पिछले अपराधों को मिटा देगा, और बदले में मुझे शान्त और प्रशंसा प्रदान करेगा। अपनी वाक्‌शक्ति को मेरे भाग निकलने और मौन धारण करने पर मेरी भर्त्सना करने में क्यों व्यय करती हो ? हमारे अभिसार और अपने अचूक अनुशयन की कथा मुझे न सुनाओ; इन व्यथितकारी विषयों का स्मरण न करके भी मुझे दुखित करने को अन्य यथेष्ट हैं। अन्य पुरुषों की अपेक्षा दर्शन शास्त्र से हमें अधिक क्या मिला, यदि उसका अध्ययन करने पर भी हम अपनी इच्छाओं का निग्रह नहीं कर सकते ? क्या क्या प्रयत्न हम ने किये, कितनी असफलता हमें हुई, कितना क्षोभ हमें होता है और अपनी बुद्धि से काम लेने, अपनी आत्मा पर अधिकार पाने तथा अपने स्नेह पर शासन कर सकने में असमर्थ, हम कितने दिनों तक इस व्याकुलता में डूबे रहेंगे ?

प्रेम भी कैसा बुरा व्यसन है ! अपने सुख की दृष्टि से भी पुण्य कितनी अमूल्य वस्तु है ! अपने विषयानन्द के अति क्रमण का ध्यान करो ; मेरे क्षोभ का अनुमान करो, हमारे दुख और चिन्ताओं को सोचो ; इन सब को अलग रख कर शेष सब सुख और माधुर्य्य को प्रेम के हिस्से में रखो। कितना थोड़ा यह होता है ! और उन्हीं सुखों की छाया के लिए, जो पहले हमारे सामने आई हम जीवन भर इतने दुर्बल रहेंगे कि हम 'गेरुआ' धारण कर और भभूत रमा कर भी एक दूसरे को पत्र लिखना न छोड़ेंगे । कितने सुखी हम होंगे यदि आत्मनिग्रह और पश्चात्ताप से हम अपने परिताप को सच्चा बना सकें। मन से सुखों की लालसा केवल असाधारण प्रयत्नों से ही मिटाई जा सकती है ; हमारा हृदय उनका ऐसा प्रबल समर्थक है कि हमारे लिए उनका परित्याग कठिन सा प्रतीत होता है। अपने पापों के प्रति हमारा कौन सा द्वेष समझा जायगा यदि उनके अवलम्बन सदा हमें अच्छे लगते हैं ? किस प्रकार हम अवाँच्छनीय अनुराग को उस व्यक्ति से पृथक कर सकते हैं जिससे हम प्रेम करते हैं ? क्या हमारे आँसू उसे हमारे लिए गर्हित बनाने को यथेष्ट हैं ? जाने क्यों, पर प्रिय वस्तु के लिए आँसू बहाना सदा प्रिय होता है। अपने दुख में अनुताप और अनुराग में भेद करना कठिन है। अपराध की

स्मृति तथा उस वस्तु की स्मृति जिसने हमें मुग्ध किया है—एक दूसरे से इतने अभिन्न है कि सद्यः उनका पृथक्करण कठिन है और ईश्वरोन्मुख प्रेम, आरम्भ में मनुष्योन्मुख प्रेम को पूर्ण रूप से नष्ट नहीं कर देता।

यदि अपराध क्षम्य होते तो कौन सा बहाना मुझे तुम में न मिल सकता? लाभहीन सम्मान, दुखदाई वैभव मुझे कभी लुभा न सके; परन्तु वह सौन्दर्य्य, वह लावण्य, वह सौम्यता—जिनको मैं इस समय भी देखता हूँ—मेरे पतन के कारण हुए। तुम्हारी निगाहें मेरे अपराध की जड़ थीं; तुम्हारी आँखें, तुम्हारा संभाषण, मेरे हृदय में चुभ गया और उच्चाकाँक्षा और यश के मेरे उद्धार के लिए प्रयत्न करने पर भी—प्रेम मुझ पर विजयी बन बैठा। मुझे दण्ड देने के लिए ईश्वर मेरा सहायक न हुआ। तुम अब सांसारिक नहीं हो, तुम ने उसका परित्याग कर दिया है; मैं भी धार्मिक हूँ और मैं ने एकान्त में रहने का शपथ ली है; क्या हम अपनी स्थिति का उपयोग न करेंगे? क्या मेरी धार्मिकता को तुम आरम्भ ही में नष्ट कर दोगी? क्या तुम मुझे उस मठ को छोड़ने पर विवश करोगी जिस में मैं अभी आया हूँ? क्या मैं अपना 'व्रत' त्याग दूँ? मैं ने ईश्वर के सन्मुख शपथ ली है, यदि मैं उसे तोड़ूंगा तो उस के कोप से बच कर मैं कहाँ

जाऊँगा ? मुझे अपने धर्म में शान्त पाने दो—यद्यपि उसकी प्राप्ति कठिन है। मैं सारा दिन और सारी रात इस मठ में जाग कर काटता हूँ। हमारे चारों ओर विराजमान लोगों की सुखकर उदासीनता में मेरा प्रेम और भी प्रज्वलित होता है, और मेरा हृदय उसी भाँति तुम्हारे और अपने दुखों से दुखित होता है। हा! तुम्हारी स्थिरचित्ता के कारण मुझे कितनी हानि पहुँची ? कितना सुख और आनन्द मेरे हाथों से निकल गया! मुझे यह दुर्बलता तुम पर प्रकट न करनी चाहिए; मुझे मालूम पड़ता है कि मैं ने गलती की। यदि मैं अधिक मानसिक दृढ़ता दिखलाता तो मैं तुम्हारे क्रोध को अपने विरुद्ध भड़का देता और तुम्हारा क्रोध तुम में वह परिवर्तन उत्पन्न करता जो तुम्हारा सदाचार नहीं कर सकता था। यदि संसार में रह कर मैं ने अपनी दुर्बलता रसीले गीतों और पद्यों में प्रकट की है, तो क्या इस मठ की काली कोठरी को उसे कम से कम पवित्रता के भेष में छिपाना उचित नहीं है ? शोक! मैं अब भी ज्यों का त्यों हूँ! अथवा यद्यपि मैं बुराई से दूर भागता हूँ, फिर भी मैं भलाई करने में असमर्थ हूँ। धर्म, विवेक और विनय जो अन्यथा मुझ पर अधिकार रखते हैं यहाँ सब व्यर्थ हो जाते हैं। 'महान सन्देश' (Gospel) की भाषा उस समय मेरे बिल्कुल समझ में नहीं आती जब वह मेरी

इच्छाओं का विरोध करती है। पवित्र वेदी के सामने की हुई प्रतिज्ञाएँ तुम्हारी चिन्ता के सामने शिथिल पड़ जाती हैं। कर्तव्यपालन के हेतु इन सब के उपदेश देने पर भी मुझे केवल उग्र प्रेम की अप्रकट पुकार ही सुनाई पड़ती है, और मैं उन्हीं के अनुशासन में चल रहा हूँ। पुण्य के प्रति रुचि रहित, अपनी अवस्था के प्रति उदासीन, तथा अपने अध्ययन के प्रति असावधान, मैं निरन्तर अपने विचारों में व्यस्त रहता हूँ। यह मेरे लिए उचित नहीं है पर मैं देखता हूँ कि मुझ में अपने को सुधारने की शक्ति नहीं है। मैं अनुभव करता हूँ कि कर्तव्य और प्रेम के बीच सदा द्वन्द्व होता रहता है। मैं अपने को विक्षिप्त प्रेमी की भाँति निर्जनता में भी क्षुब्ध और शान्ति में भी अशान्त पाता हूँ। कैसी लज्जाजनक यह परिस्थिति है!

तुम से विनती करता हूँ, मुझे अब सुधारक और महापुरुष मत समझना; तुम्हारी प्रशंसा मेरी दुर्बलताओं के प्रतिकूल है। मैं अभागा पापी हूँ, जो न्यायकर्ता के सन्मुख क्षमा प्रार्थनाके निमित्त धराशायी है, और जो अपने पश्चात्ताप के आँसुओं को धूल में मिला रहा है। क्या इस अवस्था में पाकर भी तुम मुझ से प्रेम करने की प्रार्थना करोगी? आओ! यदि तुम उचित समझो, और अपने पवित्र-परिधान में मेरे और

परमात्मा के बीच खड़ी हो जाओ, और मुझे उस से अलग करने का कारण बनो। आओ! और बलपूर्वक मुझ से वे विचार, वे उच्छ्वास, और वे व्रत छीन ले जाओ जो मुझ से केवल परमात्मा को मिलने चाहिए। दुर्वृत्तियों की सहायक और उनके द्वेष का साधन बनो। उस हृदय से तुम क्या नहीं करवा सकती जिस की दुर्बलताएँ तुम भली भाँति जानती हो? नहीं! रोक लो अपने को और मेरी 'मुक्ति' में सहायक बनो। अपने बीते मधुर और तत्कालीन समान-दुर्भाग्य की दुहाई देकर मैं तुम से बिनती करता हूँ कि मुझे 'पतन' से बचने दो, सदा यही उत्तम प्रेम माना जायगा—यद्यपि किसी को दिखाने के हेतु नहीं; मैं तुम्हें तुम्हारे सारे शपथ और प्रतिज्ञाओं से मुक्त करता हूँ। पूर्ण रूप से उस परमात्मा की बनो जिसके चरणों में तुम लगी हो; मैं कभी इस प्रकार के पवित्र विचारों का विरोध नहीं करूँगा। कितनी प्रसन्नता मुझे होगी यदि इस भाँति मैं तुम से छुट्टी पा जाऊँ? तभी मैं धार्मिक कहलाऊँगा और तुम मठ की आदर्श अधिष्ठात्री।

ऐसा महान् अवसर पाकर अपनी उन्नति करो; अपने सदाचार को मनुष्य और देवता दोनों के लिए आदर्श बना दो। अपने शिष्यों में नम्र, अपनी प्रार्थना में तत्पर, आत्म-निग्रह में

अप्रमत्त, तथा अपने अध्ययन में उद्योगशील रहो ; और अपने विनोद को भी उपयोगी बना दो। क्या तुम ने अपनी वृत्ति गुरु में पाई है कि तुम उसका सदुपयोग न करोगी ? तुम ने मिथ्या सिद्धान्तों और बुरे उपदेशों के फेर में अपने को आने दिया है, अतः अब उन सदुपदेशों का विरोध न करो जो सदाचार और सद्‌धर्म तुम्हें देने पर मुझे उत्साहित कर रहे हैं। मैं तुम से स्वीकार करता हूँ कि मैं अभी तक अपने को भलाई की अपेक्षा बुराई की शिक्षा देने में अधिक निपुण समझता था। मेरी बनावटी वाग्मिता ने केवल कपट साधुता का प्रदर्शन किया था। विषयासक्त मेरा हृदय केवल उसी के योग्य बातों की शिक्षा दे सकता था। पापियों का प्याला इतने आकर्षक माधुर्य्य से लबालब रहता है, उसे चखने की हम में ऐसी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, कि बस उसके हमारे सामने आने भर की देर रहती है। इस के ठीक विपरीत पुण्यात्माओं का पात्र कटु पदार्थ से होता है और उस के प्रति हमारी नैसर्गिक अरुचि रहती है। फिर भी तुम मुझे इस लिए कायर समझती हो कि मैं ने तुम्हारे सामने पहले पहल उसे रखा है। मैं सहर्ष इस अपराध को स्वीकार करता हूँ। मैं तुम्हारी उस तत्परता की भली भाँति प्रशंसा नहीं कर सकता जो तुमने 'संन्यास' स्वीकार करने में दिखाई है ; इसलिए तुम उस धर्म-दण्ड को साहस से वहन

करो जिसे तुम ने इस दृढ़ता से स्वीकार किया है। मेरी ओर सन्देह की दृष्टि से न देख कर पुण्य का प्याला छक कर पिओ; और मुझे अपने से दूर चले जाने दो और उस महात्मा की आज्ञा का पालन मुझे करने दो जो कहता है "पलायेत्"।

तुम मुझ से विनती करती हो कि मैं भक्ति का बहाना कर के लौट आऊँ। इस विषय में तुम्हारा अनुरोध मुझे स देह दुविधा में डालता है कि मैं दुविधा में पड़ा हूँ कि तुम्हें क्या उत्तर दूँ। यदि यहाँ भी मैं चूक करूँगा तो मुझे लज्जा लगेगी—(यदि अपनी सारी विपत्तियों की ओर ध्यान देते हुए मैं यह कहने का साहस न कर सकूँ) धर्मपीठों को अपनी मर्य्यादा का बड़ा ध्यान है, और उन की आज्ञा है कि उसके अनुयायी पवित्र साधनों द्वारा पुण्य का संचय करें। जब हम परमात्मा के सन्मुख निर्दोष होकर पहुँचते हैं तभी हम औरों को उस के पास निर्भीकता से बुला सकते हैं। परमात्मा अबीलार्ड से यही चाहता है कि वह हिलोज़ा को भूल जाय और उस से फिर साक्षात् न करे; और हिलोज़ा से यह कि वह अबीलार्ड से किसी बात की आशा न रखे और उसकी स्मृति तक भुला दे। प्रेम के विषय में विस्मरण अत्यन्त आवश्यक पर अत्यन्त कठिन प्रायश्चित्त है। अपने अपराधों का पुनःस्मरण तो सहज है;

कितनों ने असावधानता से नम्रता से स्वीकार न कर इसे अपने लिए सुख की सामग्री बना रखा है। परमात्मा की शरण जाने के लिए केवल यही एक मार्ग है कि हम अपने आराध्य व्यक्ति की उपेक्षा करें, और उस परमात्मा की आराधना में लग जायँ जिस की हम ने अभी तक उपेक्षा की थी। यह कठोर जान पड़ेगा, पर यदि हम अपनी रक्षा चाहते हैं तो यह करना ही पड़ेगा।

सुगमता के लिए—सोचो तो क्यों मैं ने तुम्हें अपने से पहले 'संन्यास' लेने पर विवश किया; और यदि तुम से कुछ छिपाता नहीं हूँ—तो मेरी उस चतुराई और सद्भाव के लिए मुझे क्षमा करना जिस का मैं ने अपने प्रति तुम्हारी उदासीनता तथा घृणा को जाग्रत करने के लिए प्रयोग किया है। जब मैं ने अपने को विपत्तियों से दुखित पाया, मैं अत्यन्त ईर्षालु हो गया और सब पुरुषों को मैं अपना प्रतिस्पर्धी समझने लगा। प्रेम में विश्वास से अविश्वास की मात्रा अधिक होती है। मुझे अपने अनेक त्रुटियों के कारण अनेक बातों की आशंका रहती थी, और अपने ही उदाहरण से भयभीत होकर मैं सोचता था कि तुम्हारा हृदय प्रेम का इतना आदी हो गया है कि उसे दूसरे से प्रेम जोड़ते देर न लगेगी। ईर्षा अप्रासंगिक बातों पर सुगमता से

विश्वास कर लेती है। मैं चाहता था कि तुम पर अविश्वास करना अपने लिए असम्भव कर दूँ। मैं ने तत्परता से तुम्हें इस पर सहमत किया कि सदाचार चाहता है कि तुम संसार की आखों से दूर हो जाओ; शील और हमारा प्रेम यही ठीक समझता है; और तुम्हारी अपनी रक्षा भी इसी में थी। जब कि मुझ से इस प्रकार क्रूरता से बदला लिया गया था उस समय 'मठ' के अतिरिक्त कहीं अन्यत्र क्या तुम सुरक्षित रहने की आशा कर सकती थी?

मैं यथार्थ कहूँगा। तुम बड़ी आसानी से इस पर राजी हो गई थी। मेरी ईर्षा भीतर ही भीतर तुम्हारी इस निष्कपट आज्ञा-पालन पर प्रसन्न हो रही थी। अपनी सफलता पर आह्लादित होने पर भी मैं ने हिचकिचाते हुए हृदय से तुम्हें ईश्वर के हाथों सौंपा था। अपने 'रत्न' को यथासंभव मैंने अपने पास रखा, और दूसरों की लूट से बचाने के लिए ही उसे अपने से अलग किया था। धर्म की ओर तुम्हारे सुख के विचार से मैंने तुम्हें प्रेरित नहीं किया था, वरन् उस शत्रु की भाँति मैंने तुम्हें उस में झोंक दिया था जो उन वस्तुओं को नष्ट ही कर देता है जिसे वह ले नहीं जा सकता है। फिर भी तुम ने मेरी बातें अनुग्रह पूर्वक सुनीं, और कभी कभी तुम ने आँखों में आँसू भर मुझे टोक कर

कहा भी कि मैं तुम्हें उन मठों से परिचित करा दूँ जिन्हें मैं आदर की दृष्टि से देखता था। तुम्हें बंधन में पड़ते देख मुझे कितना संतोष हुआ था। मैं इस समय चिंता-मुक्त था और यह सोच कर संतुष्ट था कि मेरे अभाव के पश्चात् अब तुम संसार में नहीं रह गई, और अब तुम उसमें लौट कर जाओगी भी नहीं।

परन्तु अब भी मुझे सन्देह था। मैं समझता था कि स्त्रियां दृढ़-संकल्पी नहीं हो सकतीं यदि 'शपथ' से वे वचन-बद्ध न हों। अतएव मैं ने उन प्रतिज्ञाओं की आवश्यकता समझी और तुम्हारी रक्षा के लिए मुझे ईश्वर की भी आवश्यकता प्रतीत हुई, जिस में मुझे तुम पर अधिक अविश्वास करने का अवसर न मिले। ऐ! पवित्र विहार! ऐ दुर्भेद्य शरणस्थान! तुम ने कितनी अगणित आशंकाओं से मुझे छुटकारा दिया है? धर्म और भक्ति तुम्हारी दीवालों और फाटकों की तत्परता से रक्षा करते हैं। ईर्षालु मनुष्यों के लिए ये कितने सुखप्रद शरण हैं! किस व्यग्रता से मैं ने इसके लिए प्रयत्न किया है! सदा मैं डरता हुआ तुम से इस त्याग के लिए अनुरोध करने जाता था; प्रगट करने का साहस न करते हुए भी मैं तुम्हारे सौन्दर्य के उस तेज की प्रशंसा किया करता था, जिसे पहले मैं ने नहीं देख पाया था। प्रस्फुटित

होते हुए पुण्य की वह लाली थी, अथवा मुझ पर आनेवाली भारी हानि का वह पूर्वज्ञान था, मैं कारण की जांच करने को उत्सुक न था, परन्तु मैं ने तुम्हें दीक्षा दिलाने में शीघ्रता की। मैं ने अपने अपराध में तुम्हारे मठाध्यक्षिणी को मिलाया और उसे घूस देकर तुम्हारी स्वाधीनता अपहरण करने का अधिकार प्राप्त किया। मठ में अन्य निवासी भी इसी भाँति घूस पा चुके थे, और मेरे आदेशानुसार वे अपनी सारी हिचक और घृणा तुम से छिपाते थे। मैं ने कोई बात उठा न रखी; और यदि तुम मेरे फंदे से बच निकलती तो मैं स्वयं भी न 'विरक्त' होता; सब जगह तुम्हारा पीछा करना मैं ने ठान लिया था। मेरी छाया सदा तुम्हारे पीछे पीछे फिरती और निरन्तर तुम्हारे भय तथा व्यग्रता का कारण होती—इसी में मुझे 'तृप्ति' का अनुभव होता।

परन्तु धन्य है उस परमात्मा को, कि तुम ने 'व्रत' लेना स्वीकार कर लिया। तुम्हारे साथ मैं वेदी तक गया था, और जब तुम ने उस 'पवित्र पट' को स्पर्श करने के निमित्त अपना हाथ बढ़ाया था, मैं ने तुम्हें उन घातक-शब्दों को स्पष्ट उच्चारण करते सुना जिन्हों ने सदा के लिए तुम्हें पुरुष से पृथक कर दिया। अब तक मैं सोचता था कि तुम्हारा यौवन और सौन्दर्य मेरे मनसूबे पर पानी फेर देगा और तुम्हें 'संसार' में लौट आने पर

विवश करेंगे। माना कि साधारण प्रलोभन तुम्हें विचलित न करता। पर क्या बाइस वर्ष की अवस्था में अपना उत्सर्ग कर देना साधारण बात है? ऐसी अवस्था में जिसे सब से अधिक स्वातंत्र्य की आवश्यकता है क्या तुम संसार को अपने ध्यान के अयोग्य समझ सकती थी? मैं ने तुम पर कितना अन्याय किया, और किन किन दुर्बलताओं का तुम्हें दोषी ठहराया? मेरे विचार में तुम ओछी और चंचल थी। क्या एक कामिनी कान्त की अनुपस्थिति में, वासनाओं के ऊधम मचाने पर, अन्य पुरुष की ओर दीनता से न देखती? मैं तुम्हारी निगाहों, तुम्हारी प्रत्येक चेष्टा, और तुम्हारी मुद्रा का अनुवीक्षण करता था; और प्रत्येक पर मैं काँप उठता था। तुम इस स्वार्थपूर्ण आचरण को शठता, विश्वासघात, अथवा हत्या कह सकती हो। इस प्रकार के घृणा-तुल्य प्रेम पर तो प्रचंड क्रोध और तिरस्कार का भड़कना उचित है।

तुम्हें यह जानना चाहिए कि जब मुझे यह विश्वास हो गया कि सम्पूर्ण रूप से तुम मुझ में अनुरक्त हो, और जब मुझे यह ज्ञात हो गया कि तुम सब प्रकार से मेरे प्रेम के योग्य हो, तब मैं ने सोचा कि मैं तुम्हें अब अधिक प्यार करने में असमर्थ हूँ। मैं ने सोचा कि यही अवसर है कि अब मैं तुम पर अपना स्नेह

प्रकट करना बंद कर दूँ, और मैं ने विचार किया कि परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कर अब तुम उस की असाधारण संरक्षा में हो, और पति के नाते तुम्हारा अब मुझ पर कुछ भी भार नहीं है। मेरी ईर्षा शान्त हुई प्रतीत होती थी। जब केवल परमात्मा ही हमारा प्रतिस्पर्धी रहता है तब हमें शंका की कोई बात नहीं रहती; और पहले से अधिक निश्चिन्त होने के कारण मुझे यह भी साहस हुआ कि मैं परमात्मा से बिनती करूँ कि वह तुम्हें मेरी आँखों से ओट कर दे। परन्तु इस प्रकार की अविवेकपूर्ण प्रार्थना का वह अवसर न था, और मेरी भक्ति भी ऐसी न थी कि उस की सुनवाई होती। स्वार्थ और नैराश्य मेरे सारे पूर्व-कर्मों की तह में थे, और इस भाँति मैं ने ईश्वर को प्रसन्न न कर उस का अपमान किया था। परमात्मा ने मेरी प्रार्थनाओं तथा मेरे त्याग दोनों को अस्वीकार किये, और मेरी यन्त्रणा को स्थायी रखने के लिए मुझे प्रेम से छुटकारा नहीं दिया। इसलिए मैं तुम्हें शपथ दिलाने तथा अपने अनुराग—दोनों का अपराध वहन करता हूँ, अतएव मुझे निश्चय जीवन पर्य्यन्त यातना मिलनी चाहिए।

यदि परमात्मा से तुम्हारे हृदय का उस पुण्यात्मा की भाँति साक्षात् हुआ है जिस की निष्कपटता ने उस से पहले पहल कृपा

की याचना करने के निमित्त प्रेरित किया है, तो मुझे संतोष के लिए अवसर है; परन्तु अपने दोनों को अपराधी प्रेम का शिकार पाकर, इस प्रेम को अपने इस वेष (योगी) में अपनी अवज्ञा करते तथा अपनी श्रद्धा नष्ट करते देख कर, मैं भय से कांप उठता हूँ। क्या यह पतन है? अथवा क्या यह अपवित्र प्रेम की चिर-प्रमत्तता का परिणाम है? ईश्वर की अलौकिक कृपा के बिना हम प्रेम को विष अथवा उन्माद नहीं कह सकते; तब तक वह व्याधि है जिसका हम बार-बार चिन्तन किया करते हैं। जब हम ऐसे भ्रम में हों, उस समय अपनी हीन दशा का ज्ञान हमारे सुधार का प्रथम सोपान होता है। कौन नहीं जानता कि यह भी ईश्वर की महिमा है कि अपनी दया हेतु वह मनुष्य में उसकी दुर्बलताओं ही को कारण बनाता है? जब वह हमें अपनी दुर्बलताएँ दिखा देता है और जब हम उन पर पश्चात्ताप कर लेते हैं, तब वह अपनी सर्व शक्तिमत्तता दिखा कर हमें सहायता देने पर तय्यार होता है। अपने संतोष के लिए हम कह सकते हैं—कि हम उस भीषण प्रलोभन के फेर में पड़े हैं जिस ने बड़े बड़े ऋषियों की तपस्या भंग कर दी है।

परमात्मा उसी समय मनुष्यों को उन की विपत्ति कम करने के हेतु दर्शन देता है जब वह उचित समझता है। यह उसी की

अनुग्रह थी कि तुमने भिक्षुणी बनना स्वीकार किया। वह अपनी दया से तुम्हें अपने समीप बुलाना चाहता था। मैं ने देखा था कि मुझ से अन्तिम विदा मांगते समय तुम्हारी आँखें क्रास (Cross) पर थीं। लगभग छः मास तक तुमने मुझे कोई पत्र नहीं लिखा था, और इस के बीच तुम्हारा कोई संदेशा भी मुझे नहीं मिला था। मैं इस 'मौनता' की प्रशंसा करता था, उस के विरुद्ध कहने की मुझ में हिम्मत भी न थी, पर उस के अनुकरण में मैं स्वयं असमर्थ था। मैं ने तुम्हें पत्र लिखा, और तुम ने उत्तर तक न दिया---उस समय तुम्हारे हृदय का कपाट बन्द था, परन्तु यह प्रेम का प्रमोद-वन इस समय खुल गया है; जान पड़ता है वह (परमात्मा) उस से निकल गया है और तुम अकेली परित्यक्त रह गई हो। तुम से दूर जा कर वह केवल तुम्हारी परीक्षा करता है; उसे लौटा लो और उसे पाने का प्रयत्न करो। अपने को मुक्त करने के लिए, हमें परमात्मा की सहायता प्राप्त करनी चाहिए; हमारा मोह इतना गाढ़ा है कि हमारा अपने को उस से मुक्त करना कठिन है। हमारी मूर्खता इस पवित्र भूमि में भी पहुँची है; हमारी विलास लीला मनुष्य जाति को लाँछित करती है। उन के वर्णन को लोग पढ़ते और प्रशंसा करते हैं; प्रेम ही ने, जो उन के उद्भव का कारण था, उनका वर्णन भी करवाया था। हमारा उदाहरण नवयुकों को उनके अपराध में सांत्वना देगा; हमारे

पश्चात् अपराध करने वाले अपने को कम दोषी समझेंगे। हम पापी हैं जिन्हों ने देर में पश्चात्ताप किया है; ईश्वर के लिए! उसे हार्दिक होने दो! यथासम्भव हमें अपने पापों का प्रायश्चित्त करने दो और फ्रांस को, जिस ने हमारे दुष्कर्मों का प्रत्यक्षीकरण किया है, हमारे परिताप पर चकित होने दो। आओ, हम उन्हें चकित कर दें, जो हमारे अपराधों का अनुकरण करना चाहते हैं; आओ, हम अपने ही विरुद्ध ईश्वर का पक्ष ग्रहण कर लें और इस भाँति उस के दण्ड से अपने को बचा सकें। हमारे पूर्व-दोषों को मिटाने के लिए लज्जा, दुख और अनुताप की आवश्यकता है। आओ, हृदय से ईश्वर को हम समर्पण करें, हम लज्जित हों और हम रोयें। यदि इन छोटी मोटी प्रारम्भिक बातों में, परमात्मन्! हमारा हृदय तेरा न हुआ, तो कम से उन्हें इस का ज्ञान करा दे कि उन्हें ऐसा होना चाहिए।

हिलोज़! उस बची हुई लज्जाजनक वासना से अपने को मुक्त कर लो जो तुम में जड़ पकड़ चुकी है। याद रखो कि परमात्मा को छोड़ दूसरे का क्षण मात्र भी ध्यान—व्यभिचार है। यदि तुम मुझे, यहाँ मेरी उदासीन और शोचनीय मुद्रा में, अनेक दुखदाई मठ-वासियों से घिरा हुआ, देख पाती, जो मेरी विद्वत्ता की प्रसिद्धि से भयभीत और मेरे विषण्णता पर रुष्ट हैं मानो मैं

उन्हें विप्लव का भय दिला रहा हूँ, तो तुम मेरे इन अधम आहों और व्यर्थ आँसुओं पर क्या कहती जो इन विश्वासी मनुष्यों को धोखे में डाले हुए हैं ? शोक ! मैं ने मन्मथ के सामने सिर झुकाया, 'क्रास' के सन्मुख नहीं। मुझ पर दया करो और अपनी रक्षा कर लो। यदि जैसा तुम कहती हो, तुम्हारी 'भक्ति', मेरे प्रयत्न का, परिणाम है, तो अपनी अविकल विकलता से मुझे उस के श्रय से वंचित न करो। मुझे बता दो कि तुम भीतरी वैराग्य से भी अपने वेष की सच्ची रहोगी। परमात्मा का डर रखो, जिस में तुम अपने अपराधों से 'मुक्ति' पा जाओ ; उस से प्रेम करो जिस में पुण्य में अग्रसर हो। विहार में चंचलचित्त मत रहो, क्योंकि यह महात्मा का वासस्थान है। अपने साथियों को स्वीकार करो—ये ही प्रभु के बन्धन हैं ; बस यदि तुम विनय से उन्हें स्वीकार करोगी तो परमात्मा उन का भार कम कर देगा और तुम्हें सहित वह उन्हें अंगीकार करेगा।

अपने उस अनुराग पर कठोर न होकर, जो अभी तक तुम पर अधिकार किए हुए है, तुम अपनी दुर्गति का ध्यान करते हुए अपनी दुर्बल भगिनियों की सहायता करनी सीखो ; अपने दोषों को देखते हुए उन पर दया भाव रखना सीखो। यदि

नितान्त नैसर्गिक विचार तुम्हें विवश करें तो 'क्रास' की शरण पहुँच कर करुणा की भिक्षा मांगो—

"घाव पड़े हैं भरने को, इसको रोवो सन्मुख प्रभु से" धार्मिक संस्था की अधिष्टात्रृ होकर इन्द्रियों की चेरी मत बनो, और रानियों पर अधिकार रख कर, अपने पर शासन करना आरम्भ करो। अपनी इन्द्रियों के क्षण मात्र अविनय पर लज्जित हो। स्मरण रहे कि कभी कभी हम पवित्र मन्दिर में भी झूठे देवताओं की आराधना करते हैं, और उन ऐहिक वासनाओं के अतिरिक्त, और कोई पूजा उन्हें अधिक प्रिय नहीं होती, जो धार्मिक-जनों के हृदय में उस समय तक प्रज्वलित रहती है। यदि संसार में रह कर तुम ने प्रेम करने की आदत डाल ली है, तो अब उस का अनुभव 'प्रभु' को छोड़ अन्य किसी के लिए न करो। संसार में रह कर ऐहिक सुखों पर नष्ट किये हुए प्रत्येक क्षण के लिए अब पछिता लो; उन्हें मुझ से वापस लो। मैं उन्हें लूट लेने का अपराधी हूँ; साहस करके, निर्भीकता से मुझे उन के लिए धिक्कार दो।

निश्चय मैं तुम्हारा गुरु था, पर केवल तुम्हें पाप की शिक्षा देने के लिए। मुझे तुम अपना धर्म पिता बनाती हो; पूर्व इस के

कि मैं उस पवित्र पद का किंचित् मात्र भी अधिकारी हो सकूँ, मुझे तो विश्वास घातक कहना उचित था। मैं तुम्हारा भाई अवश्य हूँ पर केवल पाप का साहचर्य्य है जो मुझे इस के योग्य बनाता है। मुझे तुम्हारा पति कहते हैं, पर इसका आधार लोकापवाद है। यदि तुम मेरे आदर के लिए तथा अपने अनुराग को प्रसन्न करने के लिए इन पवित्र सम्बोधनों का अपने पत्र में दुरुपयोग किया है, तो काट दो उन्हें और उन के स्थानमें हत्यारा, अधम और शत्रु लिख दो, जिस ने तुम्हारे सतीत्व के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा तुम्हारी शान्ति भंग की, और तुम्हारी सरलता के प्रति विश्वासघात किया। मेरे कारण तुम्हारा पतन हो जाता यदि परमात्मा की असाधारण अनुग्रह ने, तुम्हारी रक्षा के हेतु मुझ को बीच ही रोक कर पराजित न कर देती।

यही विचार तुम्हें उस भगोड़े के विषय में रखना उचित है जो तुम्हें उस से पुनर्मिलन की आशा से वंचित करना चाहता है। परन्तु यदि एक बार प्रेम निष्कपट होता है तो फिर न प्रेम करना कितना दुष्कर होता है! संसार का त्याग प्रेम के त्याग से सहस्रों गुना आसान है! इस माया, इस विश्वासघातक संसार को, मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूँ; मैं नितान्त उस की चिन्ता

नहीं करता ; परन्तु मेरी सारी विवेक-शक्ति के होते हुए भी मेरा चंचल हृदय अब तक सदा तुम्हें ढूँढता रहता है, और तुम को खोकर दुखी है। अब चाहे मैं कायरता से अपनी पिछली बातें मुकर जाऊँ, परन्तु मुझे अपने ध्यान में आने का अवसर न देना, सिवा उस भाँति जैसा मैं ने अभी कहा है। स्मरण रहे कि मेरी अन्तिम ऐहिक चेष्टा यही रही कि तुम्हारे हृदय को बहकाऊँ ; तुम मेरे कारण पतित हुईं—एक ही लहर हम दोनों को एक साथ निगल गई। हम उदासीनता से मृत्यु की प्रतीक्षा करते थे, और वही मृत्यु हमें झांक कर समान दण्ड के मुख में ले गई। परन्तु परमेश्वर ने बचा लिया, और हमारी भग्न नौका घाट लग गई। बहुतों को परमात्मा दुख देकर बचाता है। अपनी प्रार्थनाओं को मेरी मुक्ति का कारण बना दो ; मुझे उस के लिए तुम्हारी आदर्श पवित्रता और परिताप का ऋणी बनने दो। परमात्मन् ! यद्यपि मेरा हृदय तेरी सृष्टि के प्रति स्नेह से परिपूर्ण है, तो भी तू, इच्छानुसार उसे ऐसे सारे प्रेम से, रिक्त कर सकता है जो तेरे लिए नहीं है। हिलोज़ को सच्चे दिल से प्यार करना उसे उस शान्त के हाथों सौंपना है जो विविक्ति और पुण्य प्रदान करते हैं। मैं ने यह निश्चय कर लिया है—यह पत्र मेरा अन्तिम अपराध होगा। अस्तु ! यदि मैं यहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ तो मैं आदेश कर जाऊँगा कि मेरा शरीर (शव) पेराक्लीट के मन्दिर में

पहुँचाया जाय। तुम उस अवस्था में मुझे देखोगी, इस लिए नहीं कि तुम मुझे क्षुब्ध कर सको, उस के लिए अवसर न होगा; इस समय रोलो मेरे लिए और शान्त कर दो उस अग्नि को जो मुझे इस समय जला रही है। इस लिए मुझे देखना कि तुम्हारी पवित्रता मेरी दुर्दशा देख कर और भी दृढ़ हो जाय, और मेरी मृत्यु यह पुकार कर घोषित कर सके कि किन-किन के लिए तुम्हें तय्यार रहना उचित है जब तुम पुरुष से प्रेम करना निश्चय करो। मुझे आशा है, कि तुम, इस नश्वर जीवन की समाप्ति के उपरान्त, मेरे समीप समाधिस्थ होना चाहोगी। तुम्हारी निर्जीव अस्थियों को तब भय का कारण न होगा और मेरी समाधि उनके कारण और भी प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण हो जायगी।

चौथा पत्र

हिलोज़ का अबीलार्ड के नाम

तुम्हारा पत्र मैं ने बड़ी बेचैनी से पढ़ा ; अपने दुर्भाग्य के रहते हुए भी मैं यही आशा रखती थी कि तुम्हारे पत्र में सान्त्वना की बातें मिलेंगी। परन्तु प्रेमीजन भी अत्याचार करने में अत्यन्त कुशल होते हैं। मेरे प्रेम की मार्मिकता और प्रबलता का उसी से ज्ञान हो जायगा जिस के कारण मेरी आत्मा को कष्ट पहुँचा है। तुम्हारे पत्र के सिरनामे से मैं क्षुब्ध हो उठी ; क्यों तुम ने अबीलार्ड के पूर्व हिलोज के नाम का उल्लेख किया ? इस निष्ठुर और अन्याय-पूर्ण विभेद का क्या तात्पर्य्य ? यह तुम्हारा ही—धर्मपिता और प्राण पति का नाम था—जिसे पाने के लिए मेरी आँखें उत्सुक थीं। मैं अपना उल्लेख नहीं चाहती थी, यदि सम्भव होता तो मैं उसे भूल जाती, क्योंकि यही तुम्हारी विपत्तियों का कारण है। तुम मेरे स्वामी हो, मेरे गुरु हो, सदाचार तथा पद दोनों के यह विरुद्ध है कि तुम मुझे आदरसूचक शब्द से संबोधन करो ; परन्तु प्रेम ने तुम्हें इस के विपरीत आचरण करने पर विवश किया है। हा ! तुम यह सब भली भाँति जानते हो !!

क्या हमारे दुर्भाग्य द्वारा हमारे सुखों के नष्ट होने के पूर्व तुम ने कभी इस भाँति मुझे सम्बोधन किया था? मुझे ज्ञात होता है कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए स्थान नहीं है, और तुम 'आराधना' में इतना अधिक आगे बढ़ गये हो जितना मैं चाहती न थी। हा! तुम्हारा अनुसरण करने में मैं कितनी दुर्बल हूँ; कृपया मेरे लिए ठहरने की अनुग्रह करो और मुझे अपने उपदेशों से उत्साहित करो। क्या तुम मुझे त्यागने की निठुरता कर सकते हो? यह आशंका मेरे हृदय को शूल की भाँति कष्ट पहुँचा रही है; तुम्हारे पत्र में किये गये अनुरोध, अपनी मृत्यु का तुम्हारा खींचा हुआ भयानक चित्र, मुझे पागल बना रहा है। निष्ठुर अबीलार्ड! तुम्हें मेरा दुःख दूर करना चाहिए—तुम उसे बढ़ा रहे हो। तुम्हें मेरे हृदय के अन्तर्द्वन्द को मिटाना उचित था—तुम मुझे और विक्षिप्त बना रहे हो।

तुम चाहते हो कि मृत्यु उपरान्त मैं तुम्हारी अस्थियों की रक्षा करूँ और उन के प्रति अपने अन्तिम कर्तव्य का पालन करूँ। हा! किस धुन में तुम ने इन कष्टकर कल्पनाओं को मन में आने दिया, और कैसे यह सब तुम मुझे लिख सके? क्या मेरी तत्क्षण मृत्यु का भय तुम्हारी लेखनी न रोक सकी? कदाचित्

मैं समझती हूँ तुम ने उन यन्त्रणाओं पर ध्यान न दिया, जो तुम मुझे देने जा रहे थे। दैव यद्यपि मुझ पर कठोर है, फिर भी वह इतना क्रूर नहीं है कि तुम्हारे पीछे मुझे क्षण भर जीवित रखे। अबीलार्ड-रहित जीवन असाध्य यन्त्रणा है, और मृत्यु परम सुख यदि उस के बहाने तुम से मिलन हो सके। यदि कहीं परमात्मा मेरी अविरत प्रार्थना सुन ले, तो तुम्हारी आयु बड़ी होगी और तुम अपने हाथों मेरा अन्तिम संस्कार करोगे।

क्या यह तुम्हारा धर्म नहीं है कि तुम गुरुतर उपदेशों द्वारा मुझे इस संकट से मुक्त करो, जो बड़े बड़े गम्भीर और दृढ़ को भी विचलित कर देता है? क्या यह तुम्हारा धर्म नहीं है कि तुम मेरी अन्तिम प्रेम प्रार्थना को स्वीकार करो, मेरी अन्त्येष्टि क्रिया की देखरेख करो, और मेरे आचरण और अटल विश्वास का विवरण लोगों को सुनाओ? तुम्हें छोड़ और कौन हमें भली भाँति परमात्मा से परिचित करा सकता है? अपनी आराधना के बल से तुम उन की आत्माओं को ईश्वर तक पहुँचा दो जिन्हें तुम ने उस की आराधना में 'भारी शपथ' दिला कर लगाया है। इन उपचारों की हम तुम्हारी पितृतुल्य उदारता से आशा रखते हैं। इस के उपरान्त तुम उन सारी

चिन्ताओं से छुटकारा पा जाओगे जो तुम्हें इस समय कष्ट पहुँचा रही हैं, और तुम आनन्द से शरीर छोड़ सकोगे जब ईश्वर की इच्छा होगी। हमारे प्रति अपने आचरण पर सन्तुष्ट, हमारे सुख के विषय में सर्वथा निश्चिन्त तुम हमारा अनुसरण कर सकोगे। परन्तु तब तक मुझे ऐसी अनर्थकारी बातें न लिखो; हम यों ही यथेष्ट दुखी हैं, हमारे दुखों में वृद्धि की आवश्यकता नहीं है। हमारा जीवन यहाँ तिल तिल मृत्यु के समान है; क्या तुम उस में और शीघ्रता करोगे? हमारा अपमान हमारे चित्त को सदा व्यस्त रखने के लिये यथेष्ट है, क्या हम भविष्य में और भयावह बातों की खोज करेंगे? सेनेका (Seneca) ने कहा है 'मनुष्य कितना विवेक शून्य है, कि वह कल्पना द्वारा दूरस्थ विपत्तियों को निकटतम बनाता है, और मृत्यु के पूर्व जीवन के, सुखों को खोकर दुख उठाता है।

तुम चाहते हो कि जीवन यात्रा समाप्त करने के पश्चात् तुम्हारा शव पेराक्लीट (Paraclete) के मन्दिर में पहुँचाया जाय, जिस में कि वह मेरी आखों के सामने रह कर मुझे सदा तुम्हारा ध्यान दिलाता रहे। क्या तुम समझते हो कि मेरे हृदय पर तुम्हारे कारण पड़ा हुआ प्रभाव मिट जायगा, अथवा कुछ समय पश्चात् हम तुम्हारे उपकारों को भूल जायँगे? और क्या मुझे

उस समय उन प्रार्थनाओं के लिए अवसर मिलेगा जिनकी तुम चर्चा कर रहे हो ? हा ! उस समय मैं अन्य चिन्ताओं में मग्न रहूँगी, क्योंकि ऐसी महान् विपत्ति के कारण मुझे कदाचित् ही क्षण भर की शान्ति मिले। क्या मेरी दुर्बल विवेक-शक्ति इन प्रबल आघातों को सहन कर सकेगी ? जब मैं विक्षिप्त रहूँगी और स्वयं दैव के विरुद्ध बक झक करने लगूँगी (हरे ! हरे !), तो मैं केवल रोकर उसे ठंढी न करूँगी, वरन् अपने उपालंभों से उसे और भीउत्त्तेजित कर दूँगी। कैसे मैं प्रार्थना करूँगी और कैसे मैं अपने शोक के सामने खड़ी हो सकूँगी ? तुम्हारी दुखदायी अत्येष्टिक्रिया करने से तुम्हारा अनुसरण करने के निमित्त मुझे अधिक इच्छुक होना चाहिए। तुम्हारे ही लिए, अबीलार्ड ! मैं ने जीवित रहना निश्चय किया है, और यदि तुमही मुझ से छीन लिये गये तो मैं अपने विपत्ति के दिनों का अधिक उपयोग न कर सकूँगी। हा ! यदि दैव ने निष्ठुरता से मुझे उस दिन के लिए जीवित रखा तो मैं क्या करूँगी। जब मैं इस अन्तिम विच्छेद का स्मरण करती हूँ मुझे मृत्यु के सारे कष्टों का अनुभव होता है ; उस समय मेरी क्या दशा होगी यदि मुझे यह अनर्थकारी घड़ी देखनी पड़े ? यदि प्रेमवश नहीं तो करुणावश ही, मेरे मन में इन करुण कल्पनाओं को उत्पन्न न करो।

तुम चाहते हो कि मैं अपने धर्म में लग जाऊँ, और सम्पूर्ण रूप से ईश्वर की बनूँ, जिसके चरणों में मैं निसर्ग कर दी गई हूँ। मेरे लिए यह उस समय यह कैसे सम्भव है, जब तुम मुझे ऐसी बातों का भय दिला रहे हो जो अहर्निशि मेरे मन को अपनाते रहते हैं? जब विपत्ति हमें धमका रही है, और हम उसे हटा नहीं सकते, तो हम क्यों व्यर्थ में उस से भय खाने लगें? यह तो उस से भी अधिक दुखदाई है। तुम्हें खोकर मैं किस लाभ की आशा करूँ? मृत्यु जब मुझ से सब से प्रिय वस्तु हर लेगी, फिर पृथ्वी पर कौन सी वस्तु मुझे संसार में संलग्न कर सकती है? मैं ने बिना कुछ कठिनाई के जीवन की कामनाओं का त्याग किया है, केवल एक ही कामना अपने पास रख छोड़ी है, कि तुम से सदा प्रेम करती रहूँ, तुम्हारे चिन्तन का निरन्तर सुख अनुभव करती रहूँ, और यह सुनती रहूँ कि तुम सकुशल हो। इस पर भी, हा! यदि तुम मेरे लिए जीवित न रहो, और मुझे इस की भी आशा देकर प्रसन्न न रखो कि मैं तुम्हें फिर कभी देख सकूँगी! यही मेरे लिए महान् यन्त्रणा है।

क्रूर दैव! तू ने क्या मुझे यथेष्ट यन्त्रणा नहीं दी? तू ने मुझे कभी विश्राम न लेने दिया; भरपूर तू ने मुझ से कसर ली

और तू ने कोई ऐसे बात रख छोड़ी जिस से तू औरों को अधिक भयानक जान पड़े। मुझे मन्त्रणा देने में तूने अपने क्रोध का अन्त कर दिया, और अब औरों को तेरे कोप से भय खाने की आवश्यकता न होगी। अब तूझे मेरे विरुद्ध अधिक सशस्त्र होने से क्या लाभ? जितनी चोट मुझे पहुँच चुकी है उस से अधिक की आवश्यकता क्या है, हां, यदि तेरी इच्छा मुझे मार डालने की न हो। कष्टों से लदी मुझ से क्या अब भी तुझे भय है कि यह 'अन्तिम मार' मुझे सारी आपत्तियों से मुक्त कर देगा? और क्या इसी हेतु तू मृत्यु से मेरी रक्षा करता है कि मैं नित्य तिल तिल मरूँ?

प्यारे अबीलार्ड! मेरे नैराश्य पर दया करो! क्या कभी भी ऐसी करुणोत्पादक बात हुई थी? जितना ही तुम ने मुझे अन्य महिलाओं से ऊँचा स्थान दिया, जो तुम्हारे प्रेम के लिए मुझ से ईर्षा करती थीं, उतना ही मैं तुम्हारे प्रेम की अनुपस्थिति का अनुभव करती हूँ। मुझे सुख की सीमा पर इस हेतु पहुँचाया था कि मेरा भयानक पतन हो? मेरे सुखों की समता नहीं की जा सकती थी, मेरे दुखों का अब जोड़ी मिलना कठिन है। मेरे सौभाग्य पर मेरे प्रतिद्वन्दियों की ईर्षा भड़कती थी, मेरा तत्कालीन दुर्भाग्य दर्शकों में करुणा उत्पन्न करता है। मेरा भाग्य

सदा 'चरम' पर था। प्रथम उस ने मुझे महान् सुखों से सम्पूर्ण किया; पश्चात् दारुण दुखों से लाद दिया; मुझे कष्ट पहुँचाने में निपुण उस दैव ने मेरे लुप्त सुखों की स्मृति को पश्चात्ताप का अचूक उद्गम बना दिया। प्रेम, जो प्राप्त होने पर उस का दिया हुआ सुखप्रद प्रसाद था, छीन लिए जाने पर, अवर्णनीय दुख हो हो गया। संक्षेप में, उसका द्रोह सफल मनोरथ हुआ, और मैं देखती हूँ कि मेरी तत्कालीन यन्त्रणाएँ उतनी ही कष्टप्रद हैं जितनी ही कि मुझे लुभानेवाले सुख की सामग्री मधुर थी।

परन्तु, मेरी यन्त्रणाओं को और भी कष्टप्रद बनानेवाली बात जो है वह यह है, कि हम पर विपत्ति उस समय आने लगी जब हम उस के बिल्कुल योग्य न थे। जब हम दूषित प्रेम के वश हो रहे थे तब किसी ने हमारा विरोध न किया, परन्तु ज्यों ही हम ने अपनी कामनाओं को कम कर दिया और हम ने दाम्पत्यबन्धन में शरण ली, त्यों ही परमात्मा का 'कोप' हम पर भीषण रूप से आ गिरा। कितना क्रूर दण्ड तुम्हें मिला! हा! क्रूर पितृव्य का हम पर क्या अधिकार था? हमारा पुण्य वेदी के समक्ष संयोग हुआ था अतः हमें शत्रुओं के क्रोध से सुरक्षित रहना चाहिए था। इस के अतिरिक्त, तुम अलग भी कर दिये गये थे; और तुम अपने व्याख्यानों में व्यस्त थे और शिक्षित श्रोताओं पर ऐसे

रहस्यों का उद्घाटन कर रहे थे जिसे तुम्हारे पूर्व बड़े बड़े प्रतिभावान भी नहीं भेद सके थे ; और मैं ने तुम्हारी आज्ञानुसार मठ की शरण ली थी। वहाँ, मैं रात दिन तुम्हारे चिन्तन और कभी कभी धर्मोपदेशों पर मनन और उन पर आचरण करने के प्रयत्न में व्यतीत करती थी। इसी संकट में हमें दण्ड मिला, और तुम जो सब से कम दोषी थे उस पुरुष की क्रूर प्रतिहिंसा के लक्ष्य बने। परन्तु नहीं, मैं फुल्बर्ट को क्यों दोष दूं ? मैं—अभागी मैं ने तुम्हें चौपट किया है, और मैं ही तुम्हारी विपत्ति का कारण हुई हूँ। महापुरुष का हमारी जाति द्वारा विचलित होना कितना अनर्थकारी है। उसे बचपन ही से हमारे सारे आकर्षणों के विरुद्ध असहृदयता में अभ्यस्त होना चाहिए। 'सुनो पुत्र !' महामति कहता है 'ध्यान दो ! और मेरी शिक्षाओं पर आचरण करो। यदि कोई सुन्दरी अपनी सुन्दरता से तुम्हें आकृष्ट करने की चेष्टा करे, तो किसी दुर्भावना से अपने को वशीभूत मत होने दो ; उस के द्वारा प्रस्तुत विष का तिरस्कार कर दो और उस के आदेशानुसार पथ का अनुसरण न करो। उस का वासस्थान पतन द्वार है—मृत्यु है।' मैं ने बहुत दिनों से परीक्षा की है, और मैं देखती हूँ कि सौन्दर्य्य मृत्यु से कम भयानक है। यह स्वाधीनता को डुबानेवाली है, नाग फांस है—जिस से मुक्ति पाना असम्भव है। वह नारी ही थी जिस ने आदिपुरुष को स्वर्ग

से नीचे गिराया था; वही—जो उस के सुखों में भागी होने के निमित्त निर्मित थी उस के नाश का मुख्य कारण बनी। सेम्सन (Samson) का प्रताप कितना उज्ज्वल होता यदि उस का हृदय दलीला (Delilah) के सौंदर्य्य के प्रति उतना ही उदासीन होता जितना कि वह फिलिस्टीनों (Philistines) के अस्त्रों के प्रति दुर्भेद्य था। एक नारी ने ही उसे निरस्त्र किया, और उसे धोखा दे दिया जो सेनाओं को परास्त करनेवाला था। उस ने अपने को शत्रुओं के हाथ पड़ते देखा। उस ने अपनी आँखें खो दीं—उन्हीं प्रवेश द्वारों को, जिन के द्वारा प्रेम आत्मा तक पहुँचता था। विक्षिप्त और भग्नोत्साह वह सान्त्वना-रहित मृत्यु के मुख में गया—सिवा इस के कि उस के शत्रु भी उस के पतन के भागी हुए। सालोमन (Solomon) ने स्त्रियों के उपचार के निमित्त ईश्वर की आराधना त्याग दी। वही नृप, जिस की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा के हेतु देश देश के राजे आते थे, वही—जिसे देवता ने अपना आराधनाभवन निर्माण करने के हेतु चुना था—वही—स्वनिर्मित पवित्र वेदियों की पूजा छोड़ बैठा और मूर्खता की इस पराकाष्ठा को पहुँचा कि स्वयं मूर्त्तियों की उपासना करने लगा। जोब (Job) का उस की पत्नी से बढ़ कर अन्य कोई क्रूर शत्रु न था। किन प्रलोभनों का उस ने सामना नहीं किया? दुर्वृत्ति ने, जो उसे तंग करने को ठान

बैठी थी उस की तपस्या को डिगाने के निमित्त एक 'नारी' को 'साधन' बनाया। उसी दुर्वृत्ति ने हिलोज़ (Heloise) को अबीलार्ड के पतन का उपकरण बनाया है। मुझे केवल इतना ही सन्तोष है कि मैं तुम्हारी विपत्तियों का स्वयं कारण नहीं बनी हूँ। मैं ने तुम्हें धोखा नहीं दिया है; परन्तु मेरी तत्परता और प्रेम तुम्हें हानि-प्रद हुए हैं। यदि तुम से इस प्रकार दृढ़ होकर मैं ने प्रेम करने का अपराध किया है तो मैं उस के लिए पश्चात्ताप नहीं कर सकती। मैं ने अपना सतीत्व खो कर भी तुम्हें प्रसन्न रख ने की चेष्टा की है अतः मैं उस दुख की पात्री हूँ जो मुझे मिल रहा है। ज्यों ही मुझे तुम्हारे प्रेम का विश्वास हुआ, मैं ने तुम्हारे निषेधों के अनुसार आचरण करने में विलम्ब न किया; अबीलार्ड के प्रेम की पात्री होना मेरे लिए बड़ी बात थी, मुझे सदा से उस की बड़ी उत्कट अभिलाषा थी—तुम कदाचित् इस पर सहसा विश्वास न करोगे। मेरा केवल यही उद्देश था कि तुम्हें अपने परम स्नेह का विश्वास दिलाऊँ। मैं ने मान और अपमान के तर्कों पर बिल्कुल ध्यान न दिया; हमारी जाति पर अत्याचार करनेवाले उन सुख के शत्रुओं का विरोध मेरे सन्मुख व्यर्थ और प्रभावरहित हुआ। मैं ने प्रेम देवता को सब कुछ समर्पण किया, और मैं ने अपने कर्तव्य को समकालीन युग के विख्यात विद्वान को सुखी बनाने की आकाँक्षा के लिए स्थान रिक्त करने पर विवश

किया। यदि कोई विचार मुझे रोकने में समर्थ हो सकता था तो निश्चय वह मेरा प्रेम हो सकता था। मुझे भय रहता था कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें अर्पण करने के हेतु मेरे पास कुछ भी न रहने पर तुम्हारा अनुराग मन्द पड़ जाय और तुम औरों को अपना कर आनन्द करने लगो। परन्तु—तुम्हारे लिए मुझ को मेरे ऐसे संदेह से मुक्त करना सुगम था जो स्वयं मेरी प्रवृत्ति के विरुद्ध था। मुझे अन्य ध्रुव अनर्थों का विचार कर लेना चाहिए था, और यह सोच लेना चाहिए था कि खोये हुए सुखों की स्मृति मेरे समस्त जीवन में कन्टक होगी।

कितनी सुखी मैं होती यदि अपने आँसुओं से मैं उन विगत सुखों की स्मृति को धो सकती जिस का अब भी मैं प्रसन्नता से स्मरण करती हूँ। कम से कम मैं अपने हृदय की वासनाओं को कुचलने का घोर प्रयत्न करूँगी जो मेरी स्वाभाविक चंचलता के कारण उत्पन्न हुए हैं, और मैं अपने ऊपर वैसी ही यन्त्रणा का विधान करूँगी जैसी तुम्हें अपने शत्रुओं के हाथ सहनी पड़ी। इस भाँति यदि मैं 'रुष्ट दैव' को प्रसन्न करने में असमर्थ हूँ तो कम से कम मैं तुम्हें इन प्रयत्नों द्वारा संतुष्ट करूँगी ; क्योंकि तुम्हें यह दिखा कर कि किस हीन अवस्था को मैं पहुँची हूँ और कहाँ तक मेरा प्रायश्चित्त अधूरा है मैं परमात्मा को भी

इसलिए दोषी ठहराने की धृष्टता करती हूँ कि उस ने क्रूरता से तुम्हें ऐसे जाल में फँसा दिया जो तुम्हारे लिए रचा गया था। मेरी मनोव्यथा उस समय केवल दैवी कोप ही प्रज्वलित करेगी जब कि मुझे उस की दया की भिखारिणी होना उचित है।

अपराध को मिटाने के लिए दण्ड भोग लेना यथेष्ट नहीं है; हमारा दण्ड पाना नितान्त निरर्थक है यदि वह वासना अब भी बनी है और हृदय उस की आकाँक्षा से परिपूर्ण है। दुर्बलता स्वीकार करनी आसान है, अपने ऊपर दण्ड लेना सुगम है, परन्तु उन सुखों की स्मृति को मिटाने के लिए अपने ऊपर पूर्णाधिकार की आवश्यकता है, जो रागात्मक प्रवृति के कारण हमारे हृदय पर अधिकार कर चुके हैं। हमें कितने मिलते हैं जो अपने दोषों को दिखावे के लिए स्वीकार करते हैं, परन्तु उन पर दुखित होना तो दूर रहा उलटे उन के उल्लेख में नये आनन्द का अनुभव करते हैं। मौखिक स्वीकरण के साथ साथ हार्दिक पश्चात्ताप का भी होना आवश्यक है, पर ऐसा कदाचित ही होता है। मैं, जिस ने तुम से प्रेम कर अनेकों सुख का अनुभव किया है, अपना विरोध करने पर भी, यही अनुभव करती हूँ कि न तो मैं उन के लिए पश्चात्ताप ही कर सकती हूँ, न उन के सुखप्रद पुनर्स्मरण ही से अपनी स्मृति को निरुद्ध रख सकती हूँ। कितना

भी प्रयत्न मैं करूँ, कोई भी रास्ता मैं निकालूं, पर वे विचार मेरा पीछा नहीं छोड़ते और प्रत्येक वस्तु मुझे उन्हीं बातों का स्मरण दिलाती है जिन को भुला देना मेरा धर्म है। नीरव निशीथ में, जब कि महान चिन्ताओं को भी दूर करने वाली निद्रा की गोद में मेरे हृदय को शान्ति पाना चाहिए, मैं अपने हृदय के मोह को नहीं मिटा पाती। मैं स्वप्न देखती हूँ कि मैं अब भी अबीलार्ड के पास हूँ। मैं उस से मिलती हूँ, उस से वार्त्तालाप करती हूँ और उस की बातें सुनती हूँ। अन्योन्य अनुरक्त हम अपने 'नेम' को छोड़ बैठते हैं और प्रेम के वश हो जाते हैं। कभी-कभी तो मैं तुम्हारे विरोधियों से उलझती सी जान पड़ती हूँ; उन की भीषणता का मैं विरोध करती हूँ, अन्त में मैं करुण क्रन्दन कर बैठती हूँ, और अश्रुपूर्ण आँखों से जग पड़ती हूँ। देवस्थानों में भी पवित्र वेदी के सन्मुख भी मैं अपने प्राण की स्मृति लेकर जाती हूँ, और सुखों द्वारा बहकाये जाने पर दुख न प्रकट कर, उलटे मैं उन के छिन जाने पर शोक प्रकट करती हूँ।

मुझे स्मरण है वह समय और वह स्थान—(क्योंकि प्रेमी जन कुछ भी नहीं भूलते) जब कि तुम ने मुझ पर अपना प्रेम-प्रकट किया था और तुम ने शपथ-पूर्वक कहा था कि तुम

आजन्म मुझे प्यार करते रहोगे। तुम्हारे शब्द, तुम्हारी शपथ, सभी मेरे हृदय में अंकित हैं। मेरे स्खलित वाक्यों से मेरे हृदय की व्यग्रता प्रकट हो जाती है; अपने उच्छ्वासों से मैं भाँप ली जाती हूँ, और मेरी जिह्वा पर सदा तुम्हारा ही नाम रहता है। परमात्मन्! जब इस भाँति मैं विक्षिप्त हूँ—तू मेरी दुर्बलताओं पर दया क्यों नहीं करता और अपनी असीम अनुकम्पा से मुझे शक्ति क्यों नहीं प्रदान करता? अबीलार्ड! तुम्हीं मज़े में हो। परमात्मा की कृपा से तुम्हारी विपत्ति तुम्हारे शान्ति लाभ की कारण बनी है। कायिक कष्ट तुम्हारी मनोव्यथा की औषधि हुई है। आपत्तियों की आँधी ने तुम्हें शरणस्थान में ढकेल दिया है। दैव! जो तुम से कठोरता से व्यवहार करता जान पड़ता था—केवल तुम्हें सहायता पहुँचाने का अवसर ढूँढ रहा था। वह पिता की भाँति दण्ड दे रहा था, शत्रु की भाँति बदला नहीं ले रहा था। चतुर वैद्य की तरह वह तुम्हें अल्प कष्ट देकर तुम्हारे जीवन की रक्षा करना चाहता था। तुम्हारी अपेक्षा मैं सहस्रों गुना अधिक दया की पात्री हूँ, क्योंकि मुझे अभी तक सहस्रों वासनाओं का सामना करना है। मुझे अपनी आत्मरक्षा करने में इस से और कठिनाई हो रही है, क्योंकि मेरे शत्रु मुझे प्यारे हैं; आनेवाली आपत्तियों की मैं अभिलाषा किया करती हूँ; तो फिर मैं क्योंकर उन के वश न हूँ?

इस संघर्ष में भी कम से कम मैं उन से अपनी दुर्बलता छिपाने का प्रयत्न करती रहती हूँ जिन्हें तुम ने मेरी संरक्षा में रखा है। मेरे आस पास के लोग मेरी सुशीलता को सराहना किया करते हैं, परन्तु यदि कहीं वे मेरे हृदय के भीतर की झलक पा जायँ तो उन्हें वहाँ क्या क्या न दिखाई पड़े ? मेरी इन्द्रियों ने विद्रोह मचा रखा है ; मैं दूसरों की अध्यक्षिणी हूँ, पर स्वयं अपने ऊपर शासन करने में असमर्थ हूँ। मेरा कपट वेष है, यह जो पुण्य प्रतीत होता है वस्तुतः पाप है। समाज मुझे श्लाघ्य समझता है परन्तु परमात्मा के सन्मुख मैं दोषी हूँ ; उस की सर्वत्र व्यापिनी दृष्टि के आगे कुछ भी छिपा नहीं है, और वह इन सब के होते हुए हृदय के रहस्य को भाँप लेता है। मैं उस की दृष्टि से बच नहीं सकती। फिर भी इस प्रकट पवित्रता का निर्वाह करना मेरे लिए 'भगीरथ प्रयत्न' है। यह कष्टकर कपट धर्म किसी अंश में निश्चय सराहनीय है। मैं दुर्प्रभावों के सुगमता से ग्रहणशील संसार को 'प्रपञ्च' करने का अवसर नहीं देती ; मैं उन दुर्बल आत्माओं की पुण्यवृत्ति को नहीं डिगाती जो मेरी संरक्षा में हैं। ऐहिक अनुराग में अनुरक्त हृदय से कम से कम मैं उन्हें केवल परमात्मा से प्रेम करने की शिक्षा देती हूँ। सांसारिक सुखों के वशीभूत मैं उन्हें यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करती हूँ कि वे मिथ्या और माया हैं।

मुझ में केवल इतनी शक्ति बच रही है कि मैं उन लोगों से अपनी कामनाएं, गुप्त रख सकूँ, और इसे मैं परमात्मा की अनुग्रह का भारी प्रमाण मानती हूँ। यदि यह मुझे सत्कार्य्य करने पर प्रेरित नहीं कर सकते, तो कम से कम मुझे पापाचरण से बचाने के हेतु यथेष्ट हैं।

फिर भी इन दोनों को पृथक करने की चेष्टा व्यर्थ है। वे निश्चय दोषी हैं जो पुण्यात्मा नहीं हैं, और वे सत् से हट जाते हैं जो उस तक पहुँचने में विलंब करते हैं। इस के अतिरिक्त हमारा ईश्वर प्रेम को छोड़ अन्य उद्देश्य न होना चाहिए। हा! उस की अनुपस्थिति में मैं किस वस्तु की आशा कर सकती हूँ? अपने मोह के कारण मुझे मनुष्य को रुष्ट करने का अधिक भय है परमात्मा को कुपित करने का कम, और उसे संतुष्ट रखने से अधिक मैं तुम्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न किया करती हूँ। हाँ, यह तुम्हारी ही आज्ञा थी, मेरी सद्वृत्ति नहीं, जिस ने मुझे मठ में भेजा है। मैं ने तुम्हें शान्ति प्रदान करने की चेष्टा की है, अपने को पवित्र बनाने का नहीं। मैं कितनी असुखी हूँ! मैं अपने को उन सब से अलग रखती हूँ जो मुझे सुखकर हैं; मैं अपने को जीवित ही गाड़ रही हूँ; मैं अपने ऊपर कठोर व्रत और नियमों का प्रयोग करती हूँ; जो निष्ठुर नियमों ने हम पर आरोप

कर रखे हैं; मैं अपने को विलाप और विषाद से संतुष्ट करती हूँ और इतने पर भी मुझे अपनी तपस्या से कुछ मिलता नहीं। मेरी बनावटी पवित्रता ने तुम्हें और दूसरों को बहुत दिनों से धोखे में डाल रखा है, तुम समझते थे कि मैं मजे में हूँ, परन्तु मैं अधिक अधीर थी। तुम समझ बैठे थे कि मैं सम्पूर्ण रूप से अपने कर्तव्य में अनुरक्त हूँ, पर मुझे 'प्रेम' के अतिरिक्त कोई अन्य व्यवसाय ही न था। इसी भ्रम में तुम आशा करते हो कि मैं तुम्हारे लिए ईश्वर से विनय करूं। हा! मुझे तो स्वयं तुम्हारी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। मेरी पुण्यप्रवृत्ति और अनुग्रह के भरोसे मत रहो; मैं डाँवाडोल हूँ; अपने उपदेशों से मुझे ठिकाने लगाओ; मैं दुर्बल हूँ अपनी शिक्षाओं से मुझे संभालो और मेरी सहायता करो।

मेरी प्रशंसा करने की तुम्हें क्या पड़ी थी? प्रशंसा कभी-कभी उन के लिए हानिकारक होती है जिन्हें मिलती है; हृदय में एक गुप्त गर्व का उद्रेक हो उठता है, हमें अंधा कर देती है और हम से हमारी उन क्षतियों को छिपा देती है जिन की कि अभी आधी ही पूर्ति हुई है। बहकाने वाला हमारी चाटुकारी करता है, और साथ ही साथ हमारा नाश करता है। सच्चा मित्र हम से कोई बात गुप्त नहीं रखता, और हमारी क्षति पर हलका हाथ न फेरकर

उन पर औषधि लेपकर हमें उस का अधिक ज्ञान कराता है। तुम इस भाँति मुझ से क्यों नहीं बरतते ? क्या तुम नीच और भयानक चापलूस बनना चाहते हो ? अथवा मुझे किसी प्रशंसा के योग्य पाकर तुम्हें इस का भय नहीं होता कि स्त्रीजातिसुलभ मिथ्या गर्व उसे बिलकुल मिटा न देगा ? हमें बाह्याडंबरों से पुण्य की परख नहीं करनी चाहिए, क्योंकि तब तो पापी और पुण्यात्मा दोनों इस पर समान अधिकार करेंगे। कुशल धूर्त अपनी वाक्य पटुता से उस से अधिक प्रशंसा का पात्र होगा जितना की धर्मात्मा अपनी धर्मरति से पा सकेगा।

मानवहृदय भूल भुलैया है जिस के चक्करदार मार्गों का पता पाना कठिन है। तुम से प्राप्त प्रशंसा मेरे लिए और भी अधिक अहितकर होगी क्योंकि मैं उस के दाता से प्रेम करती हूँ। जितनी ही मैं तुम्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हूँ उतनी ही तत्परता से मैं तुम्हारे बतलाये हुए अपने गुणों में विश्वास करने पर उद्यत होती हूँ। अबीलार्ड ! अपने उपयोगी उपदेशों से मेरी दुर्बलता दूर करने का प्रयत्न करते ! मेरी मुक्ति के विषय में निश्चिन्त न रहकर ससंश रहते ; और यह कहते—'कि हमारी सद्वृत्ति की नींव हमारी दुर्बलता पर है और उन्हीं को इस का श्रेय मिलेगा जो महान् कठिनाइयों का सामना करेंगे।' परन्तु

मुझे श्रेय का मुकुट नहीं चाहिए—मैं इस में संतुष्ट हूँ यदि विपत् से बच जाऊँ। युद्ध में विजय प्राप्त करने से उस से बच निकलना सुगम है। यश की अनेक श्रेणियाँ हैं और मैं सब से उच्चतम की अभिलाषा नहीं रखती; उन्हें मैं अपने से अधिक उत्साही पुरुषों के लिए छोड़ती हूँ जो अनेकों बार विजयी हुए हैं। मैं इस भय से इस का प्रयत्न नहीं करती कि कहीं मुझे पराजित न होना पड़े—मेरे लिए विपत्ति से बचकर शरण-स्थान में पहुँचने ही में अधिक आनन्द है। परमात्मा की आज्ञा है—कि मैं तुम्हारे प्रति अपनी घातक कामनाओं का त्याग करूँ, परन्तु शोक! मेरा हृदय इस के निमित्त कभी तय्यार न हो सकेगा! प्रणाम!

पाँचवाँ पत्र

हिलोज़ का अबीलार्ड के नाम

प्राणनाथ !

तुम सोचते होगे कि मैं तुम्हें लापर्वाही की लाञ्छना दूँगी। तुम ने मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं दिया, ईश्वर की कृपा से अच्छा ही हुआ, अपनी उपस्थित अवस्था को देख कर मुझे यह संतोष होता है कि तुम मेरी उन अभिलाषाओं के प्रति उदासीनता प्रदर्शन कर रहे हो, जिन्हें गुप्त रखने में मैं असमर्थ रही। अन्त में अबीलार्ड ! तुम हिलोज से सदा के लिए हाथ धो बैठे। तुम्हारे सिवा और किसी का न चिन्तन करने का, तुम्हें छोड़ अन्य किसी से न सुखी रहने का—इन सारे शपथों का ध्यान न कर, मैं ने तुम्हें भुला दिया। ऐ ! प्रेमी की मधुर कल्पना ! मैं ने कभी तेरी आराधना की थी, पर अब तू मुझे सुखप्रद न होगी ! अबीलार्ड की प्यारी प्रतिमा ! अब तू मेरा पीछा न कर सकेगी ! अब मैं तेरा स्मरण भी न करूँगी। ऐ शत्रुओं के रहते हुए भी समस्त संसार को चकित करनेवाले पुरुष की योग्यता और प्रतिष्ठा ! ऐ ! हिलोज को पराभूत करनेवाले

मायावी सुख—तुम्हीं सब मुझ पर अत्याचार करनेवाले थे! मैं अपनी चंचलचित्तता स्वीकार करती हूँ, अबीलार्ड! और निस्संकोच; मेरे विश्वासघात से संसार शिक्षा ले, कि नारी की प्रतिज्ञा का कोई ठिकाना नहीं—हम सब चंचल हैं। इस से तुम्हें कष्ट पहुँचता होगा, अबीलार्ड; यह समाचार सुन कर तुम्हें आश्चर्य्य होता होगा। क्या तुम ने कभी सोचा था कि हिलोज बदल जायगी? प्रबल स्नेह के कारण वह इस प्रकार तुम्हारे पक्ष में थी कि तुम समझ नहीं सकते थे कि काल पाकर वह कैसे बदल जायगी। अब सचेत हो जाओ! मैं तुम से अब अपने कपट व्यवहार का हाल कहने जा रही हूँ, यद्यपि मुझे विश्वास है, कि तुम मुझे इस लिए बुरा भला न कह कर आनन्द के आँसू बहाओगे। जब मैं तुम से यह प्रकट करूँगी, कि किस प्रतिद्वन्दी ने तुम से मेरा हृदय छीन लिया है, तो तुम मेरी चंचलता की प्रशंसा करोगे, और इस प्रतिनायक से प्रार्थना करोगे कि वह उसे अचल कर दे। इसी से तुम समझ गये होगे कि वह परमात्मा ही है जिस ने हिलोज को तुम से हर लिया है। सचमुच, अबीलार्ड उस ने मेरे मन को वह शान्ति प्रदान की है, जिस की प्राप्ति में हमारी विपत्तियों की स्मृति पहले बाधा डालती थी। ईश्वर भजो! और कौन मुझे तुम से छीन सकता था? क्या तुम इसे संभव समझते थे कि साधारण प्राणी मेरे हृदय

से तुम्हें हटाने में समर्थ होगा। क्या तुम मुझे अपने गुणी विद्वान् अबीलार्ड को ईश्वर को छोड़ अन्य के लिए त्यागने का दोषी समझते थे ? नहीं ! मुझे विश्वास है तुम मुझ पर अन्याय नहीं करोगे। निस्संदेह तुम्हें इस बात के जाने की अभिलाषा होगी कि परमात्मा ने किन गुप्त उपायों का उपयोग कर इस महान् उद्देश्य की प्राप्ति की है ? मैं तुम्हें बतलाती हूँ, तुम परमात्मा की 'अविगति गति' तथा रहस्य पूर्ण चालों पर आश्चर्य्य करोगे। कुछ ही दिन पश्चात्, जब मुझे तुम्हारा पिछला पत्र मिला, मैं जोर से बीमार पड़ी। वैद्यों ने मेरी आशा त्याग दी और मैं अटल मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी। तभी मेरी सारी कामनाएँ, जो पहले भली जान पड़ती थी, मेरी आँखों में दोषपूर्ण जँचने लगीं। मेरी स्मरण शक्ति ने मेरे सन्मुख मेरे जीवन के सारे व्यापारों को सच्चे रूप में रखा और तुम से मैं सच कहती हूँ—हमारे प्रणय का ही दुख था जिस दुख का मैं ने अनुभव किया। मृत्यु, जिस की अभी तक मैं ने दूर से समीक्षा की थी, मेरे सामने उसी भांति उपस्थित हुई जैसे वह पापियों के सन्मुख आती है। मैं परमात्मा के उस 'कोप' को डरने लगी जिस का मैं अनुभव करने वाली ही थी और मुझे पछतावा होने लगा कि मैं ने ईश्वर की अनुग्रह का सदुपयोग क्यों न किया। तुम को लिखे हुए प्रेम पत्र, तुम से किये गये स्नेहयुक्त संभाषण—इस समय मुझे उतना

ही दुख दे रहे हैं जितना उन से पहले मुझे सुख प्राप्त हुआ था। 'हा! हतभागिनी हिलोज!' मैं कहने लगी 'यदि इन सुखों के फेर में अपने को डालना पाप है, और यदि इस जीवन की समाप्ति के पश्चात् उन कर्म्मों के लिए 'दण्ड' ध्रुव है, तो क्यों तू ने इन अनर्थकारी प्रलोभनों का विरोध नहीं किया? उन यन्त्रणाओं का ध्यान कर जो तेरे लिए निर्मित हैं और साथ ही उन सुखों की ओर देख ले जिन्हें तेरी 'भरमाई' हुई आत्मा इतना सुखप्रद समझती थी। हा! क्या तुझे इन निस्सार सुखों में मदमस्त रहने पर निराशा नहीं होती।' अधिक नहीं! अबीलार्ड! मुझे मिले हुए मानसिक परिताप पर विचार करो तो तुम्हें मेरे इस परिवर्तन पर आश्चर्य न होगा।

व्यथित व्यक्ति के लिए विजनता दुस्सह होती है; विविक्ति में उसकी व्यथा बढ़ जाती है, विश्राम उसे उत्कर्ष पर पहुँचाता है। जब से मैं इस विहार में बन्द हुई मैं ने सिवा अपने दुर्भाग्य पर रोने के और कुछ नहीं किया। यह मठ मेरे क्रन्दन से गूँज गया है और अनन्त दासता का दण्ड पाये हुए अभागे की भाँति मैं ने अपने दिन दुख में काटे हैं। अपने प्रति ईश्वर की अनुकम्पा पूर्ण अभिलाषा को पूर्ति न कर मैं ने उस के विरुद्ध आचरण किया है; मैं ने इस पवित्र शरण को कठोर कारागार समझा है,

और ईश्वरदत्त भार वे मन से वहन किया है। तपस्या से अपने जीवन को शुद्ध न बना कर मैं ने अपने पाप की पुष्टि की है। कैसी प्रलयकारी चूक है !! परन्तु, अबीलार्ड ! मैं ने अपने आखों की पट्टी दूर फेंकी है, और यदि मैं अपनी चित्तवृत्ति पर विश्वास कर सकूँ, तो मैं ने अपने को तुम्हारे आदर के योग्य बना डाला है। अब तुम मेरे लिए वह प्रेमी अबीलार्ड नहीं रह गये जो हमारे निरीक्षकों की चौकसी की आखों में धूल डालकर मुझ से एकान्त सम्भाषण की आकांक्षा करता था। दुर्भाग्य ने तुम्हें पाप का भीषण फल दिया और तुम ने तुरन्त अपने जीवन के शेष दिवस पुण्य के लिए उत्सर्ग कर दिए और इस हेतु तुम सहर्ष समर्पण करते हुए जान पड़े। तुम से दुर्बल, सुखों की अधिक आदी मैं ने अवश्य विपत्तियों को बड़ी विकलता से, वहन किया। अपने शत्रुओं के विरुद्ध तुम ने मेरी 'आवाज़' सुनी होगी। तुम ने मेरा क्रोध पिछले पत्र में देखा होगा, यही था, निस्संदेह, जिस ने मुझे मेरे अबीलार्ड के आदर से वंचित किया। तुम मेरे 'विरह-विलाप' पर भयभीत हो गये, और सच पूछो तो तुम्हें मेरे उद्धार के प्रति निराशा हो गयी थी। तुम नहीं सोच पाते थे कि किस तरह हिलोज इस प्रबल प्रेम पर प्रभुत्व पा सकेगी, परन्तु अबीलार्ड ! तुम भ्रम में थे। ईश्वर की अनुग्रह की सहायता से मेरी दुर्बलता मेरे सम्पूर्ण विजय में तनिक भी अड़चन न डाल सकी। अतः

पुनः मुझे अपने आदर का पात्र बनाओ ; तुम्हारी धर्म-परायणता स्वयं तुम से इस के निमित्त याचना करेगी ।

परन्तु यह मेरे हृदय में कैसी ज्ञात व्यथा उठ रही है—यह कौन सा अदृष्टपूर्व-अनुराग इस समय मेरे—अबीलार्ड के लिए अधिक व्याकुल न होने के संकल्प को विफल करने के निमित्त उदय हो रहा है ? परमात्मन् ! क्या अभी तक मैं अपने प्रेम पर विजय नहीं पा सकी ? हत भागिनी हिलोज ! जब तक तेरी तनिक भी साँस चलेगी तब तक यह ध्रुव है कि तू अबीलार्ड से प्रेम करती रहेगी । रो ले ! अभागिनी, अधमा ! इस से उचित अवसर तुझे कभी नहीं मिल ने का । मुझे तो शोक से मरना जीना चाहिए ; ईश्वर की अनुग्रह मुझ पर हुई और मैं ने उस पर दृढ़ रहने का बचन दिया था, परन्तु क्या पुनः मैं झूठी बनाई जाऊंगी और क्या ईश्वर की अनुकम्पा का अबीलार्ड के निमित्त अनादर हुआ । इस अधर्म ने मेरे पाप का प्याला भर दिया । अब मैं कैसे आशा करूँ कि 'करुणाकर' अपनी करुणा का आगार मेरे लिए खोल देगा, मैं ने तो उस की सारी क्षमाशीलता निःशेष कर दी । उसी क्षण से, जब मैं ने अबीलार्ड को देखा, मैं ने उसे रुष्ट करना आरम्भ किया ; एक असुखकर सहानुभूति ने हमें पापपूर्ण प्रणय में सहयोगी बनाया

और परमात्मा ने हमें पृथक् करने के हेतु एक शत्रु को खड़ा किया। अपने ऊपर आई हुई विपत्ति पर मैं रोती हूँ और उस के उद्गम की आराधना करती हूँ। हा! मुझे तो इस विपत्ति को ईश्वरदत्त प्रसाद समझना चाहिए, जिस ने हमारे सम्मेलन का विरोध किया और हमें एक दूसरे से अलग किया। मुझे तो अपने मोह को दूर करने में दत्त-चित्त होना चाहिए। अपनी शान्ति और सद्गति की घातिनी उस वस्तु की स्मृति बनाये रखने से उसे भुला देने में कितनी भलाई है? जगदीश्वर! क्या अबीलार्ड का सदा मेरे मन पर अधिकार रहेगा? क्या कभी मैं अपने को प्रेम-पाश से मुक्त न कर सकूंगी? परन्तु नहीं! मैं कदाचित् व्यर्थ की आशंका करती हूँ; सद्वृत्ति मेरे सारे आचरणों का नियन्त्रण करती है और वे सब दैवी अनुग्रह के अधीन है। अतएव अबीलार्ड, डरो मत; मुझ में अब वे भाव नहीं रह गये जिन को पिछले पत्र में पढ़कर तुम्हें इतनी व्याकुलता हुई थी। अब मैं अपने प्रणय से प्राप्त सुखों के वर्णन से किसी प्रकार के अनुचित अनुराग को जगाने का प्रयत्न न करूँगी, जिस का कदाचित् तुम अब भी मेरे लिए अनुभव कर सकते हो। तुम्हें मैं तुम्हारे सारे शपथों से मुक्त करती हूँ; भूल जाओ 'प्रियतम' और 'प्राणपति' के अभिधानों को। केवल 'गुरु' के सम्बन्ध को क़ायम रखो। अब मैं तुम से मधुर सम्बोधनों तथा प्रेमाग्नि

शान्ति करने वाले पत्रों की अभिलाषा नहीं करती। मैं तुम से केवल आध्यात्मिक शिक्षाओं और उपयोगी अनुशासनों के पाने की इच्छा रखती हूँ। यदि मुझे तुम्हारे पीछे चलना पड़े तो कितना ही कठिन धर्म-मार्ग मुझे सुखप्रद होगा। मुझे तुम सदा अपना अनुसरण करने में तत्पर पाओगे। मैं प्रसन्नता से तुम्हारे उन पत्रों को पढ़ूंगी जिन में तुम धर्म की विशेषताओं की चर्चा करोगे। इस से अधिक आनन्द मुझे उन पत्रों में नहीं मिला होगा जिन्हें तुम कुशलता से 'प्रेम-हलाहल' से भर दिया करते थे। अब यदि तुम चुप मार गये तो अवश्य दोषी ठहरोगे। जब मैं उस उद्दण्ड प्रेम के वश में थी और तुम्हें पत्र लिखने पर विवश किया करती थी—मेरे कितने पत्रों के पश्चात् तुम्हारा एक उत्तर मिलता था? मेरी विपत्ति में भी तुम ने मुझे उस अन्तिम आश्वासन से वंचित किया था—क्योंकि तुम इसे हानिकर समझते थे। तुम ने निष्ठुरता से मुझे विवश करना चाहा कि मैं तुम्हें भुला दूँ, तुम्हें मैं दोष नहीं देती; परन्तु अब तुम्हें किस का डर है? इस भाग्य-शाली अस्वस्थता ने जिस के द्वारा दैव ने मेरे भले के लिए मुझे कष्ट दिया है, वह काम किया है जिस के सम्पादन में सारी मानव चेष्टा और तुम्हारी कठोरता भी व्यर्थ प्रयत्न रही। अब मुझे उस सुख की असारता दिखाई पड़ती है जिस में हम 'अनन्त' समझ कर लिप्त

हुए थे। किन आशंकाओं, किन कष्टों को हम ने उस के हेतु नहीं झेला!

नहीं! परमात्मन्! पुण्य से प्राप्त सुख को छोड़ इस मर्त्यलोक में अन्य सुख नहीं। संसार के सारे सुखों में रह कर हृदय एक गुप्त व्यथा का अनुभव करता है; वह तब तक व्याकुल और चंचल रहता है जब तक वह तुझ पर दत्तचित्त नहीं होता। अबीलार्ड! विविक्ति में जब तक मैं ने उस वासना को अपने हृदय में जीवित रखा, जिस के हेतु मेरा संसार में 'पतन' हुआ था मुझे क्या नहीं सहना पड़ा? मैं ने इस मठ की दीवालों को घृणा से देखा; प्रत्येक घड़ी मुझे संवत्सर सी जँची। अपने यहाँ आने पर मैं बार-बार पछताती थी। परन्तु जब से परमात्मा की अनुग्रह के कारण मेरी आँखें खुल गई हैं सारी 'काया पलट' हो गई है; यही एकान्तवास मनोरम जँचता है, और इस स्थान की शान्त मेरे हृदय में घर कर रही है। अपने कर्तव्य के पालन में सन्तुष्ट मैं अपूर्व आनन्द का अनुभव करती हूँ यह आनन्द क्या ऐश्वर्य्य, वैभव अथवा विषय-सुख से प्राप्त हो सकता है? मैं ने ऐसा त्याग किया है जो मैं अपनी शक्ति के बाहर समझती थी। परन्तु यदि मैं ने अपना हृदय तुम से छीन लिया है, तो ईर्षालु मत होना; परमात्मा ही, जिस का सदा

उस पर अधिकार होना चाहिए, उस पर तुम्हारे स्थान में राज्य कर रहा है। इसी में संतुष्ट रहो कि मेरी स्मृति में अब भी तुम विराजते हो। इस से तुम कभी भी वंचित नहीं हो सकते। तुम्हारे स्मरण में मैं सदा हार्दिक सुख का अनुभव करूँगी, और तुम्हारी आज्ञाओं के पालन करने में अपना गौरव समझूंगी।

अभी मुझे तुम्हारा पत्र मिला है। उसे पढ़ कर मैं उत्तर लिख रही हूँ। इस तत्परता से तुम्हें पता चल जायगा कि तुम मुझे कितने प्रिय हो।

तुम्हारी बड़ी अनुग्रह है जो तुम मुझे अपना समाचार लिखने में विलम्ब करने के लिए मुझे उलाहना देते हो; मेरी अस्वस्थता के कारण यह क्षम्य है। तुम्हें अपना स्मरण दिलाने में मैं कदाचित् ही कोई अवसर हाथ से जाने देती हूँ। तुम्हारे इस कथन पर कि मेरी मौनता के कारण तुम्हें बड़ी व्याकुलता हुई, और तुम मेरे स्वास्थ्य के विषय में बहुत आशंकित थे, मैं अनुगृहीत हूँ। अपने विषय में तो तुम कहते हो कि तनिक दुर्बलता है और तुम सोचने लगे कि तुम्हारा मर जाना उचित है। निष्ठुर! क्या सोच कर तुम मुझे ऐसी बातें लिखते

हो जो निश्चय मुझे कष्ट पहुँचायेंगी ? पिछले पत्र में मैं तुम्हें लिख चुकी हूँ कि तुम्हारे मरने पर मुझे कितना दुख होगा, और यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो तुम अपने तापस-जीवन की कठोरता को कम कर दो। मैं ने तुम्हें उस अवस्था का दिग्दर्शन कराया था, जब मुझे तुम्हारी शिक्षाओं की अधिक आवश्यकता होगी, जिस के हेतु तुम्हें अपना अधिक ध्यान रखना चाहिए, परन्तु नहीं ! उन बातों को व्यर्थ दोहरा कर मैं तुम्हें उबाना नहीं चाहती। तुम चाहते हो कि हम लोग अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें भूल न जायँ। हा ! अबीलार्ड ! क्या तुम्हें इस संस्था के उत्साह में अविश्वास है ? इस की सर्व प्रकार से 'भक्ति' तुम्हीं में है, और इस के द्वारा अपने विस्मरण की शंका कर तुम इस पर अन्याय कर रहे हो। तुम हमारे गुरु हो, हम तुम्हारी शिष्या हैं ; तुम हमारे पथ-प्रदर्शक हो, हम तुम्हारी धार्मिकता में पूर्ण विश्वास कर तुम्हारे आदेश पर चलने को तत्पर रहती हैं। तुम आज्ञा दो ; हम उस का पालन करें। जो तुम ने बुद्धिमानी से हमारे योग्य बतलाया है हम ने भक्ति पूर्वक उस का सम्पादन किया है। इस भय से कि कहीं 'सत्' को छोड़ हम इन धर्म के फेर में न पड़ जायँ, हम कोई ऐसी तपस्या अपने ऊपर नहीं लेतीं जिस की तुम व्यवस्था नहीं करते। बात यों है—कि हम कोई ऐसी बात ठीक नहीं

समझतीं जो तुम्हारी अनुमति के विरुद्ध हो। एक बात जो तुम लिखते हो—मुझे अधिक असमंजस में डाल रही है—तुम कहते हो कि तुम ने सुना है हमारे मठ में कुछ ऐसी भिक्षुणियां हैं जो आदर्श चरित्र नहीं है, और वे उचित नियम से रहती भी नहीं। क्या तुम्हें भी इस पर आश्चर्य हुआ—तुम तो जानते ही हो कि मठों में कैसे लोग भरती किये जाते हैं? क्या पीठस्थविर भरती करते समय आगन्तुओं की अनुमति लेते हैं? क्या उन का उद्देश केवल स्वार्थ और युक्ति ही नहीं होता? यही कारण है कि विहार में वही लोग भरे पड़े हैं जिन का वहाँ रहना अपवादजनक है। परन्तु कृपा कर बतलाओ तो सही तुम ने कौन सी अव्यवस्था सुनी है, और उस का उचित उपाय भी मुझे लिखो। अभी तक मुझे तो कोई शिथिलता नहीं दिखाई पड़ी; जब कभी मैं ने कुछ पाई है, उस का तुरन्त उचित उपाय किया है। प्रति निशि मैं अपने 'गश्त' पर जाती हूँ और जिसे भी मैं इधर उधर पाती हूँ उसे अपने कक्ष में लौटने पर विवश करती हूँ; पेरिस के विहारों में जो जो चरित्र घटे हैं मुझे सारे के सारे स्मरण हैं।

अपने पत्र को तुम अपने दुर्भाग्य पर दुखित होते हुए समाप्त करते हो। और अपने जर्जरित जीवन को समाप्त करने के

निमित्त मृत्यु की आराधना करते हो। क्या यह संभव है कि तुम सा प्रतिभावान व्यक्ति अपने दुर्भाग्य पर प्रभुत्व नहीं पा सकता? संसार क्या कहेगा—यदि कहीं उसे वे पत्र पढ़ने को मिल जाय जो तुम ने मुझे लिखे हैं? क्या वह तुम्हारे संन्यास के सदुद्देश का विचार करेगा अथवा यह सोचेगा कि तुम ने अपनी व्यथाओं पर अनुताप करने के निमित्त विविक्ति में विश्राम लिया है? वे नवयुवक गण जो इतनी दूर के तुम्हारे व्याख्यान सुनने आते हैं और जो सांसारिक सुखों की अपेक्षा तुम्हारे कठोर शिक्षार श्रेयस्कर समझते हैं—क्या कहेंगे, यदि कहीं वे जान पायेंगे कि तुम अप्रकट रूप से उन्हीं वासनाओं के उपासक हो और उन्हीं दुर्बलताओं के शिकार हो जिन से तुम्हारे सिद्धान्त उनकी रक्षा करते हैं। यही अबीलार्ड जिस की वे इतनी प्रशंसा करते हैं, यही अग्रगामी, अपनी सारी कीर्त्ति खो बैठेगा और अपने अनुयायियों के उपहास का पात्र बन जायगा। यदि ये सब कारण तुम्हें अपनी विपत्ति में धैर्य्य देने में असमर्थ हैं, तो मेरी ओर देखो और मेरे उस सुदृढ़ संकल्प की सराहना करो जिस की सहायता से मैं ने तुम्हारी इच्छानुसार अपने को मठवासी बनाया है। मैं युवती थी—जब हमारा विच्छेद हुआ और (यदि मैं तुम्हारे कथन का विश्वास करूँ) तो किसी भी पुरुष के प्रेम के योग्य थी। यदि अबीलार्ड पर मेरा केवल इन्द्रियसुख की

लिप्सा के हेतु प्रेम होता, तो अन्य पुरुष भी इस की अनुपस्थिति में मुझे प्रसन्न कर सकते। मैं ने जो किया तुम्हें ज्ञात है, उसे न दोहराने के लिए मुझे क्षमा करना; मेरे इस बार बार विश्वास दिलाने पर विचार करो कि मैं अब भी तुम्हें अत्यन्त अनुराग से प्यार करूँगी। मैं ने चुम्बनों से तुम्हारे आँसू पोंछे थे और क्योंकि तुम में दुर्बलता थी अतः मैं संवरणशील न रह सकी। हा! यदि तुम ने निस्स्वार्थ प्रेम किया होता, तो मेरे वे शपथ, मेरे वे आनन्द, मेरे वे प्रणय व्यापार निश्चय तुम्हें सान्त्वना प्रदान करते। यदि शनैः शनैः तुम मुझे अपने प्रति उदासीन होते पाते, तो तुम्हें निराश होने का कारण मिलता, परन्तु तुम्हें अपने दुर्भाग्य के प्राप्त होने के पूर्व कदाचित् ही उस से अधिक मेरे प्रेम का प्रमाण मिला होगा।

प्रिय अबीलार्ड! अपने पत्रों में इस प्रकार अदृष्ट के प्रति असन्तोष मुझे न लिखना; एक तुम्हीं नहीं हो जिसे दैव के दण्ड का अनुभव हुआ है और तुम्हें उस के दुर्व्यवहार को भूल जाना चाहिए। कितनी लज्जा की बात है कि एक दार्शनिक ऐसी बातें नहीं सहन कर सकता जो प्रत्येक प्राणी पर पड़ सकती हैं। मुझे उदाहरण रूप रख कर अपने पर अनुशासन रखो; उद्दाम वासनाओं को लेकर मैं संसार में आई थी, नित्य मधुर

मनोविकारों से द्वन्द्व करती थी, और अब उन्हें विवेक की अधीनता स्वीकार करा कर विजय का गर्व करती हूँ। क्या अब एक 'मन्दमति' उसे ज्ञान देगा जो उस से कहीं अधिक बुद्धिमान है। परन्तु नहीं! मैं बहकी जा रही हूँ। क्या इस प्रकार मुझे अबीलार्ड को लिखना चाहिए?—उसे जो उन सारे नियमों का पालन करता है जिन के लिए वह उपदेश देता है? यदि हम भाग्य को दोष देते हैं—तो यह इस लिए उतना नहीं है कि तुम उस के आघातों का अनुभव करते हो जितना कि सताने का साहस करने के कारण अपने शत्रुओं के दोष प्रदर्शन की चेष्टा के निमित्त। अबीलार्ड! उन्हें अपने द्वेष का अन्त और अपने आलोचकों को अधिक प्रसन्न करने दो। उस सरस्वती के भाण्डार को खोज निकालो जो विधाता ने तुम्हारे ही लिए रख छोड़ा है; तुम्हारे शत्रु, तुम्हारी बुद्धि की प्रतिभा पर चकित होकर, तुम्हारे साथ अन्त में सद्व्यवहार करेंगे। मुझे कितना आह्लाद होगा यदि मैं अपने आंखों देख सकूं कि समस्त संसार तुम्हारी साधुता का उतना ही 'कायल' है जितना कि मैं हूँ। तुम्हारे पांडित्य का सभी अनुमोदन करते हैं; तुम्हारे महान् प्रतिद्वन्द्वी भी स्वीकार करते हैं तुम किसी भी ऐसे विषय से अनभिज्ञ नहीं हो मनुष्य की बुद्धि जानने में समर्थ है।

प्राणनाथ ! (अन्तिम बार मैं उस संबोधन का प्रयोग करती हूँ), क्या कभी तुम से भेंट न होगी ? क्या मृत्यु के पूर्व मुझे कभी तुम्हारे आलिंगन का सुख न मिलेगा ? सावधान ! क्या बक रही है ? हतभागिनि हिलोज ! तुझे ज्ञात है तू क्या चाहती है ? क्या तू उन ज्योति पूर्ण चक्षुओं का उन चिकने चितवनों का स्मरण किये बिना ही अवलोकन कर सकती है जो तेरे लिए घातक हुए थे ? क्या तू अबीलार्ड की रोबीली मुद्रा को देकर उनके प्रति ईर्षा न करेगी जिन्हें ऐसे कमनीय पुरुष को देखने का सौभाग्य हुआ हो ? वह मुखड़ा देख कर कामरहित रहना कठिन है। बात तो यों है—कि कदाचित् ही कोई कामिनी अबीलार्ड को देख कर अपनी रक्षा कर सकती है। अतएव अबीलार्ड से मिलने की अभिलाषा न कर ; जब उस की स्मृति मात्र ने तुझे इतना कष्ट पहुँचाया है तो हिलोज! उस की उपस्थिति क्या न कर बैठेगी ? ऐसे मनमोहक पुरुष को देख कर तुझे अपनी बुद्धि ठिकाने रखना कैसे संभव होगा ?

विविक्ति में तुम्हारे ही कारण मेरे महान् सुख हैं ; तुम्हारी स्मृति में दिवस व्यतीत कर, निरुद्ध विचारों से परिपूर्ण, रात्रि में मैं निद्रा की शरण जाती हूँ। उसी समय वह हिलोज, जो दिन में तुम्हारा ध्यान करने का साहस नहीं कर पाती, आनन्द पूर्वक

तुम से मिलने और वार्तालाप करने में लग जाती है । किस प्रकार मेरी आखें तुम्हें देखती हैं फिर देखती हैं ! कभी तुम मुझ से अपने मनोगत व्यथाओं की कथा कहते हो और मुझे उन का अनुभव कराकर दुखित करते हो ; कभी अपने शत्रुओं के क्रोध को भुलाकर तुम मुझे अपने समीप खींच लेते हो और मैं विवश होकर 'नहीं' नहीं कर पाती, और समान अनुराग से अलोड़ित हमारी आत्माएँ समान सुख का अनुभव करती हैं । परन्तु ऐ ! सुखकर स्वप्न ! ऐ मोहिनी माया ! कितना शीघ्र तू बिलीन हो जाती है ! मेरी तन्द्रा भग्न हो जाती है और आँखे खोल कर मैं अबीलार्ड को खो देती हूँ ; उसे आलिंगन करने के निमित्त बाहु फैलाती हूँ पर वह वहाँ रहता ही नहीं, मैं रोती हूँ, वह सुनता ही नहीं । कैसी मूर्खता है जो इस प्रकार के सुख के प्रति विमुख तुम से मैं इन अपने स्वप्नों का वर्णन करती हूँ । परन्तु क्या अबीलार्ड ! तुम कभी अपने स्वप्न में हिलोज़ को नहीं देखते ? तुम्हें वह कैसी मालूम पड़ती है ? क्या तुम उसी प्रकार स्नेहासिक्त शब्दों में उस का स्वागत करते हो जैसे पहले करते थे ? जगने पर तुम सुखी होते हो या दुखी ? क्षमा करना, अबीलार्ड, उद्भ्रान्त प्रेमी को क्षमा करना । अब मुझे तुम से उस उल्लास की आशा न रखनी चाहिए, जो कभी तुम्हारे सारे व्यापारों में अंकित थी; अब अधिक मुझे तुम से अपनी अभिलाषाओं के विनिमय

की आशा न रखनी चाहिए। हम दोनों ने कठोर तपस्या का व्रत लिया है और हमें सब कुछ सहन कर उस का पालन करना उचित है। आओ! हम अपने कर्तव्य और सिद्धान्त का चिन्तन करें और उस उद्देश से लाभ उठावें, जो हमें अलग रख रहा है। अबीलार्ड तुम तो मजे में अपना कार्य्य सिद्ध कर लोगे, तुम्हारी अभिलाषा और आकाँक्षा तुम्हारी मुक्ति के मार्ग में बाधक न होंगी। परन्तु हिलोज़ को निश्चय रोना है, उसे निश्चय अनिश्चित समय तक पछताना पड़ेगा, और उसे इस में सदा संदेह ही रहेगा कि उस का सारा पश्चात्ताप उस के 'निर्वाण' के हेतु सार्थक होगा अथवा नहीं।

मैं चाहती थी कि उस घटना का उल्लेख न कर मैं अपना पत्र समाप्त कर दूँ जो अभी दो ही एक दिन हुए यहा घटी है। एक युवती भिक्षुणी, जो अपने इच्छा के विरुद्ध मठ में प्रवेश करने पर विवश की गई थी, न जाने किस कौशल से एक व्यक्ति के साथ इंगलैंड भाग कर चली गई। मैं ने सारे मठ को इसे गुप्त रखने की आज्ञा दे रखी है। हा! अबीलार्ड! यदि तुम हमारे समीप होते तो ऐसी बातें कदापि न होतीं, क्योंकि सब भिक्षुणियाँ तुम्हारे दर्शन और भाषण पर मुग्ध होकर केवल तुम्हारे आदेश और आज्ञाओं के पालन में मन लगातीं। वह युवती-संन्यासिनी

कदापि अपने व्रत को तोड़ने का पापपूर्ण संकल्प न करती, यदि तुम हमारे सिर पर रहकर हमें पवित्र जीवन व्यतीत करने का उपदेश देते रहते। यदि तुम्हारी आँखे हमारे कार्य्यों को देखती रहेगी तो वे दोष रहित होंगे। जब हम फिसल पड़ें हमें तुम संभालो, और अपने उपदेशों से सुदृढ़ करो जिस में हम धर्म के कठिन मार्ग में दृढ़ता पूर्वक अग्रसर हो सकें। मुझे ज्ञात हो रहा है कि तुम्हें पत्र लिखने में मेरा अधिक मन लगता है—मुझे तो यह पत्र जला देना चाहिए। इस से पता चलता है मैं अब भी तुम्हारे प्रति गंभीर प्रेम का अनुभव करती हूँ यद्यपि अभी मैं तुम्हें इस के विरुद्ध आचरण का विश्वास दिला रही थी। स्नेह और ईश्वरीय अनुग्रह दोनों का मैं क्रम से अनुभव करती हूँ, और क्रम से दोनों के वश में होती हूँ। अबीलार्ड ! मेरी उस दशा पर दया करो—यह तुम्हारे ही कारण हुई है, और मेरे अन्तिम दिनों को उतना ही शान्तिमय बना दो जितना कि मेरे विगत दिवस चिंताप्रद और शान्ति रहित थे।

छठा पत्र

अबीलार्ड का हिलोज़ के नाम

अब मुझे न लिखना, हिलोज! अब मुझे कभी पत्र न लिखना; अब हमारे पत्र व्यवहार के अन्त करने का समय आ गया है। ये हमारी तपस्या को निरर्थक बना रहे हैं। पाप प्रक्षालन के हेतु हम संसार से अलग हुए, पर अपने धर्म के विरुद्ध अपने आचरण के कारण हम ईश्वर की आँखों में दोषी बने। अब हमें और अपने गत सुखों की स्मृति से अपने को अधिक भ्रम में रखना उचित नहीं है; इस प्रकार हम अपने जीवन को कष्टमय बना रहे हैं और अपने एकान्त सुख को नष्ट कर रहे हैं। हमें अपनी तपस्या सफल बनानी चाहिए और उस की कठोरता के सन्मुख अपने पापों की स्मृति को भुला देनी चाहिए। कायिक और मानसिक संयम, कठोर उपवास, अविरत एकान्त वास, परम समाधि और सच्ची ईश्वर भक्ति हमारे पूर्वकृत अनाचारों के स्थान में हों।

हम धार्मिक उत्कर्ष को पराकाष्ठा पर पहुँचाने का प्रयत्न करें।......जब परमात्मा ही हमारा ध्येय है तो उस तक पहुँचना

ही क्या कम है। हमारे प्रयत्न कितने ही उत्कट क्यों न हों वे सदा उस परम-पद की प्राप्ति के हेतु अल्प ही होंगे जिस का हम अनुमान भी नहीं कर सकते। आओ हम अपने तथा औरों से स्वतन्त्र होकर अपनी इच्छाओं तथा दूसरों के विचारों की अवहेलना कर धर्म के गौरव के निमित्त प्रयत्न करें। यदि हमारे मन की वृत्ति ऐसी होती, तो हिलोज! मैं सहर्ष पेराक्लीट (Paraclete) में अपना वासस्थान बना सकता और अपनी उद्योग-पूर्ण अवधानता से स्वस्थापित 'संघ' के लिए सहस्रों विभूतियों का आह्वान करता। वहाँ के निवासियों को मैं अपनी युक्तियों से उपदेश देता; और अपने उदाहरण से उन्हें उत्साहित करता। अपनी मठ-वासिनी बहनों की जीवन चर्य्या की देख-रेख करता, और उन्हें वही करने की आज्ञा देता जो मैं स्वयं करता। तुम्हें ईश्वर भजन, साधना, आराधना, तथा मौन-व्रत रखने की शिक्षा देता और अपने भी भजन, ध्यान, साधना तथा मौन-व्रत का अभ्यास करता।

यदि कभी मैं कुछ कहता तो वह तुम्हें पतन से बचाने के लिए, तुम्हारी दुर्बलता में तुम्हें शक्ति प्रदान करने के लिए, उस अज्ञान और अन्धकार में तुम्हें सचेत करने के लिए, जो किसी समय तुम पर आक्रमण कर सकता है। महात्माओं के कठोर

तपस्या का पालन करते हुए तुम्हें मैं सान्त्वना देता ; तुम्हारी धर्म परायणता और पवित्रता को सम्भाविक बना कर मैं तुम्हारी सद्वृत्ति को 'एक रस' बनाता ; तुम्हें मैं तुम्हारे कर्तव्य का ज्ञान कराता और विवेक शक्ति की दुर्बलता के कारण उद्भूत तुम्हारी शंकाओं का समाधान करता। मैं तुम्हारा शिक्षक और रक्षक बनता, और अलौकिक प्रतिभा से उन की प्रकृति की भिन्नता के अनुसार, तीव्र वा मन्द, मृदु या कठोर बन कर, मैं उन्हें धर्म को कष्टप्रद मार्ग में साथ लेता हुआ धार्मिक उत्कर्षता को पहुँचाता, जिन की देख रेख का भार मुझ पर होता।

परन्तु नहीं! मेरे अनियंत्रित विचार मुझे कहाँ लिये जा रहे हैं! हा! हिलोज! हम इस सद्वृत्ति से कितने दूर हैं? तुम्हारे हृदय में अभी तक वह घातक अग्नि जला करती है जिसे शान्त करने में तुम असफल रही, और मेरा मन तो क्षुब्ध और अशान्त है ही। यह मत सोचो, हिलोज! कि यहाँ मैं परम शान्ति पा रहा हूँ; अन्तिम बार मैं तुम से अपने हृदय की बात कहता हूँ;—अभी तक हिलोज! मैं तुम से अपना नाता न तोड़ सका, और यद्यपि तुम्हारे प्रति अपने प्रबल अनुराग का मैं विरोध करता रहता हूँ, फिर भी इन सारे प्रयत्नों के होते हुए भी मैं तुम्हारे दुख से दुखी रहता हूँ और सदा उसे बटाने की अभिलाषा

किया करता हूँ। तुम्हारे पत्रों ने अवश्य मुझे विचलित कर दिया है ; उस प्यारे हाथ की लिखावट को मैं भाव रहित होकर न पढ़ सका ! मैं उसाँसें भरता हूँ, रोता हूँ, और मेरी सारी बुद्धि मेरे शिष्यों से कठिनता से मेरी दुर्बलता गोपन कर सकती है। यह, दुखी हिलोज़ ! अबीलार्ड की अवस्था है। संसार, जिस के विचार प्रायः भ्रमपूर्ण होते हैं, सोचता है मैं निश्चिन्त हूँ, और यह सोच कर, कि मैं ने केवल इन्द्रिय-सुख की लालसा से तुम से प्रेम किया था, उसने तुम्हें भुला दिया है। कितना भारी-भ्रम है ! निश्चय, लोगों का यह कहना सत्य था कि जब हम अलग हुए लज्जा और शोक ही ने मुझे संसार से विमुख होने पर विवश किया। तुम जानती हो कि परमात्मा को कुपित करने के कारण, वास्तविक प्रायश्चित्त की अभिलाषा से मैं ने विविक्ति स्वीकार नहीं की थी। कुछ भी हो, मैं तो यही समझता हूँ कि हमारी विपत्तियों द्वारा हमें हमारे पापों के लिए दण्ड देने की परमात्मा की आन्तरिक इच्छा थी ; और मैं फुल्बर्ट को ईश्वरी न्याय का साधन मात्र समझता हूँ। उस की अनुग्रह से मैं ऐसे स्थान में पहुँच गया जहाँ मैं अभी तक पड़ा रहता यदि मेरे शत्रुओं का कोप मुझे रहने देता ; मैं ने उन की सारी यंत्रणाएँ निस्सन्देह यह सोच कर सहन की, कि मेरा दोष दूर करने के निमित्त उन को स्वयं परमात्मा ने उभारा है।

जब उस परमात्मा ने सम्पूर्ण रूप से मुझे अपनी पवित्र इच्छा का पालन करते हुए पाया, तो उस ने मुझे अपने विचारों को न्यायसंगत प्रमाणित करने की प्रेरणा की ; मैं ने उन की निर्दोषिता घोषित की, और अन्त में यह प्रमाणित किया कि मेरी श्रद्धा न केवल अटल थी वरन् अपरिपक्वता की लाञ्छना से सर्वथा मुक्त थी।

मुझे आनन्द होता यदि मुझे केवल अपने शत्रुओं का ही भय होता, और मेरी 'सद्गति' में केवल उन की पिशुनता ही बाधक होती। हिलोज ! तुम्हारे कारण मुझे शंका होती है, तुम्हारे पत्रों से मुझे पता चलता है कि तुम ऐहिक वासनाओं की चेरी हो, अब भी यदि तुम उन पर विजय नहीं प्राप्त कर सकती तो तुम्हारा उद्धार असंभव है ; इस विकट परीक्षा में तुम मुझ से क्या कराना चाहती हो ? क्या तुम मुझे सद्वृत्तियों का गला घोंटने को कहती हो ? क्या मैं तुम्हें प्रसन्न करने की इच्छा से उन आँसुओं को रोक दूँ, जो तुम्हारी कुवृत्ति तुम्हें गिराने पर विवश करती है ? क्या यही मेरी तपस्या का पारितोषिक होगा ? नहीं ! हमें अपने व्रत में और अटल होना चाहिए ; हम दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करने तथा स्वर्ग प्राप्ति के ही लिए इस विविक्ति के शरण आये हैं ; अतएव हमें सम्पूर्ण हृदय से परमात्मा के शरणागत होना चाहिए।

मैं जानता हूँ आरम्भ में सभी बातें कठिन होती हैं; परन्तु महत्कार्य्य को उत्साह पूर्वक आरम्भ करने ही में गौरव है, और यह कठिनाइयों की अधिकता के अनुसार ही अधिक होती है। अतएव हमें उन सारी विपत्तियों को पराजित करना चाहिए जो सद्धर्म के अनुशीलन में बाधक हों। विहारों में लोग स्वर्ण की भाँति तपाये जाते हैं। वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं टिक सकता जो धर्म के भार को भली भाँति वहन नहीं कर सकता।

उन अपवाद जनक बन्धनों को तोड़ने का प्रयत्न करो जो तुम्हें मनुष्य से जकड़े हुए हैं, और यदि कहीं परमात्मा की अनुग्रह से तुम इस के सम्पादन में समर्थ हुई, तो मेरी प्रार्थना है कि तुम अपनी प्रार्थनाओं में मुझे अवश्य स्मरण करते रहना। अपनी सारी शक्ति को लगा कर आदर्श धार्मिक बनने का प्रयत्न करो; यह दुष्कर है, मैं मानता हूँ, पर असम्भव नहीं है; और तुम्हारे उपदेश ग्राह्य प्रकृति से इस मनोहर विजय की प्राप्ति की मैं आशा करता हूँ। यदि तुम्हारा प्रथम-प्रयास अधूरे प्रमाणित हों तो निराश मत हो बैठना, क्योंकि यह कायरता होगी; इस के अतिरिक्त, मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूँ कि तुम्हें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा, क्यों कि तुम एक भारी शत्रु पर विजय पाने की, जलती हुई अग्नि को शान्ति करने की, और अपने हार्दिक प्रेम को पराजित करने

की अभिलाषा करती हो। तुम्हें अपनी ही इच्छाओं से युद्ध करना है, इसलिए अपनी दुर्वृत्ति के भार से दब न जाना। तुम्हें ऐसे कुटिल शत्रु से काम पड़ा है जो तुम्हें चकमा देने के निमित्त सब कुछ करेगा; सदा सतर्क रहना। जीवन भर हम प्रलोभनों के बीच रहते हैं। इसी पर एक महात्मा का कथन है—'मानव जीवन एक भारी प्रलोभन है'; दुर्वृत्ति, जो सदा सतर्क रहती है, निरन्तर हमारे चारों ओर चक्कर मारा करती है, और किसी ओर हमें असुरक्षित पाकर हमारी आत्मा में उसे नष्ट करने के हेतु प्रवेश कर बैठती है।

कितना ही सिद्ध कोई क्यों न हो, प्रलोभनों में उस का पड़ जाना कठिन नहीं, और कदाचित् ऐसे प्रलोभनों में जो उपयोगी ठहरें। यह भी आश्चर्य्य की बात नहीं कि उसे कभी उस से छुटकारा ही न मिले, क्यों कि उन का उद्गम स्थान उस के हृदय ही में होता है; और एक से हमें मुक्ति मिली नहीं कि दूसरा हमें आ दबोचता है। मनु की सन्तति का यही लेखा है—कि उन के दुख के हेतु सदा कोई न कोई कारण उपस्थित रहे। वे स्वयं अपने आचरणों से अपने आदिम आनन्द से वंचित हुये हैं। हम व्यर्थ यह समझ कर प्रसन्न होते हैं कि प्रलोभनों से जान बचाकर हम उन पर अधिकार पा लेंगे; यदि हम सन्तोष और विनय का

साथ नहीं देते तो हम व्यर्थ में यन्त्रणा भोगेंगे। अपने साधन पर निर्भर रहने से कहीं अधिक निश्चय-पूर्वक हम परमात्मा की सहायता की भिक्षा मांग कर अपने उद्देश की प्राप्ति कर सकते हैं।

हिलोज़ ! अटल रहना, और परमात्मा में विश्वास रखना ; इस प्रकार तुम बहुत कम प्रलोभनों में पड़ोगी ; यदि वे तुम्हारे सन्मुख आवें तो आरम्भ ही में उनका गला घोंट दो—अपने हृदय में उन्हें जड़ न पकड़ने दो। कहा भी है—'व्याधिहि करिये तुरत उपाई, व्याधि बढ़े पुनि कछु न बसाई।' प्रलोभनों की अवस्थाएँ होती हैं, आरम्भ में वे विचार रूप में रहते हैं और हानिकारक नहीं प्रतीत होते ; कल्पना निःशंक उन का स्वागत करती है ; आनन्द उन की वृद्धि ; हम अहर्निशि उन का चिन्तन करते हैं, और अन्त में उन के अधीन हो जाते हैं।

क्या अब, हिलोज़ ! तुम मेरी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करोगी जिस से मैं ने तुम्हें महात्माओं के पथ पर चलने पर प्रेरित किया ? क्या मेरा कथन तुम्हें प्रायश्चित्त में आनन्द दिलाता है ? क्या तुम्हारी इच्छा नहीं होती कि तुम भी, मेगडालेन (Magdalen) की भाँति, अपने उद्धारक के चरणों को आँसुओं से धो दो ? यदि अभी तक तुम में इन प्रचण्ड आकांक्षाओं की उत्पत्ति नहीं

हुई, तो ईश्वर से विनती करो कि वे शीघ्र जाग्रत हों। मैं सदा अपनी प्रार्थनाओं में यही विनती करता रहूँगा कि मरण पर्यन्त पवित्र जीवन व्यतीत करने की चेष्टा में परमात्मा तुम्हारा सहायक हो। तुम ने संसार छोड़ा, और उस में था ही क्या जो तुम्हें वहाँ रोका रखता ? उस की ओर अपनी आँखें उठाओ जिस के चरणों में तुम ने अपना शेष जीवन समर्पण किया है। जीवन इस संसार में भार है ; हमारे शरीर की आवश्यकताएँ ही सन्तों के दुख का कारण हैं। 'परमात्मन्', राजर्षि का कहना है, 'आवश्यकताओं से मेरी रक्षा कर।' कितने दुखी हैं जिन्हें अपनी अवस्था का ज्ञान नहीं है ; और वे और भी दुखी हैं जो अपनी हीन अवस्था जानते हैं पर समकालीन कुरीतियों के प्रति घृणा नहीं कर सकते। मनुष्य कितने अज्ञान हैं जो सांसारिक विषयों में चित्त लगाते हैं ! उन की आँखें एक दिन खुलेंगी और वे पछतायेंगे कि मिथ्या सुख से प्रेम कर उन्हों ने भारी गलती की। सच्चे धार्मिक पुरुष इस प्रकार भ्रम में नहीं रहते ; वे समस्त इन्द्रिय सुख से परे रहते हैं और उनका ध्यान ईश्वर की ओर रहता है।

बस, हिलोज़ ! अपने विचारों को शीघ्र कार्य्य रूप में परिणत करो ; अब भी तुम्हें हमारे उद्धार के निमित्त उपाय करने का अवसर है। ईश्वर से प्रेम करो और उस के हेतु 'अपना' त्याग करो ;

उस का तुम्हारे हृदय पर अधिकार होगा और उसे छोड़ अन्यत्र सुख की अभिलाषा न करो। यदि तुम अपने को मुझ से पृथक नहीं कर लेती तो मेरे साथ तुम्हारा भी पतन होगा; पर यदि मुझे त्याग कर तुम उस के 'हिये' लगोगी तो तुम अटल और अभय रहोगी। यदि तुम परमात्मा को विवश करोगी कि वह तुम्हें त्याग दे तो निश्चय तुम विपद में पड़ोगी; पर यदि उस पर तुम्हारी भक्ति रहेगी तो तुम्हें सुख ही सुख मिलेगा।

हिलोज़ ! मेरी बतलाई हुई इन कुछ शिक्षाओं पर ध्यान दो। तुम एक संस्था की अधिष्ठात्री हो, तुम जानती हो कि वैयक्तिक जीवन व्यतीत करने वाले और दूसरों के आचरण के उत्तरदायी पुरुष में अन्तर है। एक को केवल अपनी श्रीवृद्धि के हेतु परिश्रम करना है, और अपना कर्तव्यपालन करते समय उसे यह आवश्यक नहीं कि सारे सदाचारों को प्रकट रूप से करता रहे। परन्तु जो दूसरों के आचरण के जिम्मेदार हैं, उन्हें अपने उदाहरण से अपने अनुगामियों को उन सारी भलाइयों को करने पर उत्साहित करते रहना पड़ता है जिन के सम्पादन में वे समर्थ हैं। मेरा अनुरोध है कि तुम इस गूढ़ तत्त्व को गाँठ बाँध लो और उस पर आचरण करना जिस में तुम्हारा सम्पूर्ण जीवन भिक्षुणी-जीवन का आदर्श उदाहरण हो।

परमात्मा हृदय से हमारा उद्धार चाहता है और उस ने सारे साधन हमारे लिए सुगम कर दिये हैं। अपने में इन सारे गुणों को लाने का प्रयत्न करो। कुमारियों की पवित्रता, योगियों की तपस्या रखो, धार्मिकों का उत्साह और शहीदों की अटलता रखो। धार्मिक और महात्माओं के सारे कर्तव्यों का जीवन भर निरन्तर पालन करती रहो। फिर देखना मृत्यु जो साधारणतः भीषण समझी जाती है तुम्हें रुचिकर प्रतीत होगी—

ऋषियों का कथन है, कि अपने भक्तों की मृत्यु परमात्मा की आँखों में अधिक महत्वपूर्ण है। इसका कारण तो स्पष्ट है ही कि पापियों की अपेक्षा उनकी मृत्यु क्यों श्रेयस्कर समझी जाती है। मैं ने अभी तीन बातों का उल्लेख किया है जिन पर ध्यान रख कर ऋषियों को ऐसा कहना पड़ा। प्रथम, आत्मत्याग; द्वितीय, धर्माचरण और अन्ततः इन्द्रियनिग्रह।

परमात्मा की इच्छानुसार चलनेवाला धार्मिक पुरुष बिना किसी हिचक के मृत्यु को शिरोधार्य्य करता है। वह प्रसन्नता से उस न्याय कर्ता की प्रतीक्षा करता है जिस के हाथों उसे पारितोषिक मिलता है; उसे इस तुच्छ क्षणभंगुर जीवन को छोड़ कर अनन्त सुखप्रद जीवन को आरम्भ करने में तनिक भी शंका नहीं

होती। उसी महात्मा का कहना है कि, पापियों का आचरण इस के बिल्कुल विपरीत है। इस के डरने का कारण भी है; तनिक भी व्याधि के आगम पर वह काँप उठता है; मृत्यु उसे भीषण प्रतीत होती है; वह उस न्याय कर्ता के सन्मुख जाने से डरता है जिसे उस ने अप्रसन्न कर रखा है, और इस प्रकार ईश्वर की अनुग्रह का दुरुपयोग करने पर उसे अपने पापों के हेतु दण्ड से बचने का कोई उपाय नहीं दीख पड़ता।

एक बात और है जिस में पुण्यात्मा पापियों से मजे में हैं कि वे अपने जीवन में क्रमशः धर्म ग्रन्थों से परिचित हो जाते हैं और वे उनके अनुसार बिना किसी कठिनाई के आचरण करते हैं। क्रमशः दुर्वृत्तियों पर विजय पाकर उन में ऐसी शक्ति आ जाती है कि मृत्यु के समय वे अपने को इस योग्य पाते हैं, कि वे वह 'विजय' प्राप्त कर सकें जिस पर सारा अमरत्व और उस महा शक्ति से अपनी आत्मा का पुण्य सम्मेलन निर्भर है।

मैं आशा करता हूँ, हिलोइज़! अपने विगत दुराचारों पर पश्चात्ताप करने के पश्चात् तुम धर्मात्मा की मृत्यु पाओगी। हा! कितने ऐसे होंगे जिन्हें ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता होगा! इस का कारण? बात यह है कि बहुत ही कम ऐसे होंगे जो धर्म पथ का

अवलंबन करते हैं। सभी उद्धार की अभिलाषा करते हैं, परन्तु बहुत ही कम धर्म निर्दिष्ट उपायों का उपयोग करते हैं। हिलोज़! क्या तुम्हें इस में संदेह है ?

हाँ, तुम्हें चाहिए कि पवित्र जीवन यापन कर पापियों के दण्ड से बचो। तुम से उन भीषण यंत्रणाओं का वर्णन करने का मुझे साहस नहीं होता जो पाप पूर्ण जीवन के परिणाम हैं। उन का ध्यान करके ही मैं भयभीत हो उठता हूँ। हिलोज़! पापियों को मिलने वाली यंत्रणाओं की किसी से भी तुलना नहीं की जा सकती। यह अग्नि उस दावानल की छाया मात्र है, जो उन्हें जलाती है। उन की अपरिमित यंत्रणाओं की बात तो एक ओर—ईश्वर की अप्राप्ति ही उन के दारुण कष्टों को दुगुना करती है। इसे विश्वास कर क्या किसी को पाप करने का साहस है ? भगवन्! क्या तेरे विरुद्ध आचरण करने का हम साहस कर सकते हैं ? यदि तेरी अपार अनुकंपा हमें तेरी भक्ति न सिखा सकी, तो कम से कम इस नरक के गढ्ढे में पड़ने का भय हमें ऐसे आचरण से बचायेगा जो तेरी इच्छा के विरुद्ध हो।

मैं पूछता नहीं, पर हिलोज़! तुम अपने उद्धार के निमित्त मन लगा कर चेष्टा करोगी, यही तुम्हारा मुख्य ध्येय होना

चाहिए। दूर करो, इस लिए, मुझे अपने हृदय से—इस से अच्छी सलाह मैं तुम्हें नहीं दे सकता। स्वार्थ पूर्ण प्रेम करने वाले व्यक्ति की स्मृति सदा हानिप्रद होगी चाहे हम धर्म के मार्ग में कितने ही अग्रसर क्यों न हों। जब तुम मेरे प्रति अपनी अरुचि कर कामनाओं को दूर कर दोगी, तो सभी पुण्यकार्य्य तुम्हें सुगम जान पड़ेंगे, और मृत्यु तुम्हें रुचिकर प्रतीत होगी। तुम्हारी आत्मा प्रसन्नता से इस शरीर को छोड़ कर स्वर्ग की ओर प्रस्थान करेगी।

बस ! हिलोज़ ! तुम्हारे अबीलार्ड की यही अन्तिम सीख है; अन्तिम बार मैं तुम से निगम के आदेशों पर चलने का अनुरोध करता हूँ। ईश्वर करे, तुम्हारा हृदय, जो कभी मेरे प्रेम का अनुभव करता था, अब मेरे उपदेशों पर आचरण करने पर बाध्य हो। तुम्हारे मन में सदा वर्तमान रहने वाली प्रेमी, अबीलार्ड की स्मृति—सच्चे परितापी अबीलार्ड की प्रति-मूर्त्ति में परिवर्तित हो, और तुम अपनी 'मुक्ति' के हेतु उतना ही आँसू बहाओ जितना तुम ने हमारे दुर्भाग्य पर बहाये हैं। इति शुभं।

समाप्त